ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

ज्येष्ठ-आषाढ़, संवत् नानकशाही ५४२

जून 2010 वर्ष ३ अंक १०

संपादक — सिमरजीत सिंह — *एम. ए, एम. एम. सी.*

सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा — *एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव

धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59

एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग **303** संपादन विभाग **304**

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार २
संपादीकय ३
श्री गुरु अरजन देव जी ५
-नीतू अनेजा
श्री गुरु अरजन देव जी का अद्वितीय जीवन ७
-स. बहादर सिंघ
भक्त कबीर जी की बाणी . . . ९
-डॉ. अमृत कौर
भक्त कबीर जी का आध्यात्मिक दृष्टिकोण १४
-श्रीमती शैल वर्मा
भक्त कबीर जी की निर्गुण भक्ति-भावना १६
-स. दमनजीत सिंघ
जून १९८४ ई. . . . १७
-सिमरजीत सिंघ
सरहिंद विजय का विवरण एवं दृश्य चित्रण २४
-स. जसबीर सिंघ
बाबा बंदा सिंघ बहादर २९
-बीबी जसपाल कौर
. . . शहीद बाबा बंदा सिंघ बहादर ३०
-डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई
शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ ३१
-स. गुरबख्श सिंघ प्यासा
महाराजा रणजीत सिंघ का आदर्श राज्य ३३
-स. सुरजीत सिंघ
शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ ३४
-डॉ. मनमोहन सिंघ
मूल-मंत्र व्याख्या ३७
-डिंपल रानी
सिक्ख धर्म का विचार-तत्व ४३
-डॉ. अरुण रानी
धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ . . . ४७
-प्रवीण बाला
अरदास : प्रभु आगे सीधी विनती ५०
-भाई किरपाल सिंघ
सचु तेरा दरबारा ५५
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
सिक्ख कौम का गौरव . . . ५८
-स. ओंकार सिंघ
जीवन में सफलता प्राप्ति का रहस्य ६०
-डॉ. सुनील कुमार
गुरबाणी राग परिचय-२८ ६२
-स. कुलदीप सिंघ
गुरबणी चिंतनधारा : ४४ ६८
-डॉ. मनजीत कौर
सागरे-रहमत (कविता) ७३
-डॉ. मनजीत कौर
गुरु-गाथा-२० ७४
-डॉ. अमृत कौर
आभार (कविता) ७५
-संजय बाजपेयी रोहितास
दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-३३ ७६
-डॉ. राजेंद्र सिंघ
रुक्खां 'ते ना फेरो आरी (कविता) ७७
-श्री कंवर इकबाल
पुस्तक समीक्षा ७८
-सुरिंदर सिंघ निमाणा
खबरनामा ७९

गुरबाणी विचार

हरि का नामु रिदै नित धिआई ॥
संगी साथी सगल तरांई ॥
गुरु मेरै संगि सदा है नाले ॥
सिमरि सिमरि तिसु सदा सम्हाले ॥१॥रहाउ॥
तेरा कीआ मीठा लागै ॥
हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ॥२॥४२॥९३॥ (पन्ना ३९४)

शहीदों के सिरताज पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज आसा राग में अंकित इस पावन शबद के द्वारा मनुष्य-जन्म पाकर आत्मिक कल्याण अथवा परमात्मा की प्राप्ति सच्चे गुरु की अगुआई में होने की वास्तविकता बताते हुए परमात्मा द्वारा प्रदान की गई सभी स्थितियों-परिस्थितियों में संतुष्टि भाव प्रतीत करने तथा प्रभु-नाम-सिमरन की दात मांगने अथवा चाहने की निर्मल युक्ति बख्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि हे भाई! मैं परमात्मा का नाम अपने हृदय में प्रतिदिन अर्थात् हर समय स्मरण करता हूं अर्थात् मैं मालिक प्रभु को दिल में बसाये रखता हूं। ऐसा करने से मैं स्वयं तो भवसागर से पार होऊंगा ही इसके साथ-साथ मैं अपने सभी संगी-साथियों को भी इससे पार उतार दूंगा। मेरा सच्चा गुरु सदैव मेरे साथ-साथ रहता है अर्थात् मैं उसको कदापि भुलाता नहीं। अब तो मैं कभी भी इसको नहीं भुलाऊंगा।

यह परम पावन गुरबाणी का मुख्य भाव है जो इसका अध्ययन, चिंतन मनन करते समय मनुष्य-मात्र को इसलिए बार-बार चेताया गया है ताकि वह सतिगुरु द्वारा आत्मिक कल्याण होने की वास्तविकता को कहीं भुला न दे। गुरबाणी हमें उपयुक्त मार्ग बताती है कि कैसे हम संसार में रहते हुए, अपनी अतिआवश्यक जिम्मेवारियां तथा कर्त्तव्य निभाते हुए यदि मालिक प्रभु की स्मृति को मन मस्तक में बसाये रखें तो हम जीवन-उद्देश्य की निश्चित रूप से प्राप्ति करते हैं।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि हे मालिक प्रभु! यह आपके मिलाये हुए गुरु की कृपा है कि आप जी द्वारा किया प्रत्येक काम मुझको अच्छा लग रहा है। मैं आप से अमूल्य वस्तु 'नाम' ही मांग रहा हूं अर्थात् प्रभु-नाम एक मात्र मांगने तथा इच्छा करने योग्य वस्तु है न कि सांसारिक पदार्थ अर्थात् आत्मिक कल्याण ही मनुष्य-जन्म का मूल उद्देश्य है। जैसे जनता अपने राजा अथवा सम्राट के हुक्म में रहती हुई सुख-आनंद में रहती है यूं ही सर्वसमरथ सब से बड़े सम्राट सृष्टि के रचनहारे के हुक्म में रहने का मनोभाव व्यक्त करते हुए गुरबाणी में हम मनुष्यों को उसकी रजा में रहने का निर्देश दिया गया है जैसे कि जपु जी साहिब में फरमान है :

सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥ (पन्ना ६)
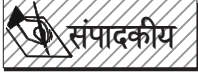
शहादत की परिपाटी चलाने वाले श्री गुरु अरजन देव जी

सिक्खी और शहादत का बहुत गहरा तथा स्वाभाविक संबंध माना जाता है। शहादत की परंपरा का आरंभ पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने स्वयं अपनी शहादत देकर किया। मुगल बादशाह जहांगीर हिंदोस्तान के राज तख्त पर आसीन था। इतिहास बताता है कि कैसे उसने राज तख्त कट्टर मुल्लाओं की सहायता तथा समर्थन प्राप्त करके लिया था और उसने इसके बदले में अपने शासन काल में इस्लाम मत के जोशो-खरोश अथवा बलपूर्वक पासार के लिए प्रण किया था। वस्तुतः मुल्ला-मौलाने आदि अकबर के राज्य काल में इस्लाम मत के अधिक पासार न हो सकने के रूबरू उदास, निराश व चिंताग्रस्त थे। अकबर बहुत हद तक सर्वसांझीवालता की नीति का अनुसारी रहा था और उसने इसी उपलक्ष्य में दीने-अलाही नाम का एक नया मत भी चलाया। यह भी स्मरण रहे कि अकबर बादशाह गुरु-घर की जन-कल्याणकारी नीतियों तथा कार्यक्रमों की शोभा सुनकर गोइंदवाल आया था। उसने गुरु-घर की पंगत की परिपाटी को न केवल माना था अपितु बहुत पसंद भी किया था। उसने श्री गुरु अमरदास जी से भेंट करने से पूर्व पंगत में बैठकर लंगर का परशादा छका था। फिर गुरु-घर को जागीर की भी पेशकश की जो सतिगुरु ने नम्रतापूर्वक तथा गुरु-घर की मर्यादा के प्रतिकूल बताते हुए स्वीकार नहीं की थी और किसानों को लगान से छूट प्रदान कराई थी। कट्टर मुल्ला-मौलाने ऐसे तजुर्बों से भयभीत थे। अकबर और जहांगीर के स्वभाव और नीतियों के बीच जमीन आसमान का अंतर था। जहांगीर की आत्म-कथा 'तुजके-जहांगीरी' में उसने स्पष्ट लिखा हुआ है कि वह गुरु-घर के विरुद्ध पूर्णतः नकारात्मक दृष्टिकोण रख रहा था और इसको नुकसान पहुंचाने के लिए समय तथा मौके की तलाश में था।

वस्तुतः श्री गुरु अरजन देव जी महाराज के गुरगद्दी काल में सिक्ख धर्म का विकास तथा विगास भी अत्यधिक हुआ था। गुरु पातशाह जी का लासानी व्यक्तित्व और उनके व्यक्तित्व के अनगिनत ही गुण तथा इसके साथ उनके द्वारा अपने गुरगद्दी काल में किये गए महान तथा स्मरणीय कार्य तत्कालीन शासकों-प्रशासकों को अच्छे नहीं लगते थे। उनको भय था कि सिक्ख मत का पासार होता गया तो इस्लाम मत अल्पसंख्यक मत हो जाएगा। यह स्मरण रहे कि सिक्ख मत मानवतावादी मूल्यों को बढ़ावा देने वाला धर्म है जो कट्टरता से कोसों दूर है। गुरु नानक पातशाह ने सर्वसांझीवालता और सबसे प्रेम-प्यार करने का नारा दिया था और मजहबों के तंग दायरों से मानवता को बाहर निकालने के लिए महान प्रयत्न किये थे, जिनमें गुरु जी को जन-साधारण ने बहुत भरपूर सहयोग भी दिया था। दूसरी ओर तत्कालीन शासक-प्रशासक हरेक जायज-नाजायज ढंग-तरीका अपने मत को फैलाने के लिए प्रयोग में लाना अपना जन्मसिद्ध अधिकार मान रहे थे।

पंचम गुरु जी ने अपने गुरगद्दी काल में गुरुद्वारा संतोखसर साहिब बनवाया। आप ने 'अमृत सर' सरोवर के बीच श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना की। इसकी नींव प्रसिद्ध सूफी फकीर साईं मियां मीर जी से रखवायी। इसके चारों दिशाओं में चार द्वार रखकर चारों दिशाओं से श्रद्धालुओं को यहां आने और प्रभु-यश सुनने का निमंत्रण दिया। आप ने तरनतारन नगर की भी स्थापना की और वहां

मानवता की निष्काम सेवा हेतु एक कुष्ठ आश्रम चलाया। श्री हरिगोबिंद पुरा और करतारपुर (जलंधर) की स्थापनाएं कीं। गुरु जी के समय में जब लाहौर में अकाल पड़ा तो इस समय दुखियों तथा जरूरतमंदों को दिल खोलकर गुरु-घर से सहायता एवं राहत प्रदान की गई। सिक्खी सिद्धांतों को गुरु नानक नाम-लेवा सिक्खों तथा समूह संसार के सदीवी कल्याण हेतु गुरु पातशाह ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आदि बीड़ अथवा प्रारंभिक पावन स्वरूप तैयार करके इसको श्री हरिमंदर साहिब में स्थापित किया और बाबा बुड्ढा जी को श्री हरिमंदर साहिब का प्रथम ग्रंथी नियुक्त किया। आपके गुरगद्दी काल में देश भर में सिक्खी के प्रचार-प्रसार हेतु विशेष प्रयास किये गए।

गुरु-घर सबके लिए सदैव खुला रहता है। इस प्रसंग में विपदा के समय खुसरो (जब वह बागी था) गुरु-घर आया। उसके भयभीत दिल को कुछ ढांढस मिला। वह तत्काल ही अपने रास्ते पड़ा। इस घटना को तत्कालीन हकूमत ने गुरु-घर अथवा गुरु जी के विरुद्ध घटिया राजनीति का सबूत देते हुए प्रयोग किया। गुरु जी को लाहौर बुलाया गया। आप हकूमत की कुचालों को पूर्णतः भांप चुके थे। इसी प्रसंग में लाहौर के लिए प्रस्थान करने के समय आपने साहिबजादा हरिगोबिंद जी को विशेष आदेश-निर्देश दिये और जुल्म-जब्र का सामना करने के लिए शस्त्रबद्ध संघर्ष का मार्ग अपनाने के लिए कहा, इसलिए कि गुरु नानक पातशाह द्वारा चलाये सर्वकल्याणकारी सिक्ख धर्म का अस्तित्व मिटाया न जा सके।

सतिगुरु की शहीदी में उनके साथ ईर्ष्या रखने वाले दीवान चंदू ने अत्यंत घृणत रोल अदा किया। दिल्ली की संगत के आग्रह पर सतिगुरु ने साहिबजादा हरिगोबिंद जी के लिए चंदू की पुत्री का रिश्ता नामंजूर किया था। चंदू ने गुरु जी को असहनीय तथा अकथनीय कष्ट दिये। उनको तपती लोह पर बैठाया गया, उनके सिर पर गर्म रेता डाली गई और उबलते पानी में बिठाया गया। सतिगुरु को यातनाएं सहन् करते हुए देख साईं मियां मीर जी तड़प उठे थे और उन्होंने अति गहरे दुख तथा आक्रोष को व्यक्त किया था। सतिगुरु ने शांतिभाव में कहा था : *"तेरा कीआ मीठा लागै ॥"* अथवा जो भी हो रहा है उस सर्वशक्तिमान प्रभु के हुक्म में ही हो रहा है। हमको उसके हुक्म के सामने नतमस्तक ही होना चाहिए। ऐतिहासिक वृत्तांत के विवरण बताते हैं कि सतिगुरु को छाले-छाले हुए शरीर के साथ रावी के ठंडे पानी में बिठाया गया और तत्पश्चात शहीद किया गया। अद्वितीय मानवता प्रेमी सतिगुरु ने जून मास की ग्रीष्म ऋृतु में दी गई घोर यातनाएं धैर्यपूर्वक सहन कीं और यूं आने वाले गुरु नानक नाम-लेवा सिक्खों के अनुकरण के लिए शहादत की परिपाटी आरंभ की। हम सब भलीभांति अवगत हैं कि आने वाला सारा सिक्ख इतिहास इसी शहादत की परिपाटी का अनुसरण करते हुए सृजन किया गया। इसी श्रृंखला के अंतर्गत गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख अनगिनत शहादतें देकर जुल्म-जब्र को भारत भूखंड से खत्म करने में सफल हुए। बाबा बंदा सिंघ बहादर द्वारा सरहिंद फतह करने के घटनाक्रम के अलावा अनेकों विजयों से भरा इतिहास, सिक्ख मिसलों का उत्थान तथा अंत में महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा विशाल खालसा राज की स्थापना इसका जीवंत प्रमाण अथवा उदाहरण हैं।

दूसरी तरफ जून १९८४ में श्री हरिमंदर साहिब, अमृतसर तथा अन्य कई गुरु-घरों में पंचम पातशाह का शहीदी पर्व मना रही सिक्ख संगत पर भारत सरकार के हुक्म से अपने ही देश की फौजों ने दमन-चक्र तथा कत्लोगारत का दौर चलाया था। वस्तुतः आज भी सिक्ख कौम कई प्रकार के जुल्म-जब्र और अन्याय का ग्रास बनाई जा रही है। देश के शासकों-प्रशासकों को देश के विकास-विगास के लिए सिक्ख कौम के प्रति सकारात्मक नीति तथा रवैया अपनाना चाहिए, इसी में सरबत्त का भला विद्यमान है।

श्री गुरु अरजन देव जी

*-नीतू अनेजा**

श्री गुरु अरजन देव जी का जन्म १९ वैशाख सं. १६२० तद्नुसार १५ अप्रैल, १५६३ को गोइंदवाल में श्री गुरु रामदास जी के घर माता भानी जी के उदर से हुआ। इनका पालन-पोषण नाना श्री गुरु अमरदास जी की देख-रेख में हुआ। ११ वर्ष की आयु तक आप गोइंदवाल ही रहे। नाना श्री गुरु अमरदास जी से गुरमति की लगन लगी और आप गुरसिक्खी में परिपक्व हुए।

श्री गुरु रामदास जी ने आपको योग्य जानकर १८ वर्ष की आयु में आपको गुरगद्दी सौंप दी। पिता ने आपकी योग्यता की जांच आपकी लेखनी के आधार पर की, वह काव्य जो आप ने पिता के प्रेम और प्रेरणा के फलस्वरूप लिखा था। ऐसा काव्य लिखने के लिये पिता ने आपके बड़े भाई प्रिथी चंद को भी मौका दिया था पर वो ऐसा करने में असफल रहा। इसी कारण गुरगद्दी का सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ।

प्रिथी चंद आयु में बड़ा होने के कारण गुरगद्दी पर अपना अधिकार समझता था इसलिये वह नाराज हो गया। प्रिथी चंद ने आपको जानी नुकसान पहुंचाने की भी कोशिश की लेकिन वह हर बार असफल रहा। आपकी बड़ी भाभी ने आप पर राख फेंकी लेकिन आप ने उसे फूलों की बरसात समझ कर स्वीकार किया। प्रिथी चंद ने आप जी का बहुत विरोध किया लेकिन आप शांत रहे।

गुरु जी ने लोगों को कमाई का दसवंध (दसवां हिस्सा) देने के लिये प्रेरित किया। श्री गुरु अरजन देव जी ने सरोवर का कार्य पूर्ण करवाया। गुरु जी ने ही सरोवर के बीच श्री हरिमंदर साहिब की नींव अपने प्यारे सिक्ख साईं मीयां मीर से अक्तूबर १५८८ ई में रखवाई। अमृत सरोवर नाम के कारण शहर का नाम अमृतसर प्रसिद्ध हो गया।

आप जी का विवाह श्री किशन चंद की सुपुत्री माता गंगा जी के साथ सन् १५७९ में हुआ जो कि गांव मौ, तहसील फिलौर (लुधियाना) के निवासी थे। उनसे आपको पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई जो श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी कहलाये।

आप ने सिक्खी का प्रचार तरनतारन, खडूर साहिब, गोइंदवाल साहिब, सरहाली, खानपुर तथा अन्य क्षेत्रों में कर कई 'सखी-सरवरीये' मत को मानने वाले लोगों को सिक्ख बनाया।

एक बार लाहौर में अकाल पड़ गया। अकाल के कारण कई बीमारियां फैल गईं। लोग मरने लगे। गुरु जी वहां सपरिवार पहुंचे व लोगों की सेवा में जुट गये। कमाई का 'दसवंध' भी लोगों के दुखों को दूर करने के लिये लगाया। बादशाह अकबर ने जब गुरु जी को इतनी सेवा करते हुये देखा तो वह बहुत खुश हुआ। उन्होंने गुरु जी के कहने पर किसानों का लगान माफ

**१०१४, खुड्ड मोहल्ला, लुधियाना। फोन : ९४६४३६१९०९*

कर दिया। गुरु जी ८ महीने तक लाहौर में सेवा करते रहे, वहां लंगर लगवाये, अनाथों के पालन-पोषण के लिये आश्रम बनवाये व डब्बी बाजार में गुरुद्वारा बाउली साहिब बनवाना आरंभ किया।

गुरु जी ने भ्रम में फंसे लोगों को सही रास्ता दिखाया। गुरु जी के सपुत्र श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को चेचक निकल आई तो कई लोगों ने कहा कि ये शीतला माता है, माता के मंदिर में प्रसाद चढ़ाओ, पर गुरु जी ने कहा कि नहीं, यह एक तरह की बीमारी है, इसका इलाज करना चाहिये। इस प्रकार लोगों को कई भ्रमों से मुक्त करवाया।

श्री गुरु अरजन देव जी का सम्पूर्ण जीवन तथा उनकी बाणी ईश्वर के चरणों में नत रहने का सिद्धांत प्रस्तुत करती है। आज के भौतिकवादी तेज भागते आधुनिक जीवन में मनुष्य अनेक प्रकार के मानसिक व शारीरिक रोगों का शिकार बन रहा है परन्तु यह वैज्ञानिक तौर पर सत्य है कि श्री गुरु अरजन देव जी की प्रसिद्ध बाणी 'सुखमनी साहिब' को हृदय में बसा लें तो वह सब रोगों से मुक्त हो सकता है। श्री गुरु अरजन देव जी का सुख का संकल्प 'सुखमनी साहिब' का केंद्रीय विचार है। अनेक तकलीफें सहने एवं गर्म तवे पर बैठने वाला महापुरुष ही सुख के सैद्धांतिक पक्ष को मनुष्यता के सामने रख सकता है।

सिक्ख धर्म की, कर्मकांडों एवं अंधविश्वासों से मुक्त प्रचारक लहर के फलस्वरूप अन्य धर्मों के लोग भी सिक्ख धर्म ग्रहण करने के लिये प्रेरित हुए। बहुत-से मुसलमान भी सिक्ख बने। यह बात कट्टरपंथी इस्लाम व्यक्तियों के लिये बहुत दुखदायी थी। शेख अहमद सरहंदी व शेख फरीद बुखारी जैसे कट्टर मुसलमानों ने जहांगीर का साथ देकर उनको अकबर के पश्चात राजगद्दी पर बिठाया। प्रिथी चंद और चंदू, ने जहांगीर के खूब कान भरे ताकि वो सिक्खी लहर को खत्म करे। जहांगीर ने खुसरो की बगावत के समय गुरु जी पर खुसरो की सहायता करने का झूठा आरोप लगाकर श्री गुरु अरजन देव जी को शहीद करने का आदेश दे दिया। १ आषाढ़ सं. १६६३ तद्नुसार ३० मई, १६०६ को श्री गुरु अरजन देव जी को असह कष्ट देकर शहीद कर दिया गण।

गुरु जी के शरीर पर गर्म रेत डलवाई गई और उबलते पानी में तथा गर्म लौह पर बिठाया गया। इन भयानक कष्टों के बाद गुरु जी को रावी नदी के ठंडे पानी में बिठाकर और अधिक कष्ट दिया गया। इस प्रकार गुरु जी शहीद हो गये।

सिद्धांतों और उसूलों की रक्षा करते हुए गुरु जी ने अनेक कष्टों का सामना किया तथा प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। उनकी यह कुर्बानी धैर्य तथा अडोल रहने की अद्भुत मिसाल है। एक अमर शहीद तथा श्री आदि ग्रंथ साहिब के संपादक के लिहाज से गुरु जी का व्यक्तित्व ऐतिहासिक बन कर लोगों के दिलों के आसमान पर चमकता सितारा बन गया है। श्री गुरु अरजन देव जी के शहीदी पर्व पर उन्हें कोटि-कोटि नमन है।

श्री गुरु अरजन देव जी का अद्वितीय जीवन

-स. बहादर सिंघ*

सिक्ख गुरु साहिबान का इतिहास संयम, सहनशीलता, त्याग, सेवा, सिमरन, परोपकार, वीरता एवं महान शहीदियों का इतिहास रहा है, जिसमें पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज की रौंगटे खड़ी कर देने वाली शहीदी ने सिक्खों में देश, धर्म व मानवता के लिये कुर्बानियों का जो जज्बा उत्पन्न कर दिया उससे आपको "शहीदों के सरताज" कहकर याद किया जाता है।

श्री गुरु अरजन देव जी महाराज का जन्म १९ वैशाख, सं. १६२० तदनुसार १५ अप्रैल, १५६३ ई को गोइंदवाल, (जिला अमृतसर) में पिता श्री गुरु रामदास जी (चौथे गुरु) एवं माता भानी जी की कोख से हुआ। नाना श्री गुरु अमरदास जी (तीसरे गुरु) से गुरमति की लगन लगी। ग्यारह साल की उम्र तक आप गोइंदवाल में रहे। फिर नाना श्री गुरु अमरदास जी के गुरपुरी सिधार जाने के बाद अपने पिता श्री गुरु रामदास जी एवं परिवार के साथ गुरु का चक्क (अब अमृतसर) आ गये। आपको गुरगद्दी के योग्य समझते हुये २ आश्विन सं. १६३८ तदनुसार १ सितंबर, १५८१ ई को १८ साल की उम्र में आपको गुरिआई सौंप दी एवं बाणी का खजाना सौंप दिया। इस पर बड़े भ्राता प्रिथी चंद नाराज हो गये। बड़ा होने की वजह से वह गुरगद्दी पर अपना हक समझता था। आपने 'गुरु के चक्क' का नाम बदलकर 'रामदासपुर' रख दिया। पिता श्री गुरु रामदास जी द्वारा खुदवाये गये सरोवर की सेवा का कार्य शुरू कर दिया जो सन् १५८८ तक पूर्ण हो गया। इस सरोवर का नाम श्री गुरु अरजन देव जी ने 'अमृत सर' रखा। आपने सरोवर के बीच श्री हरिमंदर साहिब का नींव-पत्थर एक महान मुस्लिम पीर साईं मियां मीर से रखवाया। 'अमृत सर' सरोवर के नाम से शहर का नाम भी 'अमृतसर' प्रसिद्ध हो गया। १५७९ ई में आपकी शादी तहसील फिलौर के गांव मऊ निवासी श्री किशन चंद की सुपुत्री बीबी गंगा जी से हुई, जिनकी कोख से छेवें पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म हुआ। आपने सन् १५९६ में अमृतसर के पास शहर तरनतारन बसाया। १५९३ ई में करतारपुर बसाया। सन् १५९५ ई में जब पानी की कमी पड़ गई तो सैंकड़ों कुएं खुदवाये। गांव वडाली के नजदीक छ: हरटों वाला कुआं छिहरटा भी लगवाया।

लाहौर में अकाल पड़ गया। अकाल से कई बीमारियां फैल गईं। लाहौर शहर की गलियां एवं बाजार मुर्दों से भर गये। श्री गुरु अरजन देव जी सिक्खों एवं परिवार सहित वहां पहुंचे। गुरु की गोलक में सिक्खों द्वारा भेजा जाने वाला सारा धन दुखियों का दुख बांटने में खर्च किया। अपने हाथों से सेवा की। अकबर बादशाह आगरा से लाहौर पहुंचा। गुरु की सेवा से प्रसन्न होकर तथा गुरु जी के कहने पर

*मसकीन निवास, ३, पंजाबी कालोनी, इटावा (उ. प्र.)। मो: ९८९७५७६५००

किसानों का लगान माफ कर दिया। चूना मंडी में पिता श्री गुरु रामदास जी के जन्म-स्थान की इमारत शुरू करवाई। डब्बी बाजार में गुरुद्वारा बाउली साहिब प्रारंभ किया। यतीमों की पालना के लिए आश्रम एवं लंगर शुरू किये। आठ महीने गुरु जी लाहौर रहने के पश्चात् वापस गोइंदवाल होते हुए अमृतसर पहुंचे। गुरबाणी का प्रचार-प्रसार करते हुये आपने गुरु-कीर्तन के गायन की प्रथा प्रारंभ की। सन् १६०१ ई में श्री हरिमंदर साहिब की इमारत पूर्ण हो चुकी थी। इसमें रोजाना कीर्तन प्रारंभ करवाया। इसके बाद गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ तैयार करने का कार्य आरंभ करवाया। इस काम के लिए भाई गुरदास जी को श्री हरिमंदर साहिब से लगभग एक कि. मी. दूर रामसर सरोवर के किनारे बैठकर के लिखने की सेवा दी। १ सितंबर, १६०४ ई. को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पहला प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब में किया गया। बाबा बुड्ढा जी को श्री हरिमंदर साहिब में प्रकाशमान श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पहला ग्रंथी नियुक्त किया। जात-पात का भेदभाव मिटाते हुए आप जी द्वारा श्री हरिमंदर साहिब में चार दरवाजे रखे गये।

श्री गुरु अरजन देव जी की प्रशंसा चारों ओर फैल रही थी। लाहौर सूबे का वजीर चंदू (जिसकी बेटी का रिश्ता श्री (गुरु) हरिगोबिंद साहिब से नहीं हो सका था) तथा भाई प्रिथी चंद जिसने ईर्ष्यावश गुरु जी की विरोधता, यहां तक कि गुरु जी के बालपुत्र तक को मारने का षड़यन्त्र किया था और शेख अहमद सरहिंदी, अहमद शरीफ, शेख बुखारी ने मिलकर जहांगीर के कान भरने शुरू कर दिये। इन सभी ने अकबर की मौत के बाद घर की खानाजंगी में जहांगीर को गद्दी पर बैठाने में साथ दिया था। जहांगीर के भाई मीर खुसरो (यह सूफी तबियत का मालिक था एवं संतों की संगत में रहा करता था) की बगावत के समय उसके एक रात सबके सांझे गुरु-घर आने एवं भोजन करने के दोष में गुरु जी को दोषी करार दे दिया।

गुरु जी इन सारे षड़यन्त्रों को भांप चुके थे। अपने ११ वर्षीय सुपुत्र श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को गुरगद्दी सौंप दी। आप जी पर खुसरो का साथ देने का दोष मढ़ते हुये गिरफ्तार कर लाहौर ले जाया गया। यहां अनेक कष्ट देते हुये खौलते पानी में बैठाया जाना, फिर गर्मी के महीने में गर्म लौह पर बैठाकर शीश पर गर्म रेत डाले जाने वाले हृदय-विदारक दृश्य को देखकर साईं मीयां मीर भी पुकार उठे कि हे गुरदेव! आप हुक्म करें तो मैं दिल्ली से लाहौर की ईंट से ईंट बजा दूं। गुरु साहिब उसका हाथ पकड़कर बोले कि प्रभु का हुक्म मानना है। *"तेरा कीआ मीठा लागै ॥ हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ॥"* का उच्चारण करते हुए १ आषाढ़, सं. १६६३ तद्नुसार ३० मई, १६०६ ई को मानवता के लिये महान शहीदी देते हुये आप समाज को ठंडक प्रदान कर गये।

इस संदेश के चलते इस दिन आपके सिक्खों एवं अनुयायियों द्वारा ठंडे एवं मीठे जल की छबीलें लगाई जाती हैं। आपके शहीदी-स्थान पर आज गुरुद्वारा डेहरा साहिब (लाहौर में) स्थित है।

भक्त कबीर जी की बाणी के विचार-भाव की प्रासंगिकता

-डॉ. अमृत कौर*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सभी भक्त साहिबान में सर्वाधिक बाणी भक्त कबीर जी की है। भक्त कबीर जी समाज के राज्य अभिमानी वर्ग के विरुद्ध सदैव 'गगन दमामा' बजा कर रखते थे। वे निरंतर दीन के हित के लिए योद्धा बनकर जूझते रहे। पुरजा-पुरजा कट मरना परन्तु जीवन रूपी रणक्षेत्र में कभी पीठ नहीं दिखानी और सच्चाई के लिए सदैव सिर-धड़ की बाजी लगा देने के लिए भक्त कबीर जी प्रेरणा देते हैं। जब कभी धर्म-युद्ध का दमामा बजता है भक्त कबीर जी का रणक्षेत्र में लड़ने के लिए चुनौती देने वाला यह शबद सहज ही मानव-स्मृति में उजागर हो जाता है :

गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ ॥
खेतु जु मांडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ ॥
सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥
(पन्ना ११०५)

भक्त कबीर जी की इन पंक्तियों के स्वर पर मार्चपास्ट करती हुई गुरु साहिबान की लाडली फौजें देश और धर्म की रक्षा के लिए, स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए सिर-धड़ की बाजी लगा, युद्ध-क्षेत्र में प्राणों को न्यौछावर करने के लिए तत्पर हो जाती हैं। यह शबद रणभेरी का काम करता हुआ, उनके लहू को गर्माता हुआ, प्राण हथेली पर लेकर पुरजा-पुरजा कट मरने के लिए, मातृभूमि की बलिवेदी पर प्राणों की आहुति देने के लिए प्रोत्साहित करता है। ऐसे लगता है जैसे एक संत-सिपाही अत्याचारी राज्य सत्ता के विरुद्ध लड़ रहा हो।

भक्त कबीर जी साधारण जनता के मसीहे थे। उन्होंने साधारण जनता की भाषा में लिखकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र--आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, साहित्यिक के लिए साधारण जनता का मार्ग-दर्शन किया। भक्त कबीर जी मानवी एकता, समानता, भ्रातृभाव का संदेश देते हैं। वे ऊंच-नीच का भेदभाव मिटाकर निम्न वर्ग में आत्मविश्वास और स्वाभिमान की भावना पैदा करते हैं। 'एक ही रक्त से सभी बने हैं' के अनुसार ब्राह्मण को झकझोरते हुए वैर-विरोध में फंसे लोगों को कहते हैं कि जरा आंखों से पर्दा उठा कर तो देखो, वह साईं घट-घट में रमता हुआ दिखाई देगा!

प्रगटी जोति मिटिआ अंधिआरा ॥
राम रतनु पाइआ करत बीचारा ॥
(पन्ना १३४९)

कितनी सरल व मीठी भाषा में भक्त कबीर जी ने जीवन का रहस्य खोल दिया है! उनका यह शबद तो सिक्ख धर्म का अविभाज्य अंग बन कर गुरमति-दर्शन का मूल आधार बन गया है:

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥ *(पन्ना १३४९)*

भक्त कबीर जी तथाकथित जुलाहे थे।

*१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०३ (पंजाब)

निम्न वर्ग से संबंधित होने पर उनमें कोई हीन भावना नहीं है। जुलाहा हुआ तो क्या हुआ उनके हृदय में तो गोपाल बसते हैं :

कबीर जाति जुलाहा किआ करै हिरदै बसे गुपाल ॥ *(पन्ना १३६८)*

इस जात-पात के आधार पर निम्न वर्ग के हृदय से हीन भावना निकालने के लिए और उनमें आत्म-विश्वास, आत्म-सम्मान की भावना जागृत करने के लिए भक्त कबीर जी सदैव अपनी आवाज बुलंद करते रहे। उन्होंने अपने संदेश को घर-घर तक पहुंचाने के लिए लोक-भाषा को अपनी बाणी का माध्यम बनाया। उनके अनुसार संस्कृत में लिखे होने के कारण धार्मिक ग्रंथ साधारण जनता की समझ से बाहर थे और ब्राह्मणों की बपौती बन गए थे। इन ग्रंथों पर उनका एकाधिकार था। इस बहते नीर रूपी मातृ-भाषा में बाणी रचना के द्वारा वे सर्वसाधारण को जागृत और शिक्षित करने में सफल हुए। लोक-भाषा में लिखे होने के कारण आधुनिक युग में भी उनके दोहे आम लोगों की जुबान पर चढ़े हुए हैं। ये शाश्वत मूल्यों पर आधारित होने के कारण सदाबहार हैं। उनके ये शबद साधारण जनता में आत्म-विश्वास, आत्म-सम्मान पैदा करने, ऊंच-नीच, जात-पात के भेदभाव समाप्त करने में सफल हुए :

जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥
तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥
हम कत लोहू तुम कत दूध ॥
कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारे ॥ *(पन्ना ३२४)*

सभी कुदरत के बंदे हैं। कोई छोटा या बड़ा नहीं है। भगवान प्यार और भक्ति के भूखे हैं :

राजन कउनु तुमारै आवै ॥
ऐसो भाउ बिदर को देखिओ ओहु गरीबु मोहि भावै ॥ *(पन्ना ११०५)*

भक्त कबीर जी धार्मिक कर्मकांडों, दिखावों, आडंबरों के विरुद्ध हैं। वे अन्याय के प्रति, बाह्याडंबरों के प्रति विरोध और सत्य का प्रतीक हैं। वे विद्रोह का झंडा उठाए तीखी भाषा में इन धार्मिक आडंबरों पर प्रहार करते हैं :

कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ ॥
जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ ॥
(पन्ना १३७४)

भक्त कबीर जी सच्ची व तीखी भाषा बोलते हैं, तीखा प्रहार करते हैं, जिसे सुनकर मुल्ला, काजी, पंडित तिलमिला जाते हैं :

अलहु एकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा ॥
हिंदू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा ॥
(पन्ना १३४९)

यदि मन में छल-कपट है तो हज-काबे जाने का कोई लाभ नहीं। अतः पंडितों और मुल्लाओं के पाखंडों को देखते हुए भक्त कबीर जी स्पष्ट शब्दों में कहते हैं :

कबीर बामनु गुरू है जगत का भगतन का गुरु नाहि ॥
अरझि उरझि कै के पचि मूआ चारउ बेदहु माहि ॥ *(पन्ना १३७७)*

धार्मिक ग्रंथों और ज्ञान पर केवल ब्राह्मणों का ही एकाधिकार नहीं है, इस पर सर्व-साधारण जनता और तथाकथित निम्न वर्ग का भी उतना ही अधिकार है। ब्राह्मण को चुनौती देते हुए भक्त कबीर जी कहते हैं :

तूं बाम्हनु मै कासीक जुलहा बूझहु मोर गिआना ॥ *(पन्ना ४८२)*

भाव मैं जुलाहा सही, निम्न वर्ग का सही, पर मैं ज्ञान की दृष्टि से, भक्ति की दृष्टि से तुम्हारे से कैसे हेय हूं? तुझे अपने ज्ञान पर अभिमान हो सकता है पर मैं तो अपने प्रभु से सच्चे मन से प्यार करता हूं। मेरा प्रभु तो मेरे अंग-संग रहता है।

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ॥
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर ॥
(पन्ना १३६७)

हिंदू-मुसलमानों के पारस्परिक और वैर-विरोध तथा कट्टरता के उन दिनों में भक्त कबीर जी ने मानवी एकता का संदेश देकर दोनों धर्मों में सद्भावना तथा सांप्रदायिक एकता पैदा करने का सराहनीय कार्य किया। श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी उन्हें मानव एकता का अग्रदूत मानते हुए कहते हैं, "कबीर एक ऐसे चौराहे पर खड़े थे जहां एक ओर से हिंदुत्व निकल आता है और दूसरी ओर से मुसलमान। वे मानवीय एकता की दिव्य रोशनी बन कर चमके।"

अपनी पावन बाणी के द्वारा राष्ट्रीय एकता और सद्भावना उत्पन्न करने के लिए भक्त कबीर जी हमें अपनी पुरातन संस्कृति और सभ्यता से जोड़ते हैं। उनकी पावन बाणी में भक्त प्रहलाद की भक्ति-भावना का मार्मिक वर्णन है :

प्रहलाद पठाए पड़न साल ॥
संगि सखा बहु लीए बाल ॥
मो कउ कहा पढ़ावसि आल जाल ॥
मेरी पटीआ लिखि देहु स्री गुोपाल ॥
(पन्ना ११९४)

वे परमात्मा के लिए 'एक' शब्द का प्रयोग करते हैं जिससे उनका अभिप्राय घट-घट रमने वाले प्रभु से है।

भक्त कबीर जी की बाणी का सामाजिक उत्थान और निर्माण में विशेष योगदान है। उनकी बाणी में कर्म-योग, ज्ञान-योग और भक्ति-योग का संगम है। वे साधारण जनता को धार्मिक आडंबरों और कर्मकांडों में उलझने की अपेक्षा जीवन-यापन के कुछ सरल-साधारण नियम बताते हैं जिन पर चल कर वे अपने जीवन का निर्माण कर सकते हैं :

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि ॥
हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥
(पन्ना १३७५-७६)

भक्त कबीर जी की ये पंक्तियां उनके परिश्रम के सिद्धांत को दर्शाती हैं और गुरमति-दर्शन से मेल खाती हैं। भक्त कबीर जी स्वयं सम्पूर्ण आयु कड़े परिश्रम द्वारा जीविका अर्जित करते रहे। नैतिकता-सदाचार निर्माण के लिए भक्त कबीर जी जीवन में सद्गुणों को धारण करने पर बल देते हैं। आप जी काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों और दुर्गुणों को छोड़ने पर बल देते हैं :

परहरु लोभु अरु लोकाचारु ॥
परहरु कामु क्रोधु अहंकारा ॥ (पन्ना ३२४)
कबीर जहा गिआनु तह धरमु है
जहा झूठु तह पापु ॥
जहा लोभु तह कालु है
जहा खिमा तह आपि ॥ (पन्ना १३७२)

जीवन में शुभ गुणों के विकास के लिए भक्त कबीर जी साधसंगत पर बल देते हैं:

ओइ भी चंदनु होइ रहे बसे जु चंदन पासि ॥
(पन्ना १३६५)

पारस के स्पर्श से जैसे लोहा सोना बन जाता है वैसे ही महान आत्माओं के स्पर्श से व्यक्ति में सद्गुणों का विकास होता है :

पारसु परसि लोह कंचनु सोई ॥ (पन्ना ४८१)

भक्त कबीर जी तामसिक भोजन और मादक पदार्थों के सेवन के विरुद्ध हमें सुचेत करते हैं :

कबीर भांग माछुली सुरा पानि जो जो प्रानी खांहि ॥
तीरथ बरत नेम कीए ते सभै रसातलि जांहि ॥
(पन्ना १३७७)

अंत: में विजय सच्चाई और नेकी की होती है। रावण बड़ा राजा था परन्तु अनैतिक जीवन के कारण उसका कितना भयानक अंत हुआ, इतिहास गवाह है :

इकु लखु पूत सवा लखु नाती ॥
तिह रावन घर दीआ न बाती ॥ (पन्ना ४८१)

प्रभु को मन की शुद्धता और पवित्रता के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है न कि चतुरता से :

चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥ . . .
भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥ (पन्ना ३२४)

भक्त कबीर जी के दर्शन में लौकिक तथा पारलौकिक जीवन का संगम हैं। वे नाम जपते हुए काम करने का संदेश देते हैं। उनका जीवन बड़ा सादा और सरल है और आवश्यकताएं बहुत कम :

दुइ सेर मांगउ चूना ॥
पाउ घीउ संगि लूना ॥
अध सेरु मांगउ दाले ॥
मो कउ दोनउ वखत जिवाले ॥ (पन्ना ६५६)

भक्त जी जीवन की इन बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति परमात्मा के आगे स्पष्ट ऊंचे स्वर में करने का आग्रह करते हैं:

भूखे भगति न कीजै ॥
यह माला अपनी लीजै ॥ (पन्ना ६५६)

जीवन के सही मार्गदर्शन के लिए कर्म और भक्ति के साथ ज्ञान के संगम की आवश्यकता है। भक्त कबीर जी उन नेत्रों को ही नेत्र स्वीकार करते हैं जिनमें ज्ञान का अंजन (सुरमा) पड़ा हुआ है :

गिआन अंजनु जिह पाइआ ते लोइन परवानु ॥
(पन्ना ११०३)

ज्ञान-प्राप्ति के लिए भक्त कबीर जी अध्ययन और अध्यापन के पक्ष में हैं :

बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै ॥
(पन्ना १३५०)

श्री गुरु नानक देव जी के *"पड़ि पड़ि गडी लदीअहि"* की भांति भक्त कबीर जी भी मानते हैं कि यदि ज्ञान को हम जीवन में नहीं ढालते तो ज्ञान अर्जन करना ऐसा है जैसे गधे ने चंदन का भार उठा रखा हो :

बेद पुरान पड़े का किआ गुनु खर चंदन जस भारा ॥ (पन्ना ११०३)

आध्यात्मिक और शैक्षणिक विकास में भक्त कबीर जी के दर्शन में गुरु का विशेष स्थान है। सच्चा गुरु नाम का खजाना अपने शिष्य को देता है जो उसे मुक्ति के द्वार तक ले जाता है।

कबीर ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ ॥
मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥
(पन्ना १३६७)

भक्त कबीर जी के तसव्वुर में बसा गुरु, गुरु नानक साहिब के तसव्वुर के गुरु की भांति आर्थिक प्रलोभनों से ऊपर उठ कर विद्या प्रदान करता है। वह अध्यापक जो धन इकट्ठा करने के लिए विद्या दान करता है वह अपने जीवन को व्यर्थ गंवाता है :

माइआ कारन बिदिआ बेचहु जनमु अबिरथा जाई ॥ (पन्ना ११०३)

भक्त कबीर जी प्रभु के अनन्य भक्त हैं। उनकी जिह्वा प्रभु का नाम निरंतर जपती है

और नाम-सिमरन द्वारा वे प्रभुमय बन जाते हैं:
कबीर तूं तूं करता तूं भहूआ मुझ महि रहा न हूं ॥
जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू ॥ *(पन्ना १३७५)*

उनको कण-कण में उस परम पिता परमात्मा के दर्शन होते हैं। प्रभु और भक्त कबीर जी एक बन जाते हैं। आत्मा-परमात्मा का मिलन होता है :
राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी ॥ *(पन्ना ९६९)*

यह आत्मा और परमात्मा की एकाकार की यात्रा भक्त कबीर जी की पावन बाणी की प्रमुख विशेषता है।

भक्त कबीर जी संत थे, समाज-सुधारक थे, क्रांति के अग्रदूत थे। हृदय से सहज रूप से फूटी उनकी बाणी आज भी अति लोकप्रिय है। उनके शबद उनके हृदय के सच्चे उद्‌गार हैं।

भगवान की अराधना में गाए गीत, प्रभु-चरणों में समर्पित पुष्प-गीतों का रूप धारण कर सदा के लिए अमर हो गए हैं :
लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार ॥ *(पन्ना ३३५)*

हृदय से निकली इन पंक्तियों को कवि वर्डसवर्थ शब्दों में हम "Spontaneous overflow of powerful emotions" कह सकते हैं। हृदय से निकली इन भावनाओं के उद्वेग में अनुभूति की सच्चाई और गहराई है जो हृदय पर सीधा प्रभाव डालती है और अंतरमन को उद्वेलित करती है। उनकी बाणी गुणों की दृष्टि से बेजोड़ है, कालजयी, अमर और शाश्वत है।

वस्तुतः भक्त कबीर जी एक ऐसा शस्त्र हैं जो सांप्रदायिक भेदभाव और अमानवीय व्यवहार के विरुद्ध विद्रोह और मानवीय विजय पताका का झंडा है। ऐसे महान मनुष्य का संदेश आह्वान कभी पुराना नहीं होता। वह सार्वभौमिक और सर्वकालीन बन, युगदृष्टा बन मनुष्य की कल्पना को सदैव आंदोलित करता रहता है। वह सद्‌भावना और सांप्रदायिक एकता का प्रतीक है जो उस समय की मांग थी और युग-युग की मांग रहेगी। राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए प्रेम और सद्‌भावना का संदेश देने के लिए, नफरत की आग बुझाने के लिए, मुहब्बत का पाठ पढ़ाने के लिए वे निरंतर प्रयास करते रहे, जिन्हें हम इन काव्य पंक्तियों में प्रकट कर सकते हैं :
मौसम की बांहें, दिशा और ये राहें,
सभी हमसे चाहें सद्‌भावना।
नफरत थमेगी, मुहब्बत रमेगी,
यह धरती बनेगी दिव्यांगना।

सिक्ख धर्म व्यवहारिक लग रहा है

'गुरमति ज्ञान' मार्च, २०१० प्रति मिली। आभारी हूं। पत्रिका को बहुत ध्यान से रुचिपूर्वक पढ़ता हूं और धीरे-धीरे सिक्ख धर्म की खूबियों, अच्छाइयों को आचरण में उतारने का प्रयास कर रहा हूं। मुझे ऐसा लगता है कि मैं धीरे-धीरे सिक्ख धर्म के करीब आ रहा हूं। यूं तो सभी धर्मों का सार एक ही है मगर सिक्ख धर्म व्यवहारिक लग रहा है। आज पाखंड ही मानवता का विनाश कर रहा है।

-माता प्रसाद शुक्ल, ग्वालियर-४७१००१

भक्त कबीर जी का आध्यात्मिक दृष्टिकोण

-श्रीमती शैल वर्मा*

भक्त कबीर जी का जन्म सन् १४५६ में हुआ। उनका पालन-पोषण नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपत्ति ने किया। भक्त कबीर जी की पत्नी का नाम लोई था और कमाल तथा कमाली नाम के उनके दो बच्चे थे।

भक्त कबीर जी ने स्वामी रामानंद जी से दीक्षा प्राप्त की थी। भक्त कबीर जी का कहना है: "काशी में हम प्रगट भये, रामानंद चेताये"। भक्त कबीर जी ने साधु-संतों के सतसंग के कारण पर्याप्त ज्ञान तथा अनुभव प्राप्त किया था। संवत् १५७५ में भक्त कबीर जी ने मगहर में नश्वर देह का त्याग किया। भक्त कबीर जी ने अपने मन के निर्मल भावों को बाणी के द्वारा व्यक्त किया।

भक्त कबीर जी एक घुमक्कड़ साधु रहे, साधुओं के सन्निध्य में मठों में निवास करते थे, किन्तु किसी भी मठ से बंध कर नहीं रहे। बनारस के कबीर चौरा मठ में आना-जाना अधिक था। उनके रहने का मुख्य स्थान मगहर और बनारस रहा। भक्त कबीर जी आडंबर रहित इंसान बन कर पाखंड को खंड-खंड कर जीवन से दूर फेंकते रहे। वे समाज को दूषित परंपराओं और अंधविश्वास, भूत-प्रेत के भय आदि से रहित देखना चाहते थे। उनके लिये जात-पात के मायने कुछ नहीं थे। धन का दुरुपयोग न करो। समय व्यर्थ न गंवाओ, बाहर कुछ नहीं। अपने अंदर का चिंतन-मनन करो, नाम जपो। उनकी पावन बाणी का यही संदेश है। भक्त कबीर जी एक महान बाणीकार थे। उनकी पावन बाणी पूरी तरह आध्यात्मिक है। वे अनुभव के भंडार थे। निडर, निष्पक्ष बोल बोलने वाले, सच से सराबोर वे आध्यात्मिक जगत के निवासी, निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे। भक्त कबीर जी की बाणी तथा चिंतन में जहां गंभीर ईश्वरीय दर्शन है वहीं ज्ञान, भक्ति व आध्यात्य का अनूठा संगम भी है। आध्यात्मवादी वो है जो सच्चा ज्ञान, सच्चे शबद की दीक्षा दे। सच्चे शबद की खोज ही सच्चे गुरु की कसौटी है। वह मिल जाये तो चौरासी लाख योनियों से मुक्ति-मार्ग प्रशस्त हो जाये। जहां भौतिकता समाप्त होती है वहीं से अध्यात्म शुरू होता है।

संसार की रौनक तो पग-पग पर सुलभ है जो जीव को मृत्यु की ओर ले जाती है, किन्तु यही "माया महा ठगनी" का भटकाव है। स्थाई आनंद और अमरत्व को कैसे पहचानें? यह सतिगुरु और ज्ञान-नेत्र की प्राप्ति पर ही संभव है। भक्त कबीर जी ने इसी की खोज को साकार किया:

कबीर गुरु लागा तब जानीऐ मिटै मोहु तन ताप ॥
हरख सोग दाझै नही तब हरि आपहि आपि ॥
(पन्ना १३७४)

अज्ञानता का दाग, अज्ञानता का अंधकार ज्ञान के प्रकाश से ही जायेगा। अहम और स्वत्व का नाश कर भक्त कबीर जी अध्यात्म की विराटता का न केवल स्मरण करते हैं बल्कि स्वयं को उस असीम सत्ता से ही अनुप्राणित मानते हैं। भक्त कबीर जी ऐसे लोक की खोज करना चाहते हैं जहां बारह मास स्थाई आनंद का साम्राज्य हो :

*****४८/८, सागर सदन, गांधी नगर, पुलिस चौकी के पीछे, बस्ती-२७२००१ (उ. प्र.) फोन : ०५५४२-२८८५८२

कबीर पानी हूआ त किआ भइआ सीरा ताता होइ ॥
हरि जनु ऐसा चाहीऐ जैसा हरि ही होइ ॥
(पन्ना १३७२)

दिव्य ज्ञान और शुद्ध आचरण से भक्त कबीर जी ने तत्कालीन भटके समाज को रास्ता दिखलाया। भक्त कबीर जी ने हिंदू-मुस्लिम दोनों को संबोधित कर मिथ्या पक्ष को छुड़ाया तथा सत्य-मार्ग दिखाया। भक्त कबीर जी ने सभी वाह्य आडंबरों का खंडन किया। भक्त कबीर जी की दृष्टि में प्रभु घट-घट वासी और अंतरयामी है :

--कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ ॥
जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ ॥
(पन्ना १३७४)

--कबीर बामनु गुरू है जगत का भगतन का गुरु नाहि ॥
अरझि उरझि कै पचि मूआ चारउ बेदहु माहि ॥
(पन्ना १३७७)

भक्त कबीर जी ईश्वर और जीव की एकता की सत्ता में विश्वास करते हैं। उनकी दृष्टि में एक समय ऐसा आता है जब ईश्वर और जीव दोनों का एकाकार हो जाता है।

भक्त कबीर जी एक सच्चे आध्यात्मिक वैद्य थे, इसलिए आत्मिक रोगों को भली-भांति पहचानते थे। वे आध्यात्मिक भाव तथा आंतरिक रहस्यों से भरपूर थे। अंतरदृष्टि के पास अभिव्यक्ति नहीं अनुभूति है। बाहरी आंखों के पास अभिव्यक्ति है, अनुभूति नहीं। चेतना की जागृति की बात भक्त कबीर जी के शबदों में:

कबीर चरन कमल की मउज को कहि कैसे उनमान ॥
कहिबे कउ सोभा नही देखा ही परवानु ॥
(पन्ना १३७०)

भक्त कबीर जी के आध्यात्मिक चिंतन में, अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता दृष्टिगत होती है। वे कभी आत्मा, परमात्मा, जीवात्मा के संबंध-सेतु को पार कर ब्रह्म की सीमा में प्रविष्ट करते हैं तो कभी जीव रूपी प्रेमिका बन अपने ब्रह्म रूपी प्रियतम को पाने के लिये लालायित हो जाते हैं।

भक्त कबीर जी ने जो कुछ कहा है जन-भाषा में कहा है। उदाहरण के लिये प्रतिदिन काम में आने वाली वस्तुओं को दृष्टांत के रूप में समझाया है। इनकी बाणी में कई क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ। उनकी आध्यात्मिकता और दार्शनिकता की गहराई तक पहुंच पाना कठिन है। भक्त कबीर जी की विचारधारा ने आधुनिक साहित्य को दिशा और आध्यात्मिक जीवन को प्रेरणा दी है।

भक्त कबीर जी की बाणी राग-रागिनियों में बंधी है जिससे भक्त कबीर जी के संगीत ज्ञान का परिचय मिलता है। उनकी भाषा रमते साधुओं की भाषा है। भक्त कबीर जी जीवन के उस सत्य से अवगत कराते हैं जो अंतिम सत्य 'काल' है। फसाद, झगड़े और लड़ाई में हम जीवन, समय और शक्ति बर्बाद कर देते हैं। वहीं इस समय सतसंग, शुद्ध आचरण, शुद्ध व्यवहार परम सत्ता की समीपता का अनुभव करके जीवन-समय सफल कर सकते हैं, अच्छा एवं सुंदर सृजन कर सकते हैं।

व्यक्ति को शरीर के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिये जिससे शरीर स्वस्थ रहे। व्यक्ति को समाज के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिये जिससे समाज में प्रतिष्ठा बनी रहे। व्यक्ति को प्रकृति के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिये कि परमा पिता परमात्मा की कृपा का अनुभव होता रहे।

भक्त कबीर जी एक सौ पच्चीस वर्ष में फैला जीवन बिता कर, संसार को अपने अमूल्य विचार सौंप कर परलोक गमन कर गये। हम आज भी उनकी पावन बाणी से अपने जीवन में सही दिशा ले सकते हैं।

भक्त कबीर जी की निर्गुण भक्ति-भावना

*-स. दमनजीत सिंघ**

मध्यकालीन कबीर भक्ति लहर में भक्त कबीर जी का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भक्त कबीर जी ने भक्ति के क्षेत्र में निर्गुण भक्ति-धारा का प्रतिपादन किया। तत्कालीन साधारण जनता नाथों के हठयोग, वैष्णवों की सरसता, शंकर के मायावाद, सूफियों के प्रेमवाद आदि प्रचलित विभिन्न विचारधाराओं और उपासना-पद्धतियों द्वारा एक तरह से डावांडोल-सी थी। भक्त कबीर जी ने इन्हीं परिस्थितियों में धर्मों के आडंबरपूर्ण आचरणों का खंडन कर एवं प्रत्येक धार्मिक-पद्धति के उपयोगी तत्वों को ग्रहण कर तत्कालीन जन-साधारण का पथ-प्रदर्शन किया और 'निर्गुण पंथ' की स्थापना की। संत-परंपरा के संत गरीबदास ने अपने ग्रंथ 'परख को अंग' में भक्त कबीर जी के बारे में लिखा है :

गरीब सेवक होय कै, उतरे इस पृथ्वी के मांहि।
जीव उधारण जगत गुरु, बार-बार बल जाहिं।

धर्म के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान कराते हुये भक्त कबीर जी ने प्रभु-नाम को ही मुक्ति का एक मात्र साधन बताया है। भक्त कबीर जी ने समस्त जन-साधारण को बार-बार प्रभु-नाम जपने का उपदेश दिया है। वे इसी प्रभु-नाम को अपनी खेतीबाड़ी, माया-पूंजी, बंधु-बांधव और निर्धन की एक मात्र सबसे बड़ी सम्पत्ति समझते हैं।

भक्त कबीर जी ने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा है कि उनका 'राम' तीन लोक से न्यारा है। भक्त कबीर जी कहते हैं कि उनका 'राम' कोई 'अवतार' न होकर अदृश्य शक्ति है जो 'अवतारवाद' या जन्म-मरण से रहित है। वो संसार के कण-कण में समाविष्ट है। वे उसे सत्य-स्वरूपी परमात्मा कहते हैं।

भक्त कबीर जी जीवन भर यही समझाते रहे कि राम 'रूपी' नहीं 'गुण' की संज्ञा है। रूप तो नश्वर है, झूठा है। सत्य है वो 'राम' जो न जन्मता है न मरता है। वे तो उस ब्रह्म का विचार करने की सलाह देते हैं जो कर्त्ता होते हुये भी कर्मों से परे है। घट-घट में वही समाया हुआ है। उसका मर्म कोई नहीं जानता। भक्त कबीर जी के निर्गुण 'राम' को लेकर कई प्रकार की प्रतिक्रियाएं हुईं। भक्त कबीर जी इनसे घबराने वाले नहीं थे। उन्होंने जिस 'राम' से प्रेम किया था उसे वे अच्छी तरह जानते थे। भक्त कबीर जी का 'राम' त्रिगुणातीत है। सत्य, रज, तम तीनों गुण उसकी माया हैं। उसे तो वही पा सकता है जो इन तीनों से ऊपर उठ गया है :

रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ
इह तेरी सभ माइआ ॥
चउथे पद कउ जो नरु चीन्है
तिन्ह ही परम पदु पाइआ ॥ (पन्ना ११२३)

भक्त कबीर जी ने इसी निर्गुण 'राम' अर्थात् प्रभु की भक्ति को अपार भवसागर की एकमात्र नौका कहा है और यहां-वहां सभी को परमात्मा के नाम को जपने की प्रेरणा दी है। इस सारतत्व का जिन्होंने भी स्पर्श पा लिया है वे तर गये।

**८८९, फेज १०, मोहाली-१६००६२*

जून १९८४ ई में गुरुद्वारा साहिबान पर हुए फौजी आक्रमण

-*सिमरजीत सिंघ**

सिक्खों के लिए गुरुद्वारा मात्र पूजा-स्थान ही नहीं बल्कि वह पावन पवित्र स्थान है जहां उनके जागत-जोति दस गुरु साहिबान के पावन आत्मिक स्वरूप श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी शोभायमान होते हैं जो कि उनको प्रतिदिन हुकमनामे के रूप में जीवन-क्षेत्र में जूझने के लिए अगवाई बख्शिश करते हैं। सिक्ख अपने गुरु के हुक्मानुसार जीवन व्यतीत करके ही अपने आप में संतुष्ट प्रतीत करता है। गुरु के द्वार पर उपस्थित होने के बिना हरेक नानक नाम-लेवा सिक्ख अपने आप में अधूरा तथा सूना-सा अनुभव करता है। अपना धर्म-स्थल हरेक धार्मिक मत के धारक को प्रिय लगता है परंतु सिक्ख संगत को तो अपने गुरुद्वारे जान से भी प्रिय हैं। इस हकीकत की पुष्टि समय-समय पर होती रही है। बाबा दीप सिंघ जी तथा उनके साथी सिंघों द्वारा श्री हरिमंदर साहिब का अपमान सुनकर इसका सम्मान पुनः स्थापित करने के लिए जिंदगियां कुर्बान कर देना और स. महताब सिंघ एवं स. सुक्खा सिंघ का श्री हरिमंदर साहिब का अपमान करने वाले मस्से रंगड़ को, राजस्थान से आकर शोधना दो प्रमुख उदाहरण हैं। अन्य उदाहरण भी अनेक हैं। परंतु दुखदायक पक्ष है कि हरेक सरकार राजसी सत्ता तथा ताकत के नशे में गुरुद्वारा साहिबान के लिए जिंदगियां कुर्बान कर देने वाली सिक्ख मानसिकता को तिरस्कृत करके सिक्खों के गुरुद्वारों पर कई प्रकार के बहाने करते हुए अथवा स्पष्ट बल प्रयोग करने से पीछे नहीं रहती रही। राजतंत्रवादी सरकारों या स्पष्टतः कट्टर मजहबी नीति की धारक सरकारों ने तो ऐसा करना ही था परंतु अत्यंत दुखदायक तथ्य यह है कि दुनिया का सब से बड़ा लोकतंत्र होने का दावा करने तथा दम भरने वाली उत्तर स्वतंत्रता काल की भारत की केंद्रीय सरकार ने १९८४ ई में पहले कुछ वर्षो से बड़ी ही शातिरता तथा चुस्ती-चालाकी के साथ परिस्थितियों को मन-चाहे मोड़ दिये और फिर अपनी ही प्रजा बनी सिक्ख कौम के परम पावन केंद्रीय स्थान श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर और इसके साथ समूह पंजाब में ४० के लगभग अन्य गुरुद्वारा साहिबान को एक ही समय सैनिक आक्रमण का शिकार बनाकर कत्लेआम का घटनाक्रम चलाकर अपनी अत्यंत लंपटता एवं धूर्तता तथा कृतघ्नता का प्रदर्शन किया। अट्ठारहवीं सदी के मुगल हाक्मिों और अफगान आक्रमणकारियों की ओर से बरताये घल्लूघारों की ही तर्ज पर सिक्ख कौम का सर्वनाश या नसलकुशी करने के अति मंद-इरादों को इस सामूहिक फौजी आक्रमण द्वारा मूर्तिमान किया गया। इस आक्रमण का सच कई कारणों के होते हुए यकदम सारी दुनिया के सामने प्रक्ट नहीं हो सका। यह धीरे-धीरे प्रक्ट हो रहा है।

हाक्मिों की गिनी-चुनी सोच के अधीन नीला तारा तथा इसके साथ जुड़ी हुई फौजी कार्रवाई के लिए अधिक से अधिक सिक्खी दिखावट वाले जरनैलों की सेवायें प्राप्त की गईं, दुनिया को यह जताने के लिए कि उनके मनों

**संपादक, गुरमति प्रकाश/गुरमति ज्ञान।*

के अंदर सिक्खों के विरुद्ध कोई मंद भावना नहीं है और सिक्खों के बड़े हिस्से उनकी इस कार्रवाई के पक्ष में हैं। २ जून, १९८४ ई तक भारतीय फौज ने जम्मू-कश्मीर से लेकर गंगानगर तक अंतर्राष्ट्रीय सीमा को लगभग पूर्णत: सील कर दिया था। समस्त पंजाब के गांवों-नगरों में फौज की लगभग ७ डिवीजनें तैनात कर दी गई थीं और सैनिकों को पहले ही निश्चित किये गए स्थानों पर पोजीशनें लेने के लिए कह दिया गया था।

समस्त लड़ाई की निरंतर जानकारी रखने के लिए कंट्रोल रूप स्थापित किया गया था जिसकी समूची कमान कथित तौर पर उस समय के बड़े राजसी नेता के पुत्र के हाथ में थी। अरुण नेहरू जो कपूरथला रियासत के एक पुराने रजवाड़े खानदान की संतान है, क्रियाशील था और उप रक्षामंत्री के. पी. सिंह दिओ उसकी सहायता कर रहा था।

जनरल गौरी शंकर को पंजाब के राजपाल का सुरक्षा परामर्शदाता नियुक्त किया गया। लैफ. जनरल कृष्णा स्वामी सुंदर जी को फौजी आक्रमण का समूचा चार्ज सौंपा गया। लैफ. जनरल रणजीत सिंह दिआल को उसका सहायक लगाया था। वर्णननीय है कि आर. ऐस. दिआल कथित तौर पर निरंकारी मंडल का पैरोकार था।

लैफ. जनरल रणजीत सिंघ दिआल को समूची कार्रवाई का मुख्य संचालक बनाया गया और पंजाब के गवर्नर का मुख्य परामर्शदाता नियुक्त किया गया था।

श्री दरबार साहिब, श्री हरिमंदर साहिब

मेजर जनरल कुलदीप सिंह (बराड़) को श्री दरबार साहिब पर आक्रमण की अगवाई का कार्य सौंपा गया था। फौज की पांच पलटनें १०वीं, ११वीं, दूसरी, पहली और १५वी, को श्री दरबार साहिब समूह पर आक्रमण के लिए तैनात किया गया। ये दस्ते फौज के बढिया लड़ाकू दलों में से चयन किये गए थे। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षा प्राप्त कमांडोज की दो बटालियनें थीं जिन्होंने गूढ़े लाल रंग की वर्दियां पहनी हुई थीं और सिरों पर गूढ़े काले रंग के लोह टोप पहने हुए थे ताकि रात के अंधेरे में दिखाई न दें। सभी कमांडोज ने बुलेट परूफ जैकटें पहनी हुई थीं। फौजी आक्रमण १९८४ के दौरान श्री दरबार साहिब श्री हरिमंदर साहिब पर ५०० गोलियों के सुराख लगे जिनमें से ३८० गोलियों के निशान सोने के पत्तरों पर लगे हुए थे। केवल श्री दरबार साहिब की इमारत की क्षति का अनुमान उस समय १०,००,००० रुपये का लगाया गया।

मेजर जनरल जे. ऐस. (जसवाल) को अमृतसर, बटाला तथा गुरदासपुर के अंदर फौजी कार्रवाई का चार्ज संभाला गया था।

चाहे श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर के चारों ओर से नीम फौजी दल और फौजी दलों ने काफी समय पहले ही घेराबंदी आरंभ कर दी थी और आने-जाने वाले व्यक्ति की तलाशी ली जाती थी। सी. आर. पी. ऐफ. के सिपाहियों के द्वारा बिना कारण तंग-परेशान भी किया जाता था। संगत श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी गुरुपर्व मनाने के लिए एकत्र हो रही थी। १ जून, १९८४ को जब समस्त पंजाब में एक समय कर्फ्यू लगा दिया गया और १२:४० पर श्री दरबार साहिब की तरफ गोलीबारी आरंभ कर दी गई। इस गोलीबारी के साथ कई यात्री शहीद हो चुके थे। यह गोलीबारी रात तक चलती रही। फौज की इस कार्रवाई की शिकायत करने के लिए जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा प्रधान, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, स. अबिनाशी सिंघ सचिव, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी,

संत हरचंद सिंघ लौंगोवाल प्रधान, शिरोमणि अकाली दल की तरफ से गवर्नर पंजाब और भारत के राष्ट्रपति के साथ बात करने का प्रयत्न किया गया परंतु फौज की ओर से टेलिफोन लाइनें बंद कर दी गई थीं और किसी के साथ भी संबंध-संपर्क न हो सका। २ जून को और फौज आ गई थी और गोलीबारी होती रही। ३ जून को श्री गुरु अजरन देव जी का शहीदी गुरुपर्व था। फौज के द्वारा प्रात: ६ बजे से १० बजे तक अचानक कर्फ्यू में ढील दे दी गई जिस कारण बहुत-सी संगत श्री दरबार साहिब पहुंच गई। अचानक ही पुन: सख्त पहुंच अपनाते हुए फौज की ओर से कर्फ्यू लगा दिया गया जिस कारण श्री दरबार साहिब के दर्शन-स्नान करने आये बहुत-से श्रद्धालु अंदर रहने के लिए विवश हो गए। ३ जून को सारा पंजाब अचानक फौज के सपुर्द कर दिया गया और फौज को खुली छुट्टी दे दी गई कि वे किसी को भी जान से मार सकते हैं। फौज ने सारे पंजाब में परिवहन पर सख्त प्रतिबंध लगा दिया। श्री अमृतसर की टेलिफोन और बिजली स्पलाई बंद कर दी गई, इसलिए कि अमृतसर के बारे में दुनिया में कुछ भी ज्ञात न हो सके। ४ जून को पुन: फौज की ओर से भारी गोलीबारी होने लगी। श्री हरिमंदर साहिब काम्पलेक्स पर चारों ओर से गोलीबारी हो रही थी। तेजा सिंघ समुंदरी हाल पर बुरी तरह गोलियों की बौछार की जा रही थी। ५ जून को गोलीबारी और तीव्र हो गई। आये यात्रियों के लंगर-पानी का कोई प्रबंध नहीं था हो सका। श्री गुरु रामदास सराय के भीतर पानी वाली टैंकी को फौज ने बम मारकर उड़ा दिया था। गोलीबारी तीव्र होती जा रही थी। फौज घंटा घर वाली ओर से जूतों समेत श्री दरबार साहिब के अंदर प्रवेश हो गई। श्री गुरु रामदास सराय वाली ओर से गेट तोड़कर फौज टैंकों-तोपों से लैस होकर भीतर प्रविष्ट हो गई।

श्री अकाल तख्त साहिब, श्री अमृतसर

५ जून को श्री अकाल तख्त साहिब पर तोपों तथा टैंकों के साथ आक्रमण कर दिया गया। श्री अकाल तख्त साहिब की इमारत आग की लपटों में आ चुकी थी। फौज की ओर से गिरफतार किये गए यात्रियों की कृपाणें (धार्मिक चिन्ह) उतार कर नालियों में फेंक दी गईं। यदि कोई पानी मांगता तो उसको राईफलों के बट्टों के साथ पीटा जाता था। फौज की ओर से बच्चों और बुजुर्गों को भी कोई रिआयत अथवा नरमी नहीं थी की जा रही। एक छोटा बच्चा जिसकी मां गोली लगने से मर चुकी थी, वह 'मम्मी-मम्मी' करता रो रहा था। एक फौजी ने उसको उसकी मरी हुई मां के शव के ऊपर लिटाकर उस पर गोलियों की बौछार कर दी। चारों ओर जहां तक दृष्टि जाती थी शव ही शव दिखाई देते थे। कमरों में से रक्त बह कर बाहर बरामदों में आ रहा था। फौज वाले (सैनिक) कमरों के अंदर-बाहर से गर्नेड फेंक रहे थे और दिल दहला देने वाली चीख-पुकार चारों ओर सुनाई दे रही थी। बाद में इन कमरों में से शव उठा कर शमशान घाट में ले जाकर बिना किसी को बताये फौज की निगरानी में संस्कार कर दिया गया।

इस फौजी आक्रमण के मध्य श्री दरबार साहिब काम्पलेक्स में स्थित पावन स्थान श्री अकाल तख्त साहिब का २ करोड़, श्री दरबार साहिब श्री हरिमंदर साहिब का १० लाख, दर्शनी डिओढी का २० लाख, तोशाखाना में पड़ी अमूल्य वस्तुओं का २०० करोड़, सिक्ख रेफरैन्ज लाइब्रेरी का ५० लाख, केंद्रीय सिक्ख अजायब घर का १० लाख, परिक्रमा का २ करोड़, लंगर हाल श्री गुरु रामदास हाल का १५ लाख, अकाल

रैस्ट हाऊस का १० लाख, श्री गुरु रामदास सराय का १० करोड़, तेजा सिंघ समुंदरी हाल का ५० करोड़, श्री गुरु नानक निवास का २० करोड़, बारांदरी की इमारत का ५० लाख रुपये, गुरुद्वारा मळजी साहिब दीवान हाल का २५ लाख रुपये का अनुमानित नुकसान होने का विवरण एकत्र किया गया।

गुरुद्वारा बाबा अटल राय जी

गुरुद्वारा बाबा अटल राय जी की नौ-मंजिला इमारत गुरुद्वारा माता कौलां जी के पास स्थित है। यह स्थान छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के साहिबजादा बाबा अटल राय जी की स्मृति में सुशोभित है। जून १९८४ ई में हुए आक्रमण के दौरान इस गुरुद्वारा साहिब पर भी फौज की गोलियों एवं बमों के साथ लगी आग के साथ अनुमानित ५ करोड़ की क्षति हुई। इस गुरुद्वारा साहिब के साथ लगते रिहाइशी कवार्टरों में भी फौज के द्वारा जमकर लूट-मार की गई और गोलियों-बमों के साथ क्षति पहुंचाई गई, जिसका अनुमान माहिरों द्वारा अनुमानित ५० लाख रुपये लगाया गया। इन गुरुद्वारों के साथ लगते पवित्र सरोवरों की भी भारी तोड़-फोड़ की गई जिससे लगभग दो करोड़ की क्षति होने का अनुमान लगाया गया।

बुंगा रामगढ़िया

श्री दरबार साहिब काम्पलेक्स में मिस्लों के समय की सुंदर इमारत बुंगा रामगढ़िया सुशोभित है। इस इमारत के ऊंचे बुर्ज दूर से ही दिखाई पड़ते हैं। इन बुर्जों पर फौज का कहर जम कर टूटा और ऐतिहासिक बुंगे तहस-नहस कर दिये गये जिस पर लगे गोलों और गोलियों के निशान अपनी वार्ता आप ही बता रहे हैं। इस ऐतिहासिक इमारत की लगभग ५० लाख रुपये की अनुमानित क्षति रिकार्ड की गई। सिंधियों के बुंगे का २० लाख रुपये का अनुमानित नुकसान हुआ।

शहीद मार्केट की दुकानों पर श्री दरबार साहिब और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुलाजिमों के ६७ रिहाइशी कवार्टरों पर भी फौज ने तलाशी लेने के बहाने तोड़-फोड़ तथा लूट-मार की, जिसकी क्षति का अनुमान लगभग ४० लाख रुपये रिकार्ड किया गया।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुक्य कार्यालय की, फौज ने बहुत बुरी तरह तोड़-फोड़ की। कोई एक भी वस्तु ऐसी नहीं छोड़ी जो पुन: प्रयोग में लाई जा सकती। कार्यालय में पड़ी लाखों रूपये की स्टेश्नरी, फर्नीचर, धर्म प्रचार की गाड़ियां आदि आग लगाकर फूंक दी गईं। इस क्षति की अनुमानित कीमत १ करोड़ ३७ लाख रुपये रिकार्ड की गई।

श्री दरबार साहिब, तरनतारन

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने दिल्ली-लाहौर शाह रोड पर तरनतारन नगर की स्थापना की और श्री दरबार साहिब एवं पवित्र सरोवर का निर्माण कराया। महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने राज-काल में श्री दरबार साहिब तरनतारन की ऐतिहासिक इमारत को नया रूप देकर सुंदर मीनाकारी कराई। श्री दरबार साहिब तरनतारन की बहुत सुंदर इमारत विशाल सरोवर के किनारे सुशोभित है। श्री दरबार साहिब तरनतारन, अमृतसर नगर से लगभग २४ किलोमीटर दूर प्रमुख धार्मिक केंद्र है। १६ जून, १९८४ ई की रात ८.३० बजे गुरुद्वारा साहिब को चारों ओर से घेराव डाल दिया गया। गुरुद्वारा साहिब के मुख्य गेट वाली ओर से फौज ने स्पीकर द्वारा अनाउंसमेंट करनी आरंभ कर दी कि जो भी कोई गुरुद्वारा साहिब के अंदर है, वह हाथ खड़े करके बाहर आ जाए। गुरुद्वारा साहिब के अंदर विद्यमान सभी संगत हाथ खड़े करके बाहर आ गई।

केवल शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुलाजिम तथा कुछ कार सेवा वाले सेवादार अंदर रह गए। उस समय गुरुद्वारा साहिब के मैनेजर स. गुरदीप सिंघ भी गुरुद्वारा साहिब के अंदर उपस्थित थे। रात को किसी को भी बाहर से अंदर और अंदर से बाहर नहीं जाने दिया गया। अमृत वेला को मैनेजर साहिब ने गुरुद्वारा साहिब की सफाई की सेवा सेवादारों से ही करा कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश किया। फौज ने १७ जून को प्रातः होने से पूर्व अमृत वेला को चार बजे लोगों में दहशत फैलाने के लिए पहली गोली चलाई जिससे सेवादार दरशन सिंघ बहुत ही मुश्किल के साथ बचा। गोली उसके बहुत करीब से गुजरी थी। इसके बाद चारों ओर से ही कई गोलियां फौज ने चलाईं। इस गोलीबारी के मध्य ही मीनार के नजदीक एक व्यक्ति को गोली लगी जो मौके पर ही दम तोड़ गया। १८ जून को फौज ने डेढ दर्जन के करीब सेवादार तथा कुछ कार-सेवा वाले सेवादारों को गिरफतार करके उनकी बुरी तरह मारपीट की। उन सभी की बाहें पीछे बांधकर उनको कई घण्टे बिठाये रखा और फौज उनको गंदियां गालियां निकाल कर अपमानित करती रही। बाद में फौज इन सभी को मिलटरी कैंप में ले गई। इनमें से कई सेवादार कई-कई महीने जेल काटने के बाद रिहा हुए।

फौज का घेराव लगभग चार दिनों तक रहा। फौज ने समस्त गुरुद्वारा साहिब की तलाशी ली परंतु उनको कोई भी हथियार आदि नहीं मिला। फौज का उद्देश्य तो केवल सिक्खों के धार्मिक स्थानों का अपमान करना और उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना ही था।

गुरुद्वारा जन्म-स्थान बाबा बुड्ढा साहिब जी, कत्थूनंगल

यह गुरुद्वारा साहिब श्री अमृतसर १८ किलोमीटर की दूरी पर बटाला रोड पर गांव कत्थूनंगल में विद्यमान है। इस गुरुद्वारा साहिब का निर्माण कार-सेवा द्वारा बाबा प्रेम सिंघ जी ने कई वर्षों के परिश्रम और संगतों के सहयोग के साथ बाबा बुड्ढा साहिब जी की स्मृति में बहुत श्रद्धा भावना के साथ कराई थी। जून १९८४ में फौज ने अचानक ही प्रातः गुरुद्वारा जन्म-स्थान बाबा बुड्ढा साहिब जी का घेराव करके चारों और टैंक तथा तोपें बीड़ दीं। इस प्रकार प्रतीत हो रहा था कि फौज गुरुद्वारा साहिब की पूरी इमारत को तहस-नहस कर देगी। चारों ओर दहशत का माहौल था। फौजी अफसर और फौज जूतों समेत गुरुद्वारा साहिब की पवित्र इमारत के अंदर दाखिल होकर खरूद मचा रही थी। फौज बाबा प्रेम सिंघ को गुरुद्वारा साहिब के अंदर आतंकवादियों के छुपे होने के बारे में कहकर धमकाने लगी। बाबा जी ने बड़ी नम्रता के साथ फौज के अधिकारियों को बताया कि गुरुद्वारा साहिब में उपस्थित नवयुवक सेवादार हैं। इनमें से कोई भी खाड़कू अथवा जुझारू सिंघ नहीं है। फौज ने बाबा जी की एक बात न सुनी और अपनी स्वैच्छा से सारे गुरुद्वारा साहिब के अंदर तलाशी करने लग पड़ी। जब कोई भी आपत्तिजनक वस्तु न मिली तो सायंकाल को फौज को खाली हाथ वापस लौटना पड़ा। परंतु फौज द्वारा जूतों समेत और अन्य कई ढंगों के साथ गुरु-घर के किये अपमान के साथ संगतों की भावनाओं को गहरा आघात पहुंचा और उनके हृदय अत्यंत दुखी हुए।

गुरुद्वारा बाउली साहिब, गोइंदवाल साहिब

६ जून, १९८४ बुधवार वाले दिन प्रातः के लगभग ९ बजे गुरुद्वारा साहिब के मैनेजर स. बली सिंघ अपने नित्यनियम की तरह जब

कार्यालय पहुंचे तो वहां सात-आठ व्यक्ति जैसे स. बलबीर सिंघ, डॉ. लाभ सिंघ, भाई रणजीत सिंघ, मीत मैनेजर स. गुरदिआल सिंघ के पास बैठे हुए थे जो रात को अमृतसर की तरफ से आ रही बम धमाकों की स्वर-ध्वनियों और कर्फ्यू के बारे में बातें करके चिंतातुर हो रहे थे तो उस समय एकदम दर्शनी डिओढी वाली ओर से मिलटरी की गाड़ियों की स्वर-ध्वनियां आनी शुरू हो गईं और देखते ही देखते पलों में फौज ने गुरुद्वारा साहिब को चारों ओर से घेर कर राईफलें तान लीं। चारों तरफ माहौल दहशतजदा हो गया। फौजियों ने गुरुद्वारा साहिब को निशाना बना कर लाईट मशीनगनें बीड़ लीं। मैनेजर साहिब कार्यालय से बाहर आकर फौज के कमांडर के पास गये तो उस फौजी कमांडर ने गुरुद्वारा साहिब के भीतर आतंकवादी छुपे हुए होने की बात करते हुए गुरुद्वारा साहिब की तलाशी लेने के बारे में कहा। मैनेजर साहिब ने गुरुद्वारा साहिब के भीतर किसी भी प्रकार के आपत्तिजनक व्यक्ति होने से इंकार किया परंतु फिर भी फौज ने बड़े ही करूर ढंग से गुरुद्वारा साहिब की तलाशी ली। इस दौरान फौज का व्यवहार बहुत ही घटिया था जिस कारण गुरुद्वारा साहिबान की मर्यादा में विघन पड़ा जिससे संगतों के हृदय पीड़ित होकर तार-तार हुए।

तख्त श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो (बठिंडा)

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अनंदपुर के घेराव में से निकल कर रास्ते में अनेकों कठिनाइयों का सामना करते हुए जनवरी १७०६ ई में तलवंडी साबो की धरती को अपने चरणों के साथ निवाजा। इस पवित्र स्थान पर गुरु जी ने भाई मनी सिंघ जी से पावन श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की बाणी अंकित करके संपूर्णता बख्शी। इस पावन ऐतिहासिक स्थान को सिक्खों का पांचवां तख्त होने का सम्मान-सत्कार प्राप्त है। जून १९८४ में यहां भी फौज की ओर से घोर अपमान करके कहर बरताया गया।

गुरुद्वारा श्री गुरु तेग बहादर साहिब, जींद

जींद सिक्खों की प्रसिद्ध रियासत का प्रधान शहर रहा है। इस शहर को पहले पातशाह श्री गुरु नानक देव जी और नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी का पवित्र चरण-स्पर्श प्राप्त है जिनकी स्मृति में पवित्र स्थान जींद में सुशोभित हैं। जून १९८४ ई के फौजी आक्रमण के दौरान ये स्थान भी फौजी कहर से नहीं बच सके।

गुरुद्वारा श्री गुरु तेग बहादर साहिब, धमतान

धमतान पंजाब के जिला संगरूर की सीमा के साथ लगता हरियाणा प्रांत का गांव है। इस गांव के उत्तर की ओर श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का चरण-स्पर्श प्राप्त स्थान गुरुद्वारा श्री गुरु तेग बहादर साहिब सुशोभित है। गुरु साहिब बांगर से आगरा को जाते हुए इस स्थान पर ठहरे थे। यहां के निवासी दग्गो जिमींदार ने गुरु जी की बहुत श्रद्धा-भावना के साथ सेवा की थी। इस स्थान पर गुरु जी ने भाई मीहां को नगारा, निशान साहिब तथा लंगर चलाने के लिए लोह की बख्शिश की थी जिससे मीहां-शाही सांप्रदाय चली थी।

महाराजा करम सिंघ ने गुरु जी के आगमन की स्मृति में गुरुद्वारा साहिब की इमारत तैयार कराई। यहां जून १९८४ ई में फौज की ओर से घेराबंदी करके गुरु-घर की तलाशी ली गई और काफी अमूल्य सामान साथ ले गई।

गुरुद्वारा श्री नानकिआणा साहिब, संगरूर

श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के पावन चरण-स्पर्श प्राप्त स्थान गुरुद्वारा श्री नानकिआणा साहिब मालवा के प्रसिद्ध शहर संगरूर के साथ लगते गांव में सुशोभित है। श्री गुरु नानक देव जी पूरब की उदासी के समय यहां आये थे और भाई मरदाना जी उनके साथ थे।

छठे पातशाह श्री हरिगोबिंद साहिब जी अकोई साहिब से यहां आये थे। श्री गुरु नानक देव जी की स्मृति में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने एक थड़े का निर्माण कराया। बाद में राजा रघूबीर सिंघ ने गुरुद्वारा साहिब की नयी इमारत बनवाई।

जून १९८४ ई में इस गुरुद्वारा साहिब की इमारत को घेराव डालकर भीतर काम करते सभी मुलाजिमों को बंदी बना लिया गया, जिनको बाद में रिहा किया गया।

गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, मुक्तसर

गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, मुक्तसर दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पावन चरण-स्पर्श प्राप्त वह स्थान है जहां गुरु साहिब ने पीछा कर रही मुगल फौजों का डटकर सामना किया था और इस युद्ध के मध्य श्री अनंदपुर साहिब से बेदावा देकर चले गए सिंघों ने मुगल फौजों का डटकर सामना करते हुए शहीदियां प्राप्त कीं और गुरु साहिब से मुक्त होने का वरदान प्राप्त किया था। ३ जून, १९८४ ई को भारतीय फौजों ने इस गुरुद्वारा साहिब को चारों ओर से घेराव डालकर गोलीबारी की। इस दिन पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी दिवस था। कर्फ्यू में छूट मिलने के कारण संगतें गुरु जी का शहीदी दिवस मनाने के लिए गुरुद्वारा साहिब में एकत्र होनी शुरू हो गई थीं। संगतों के अतिरिक्त गुरुद्वारा साहिब में ड्यूटी पर तैनात मुलाजिम और गुरुद्वारा साहिब की हदूद के अंदर रहते मुख्य ग्रंथी और अन्य मुलाजिमों के परिवार भी थे। गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब फौजी कार्रवाई का मुख्य केंद्र था। समस्त गुरुद्वारा साहिब के इर्द-गिर्द एक ऊंची दीवार बनी हुई थी जिसमें से आठ दरवाजे संगतों के भीतर-बाहर जाने के लिए बने हुए थे।

४ जून को फौज ने गुरुद्वारा साहिब पर आक्रमण कर दिया। तीन बजे के लगभग लाऊड स्पीकर पर फौज की तरफ से सूचना दी गई कि जो भी कोई गुरुद्वारा साहिब की इमारत में मौजूद है वह बाहर आ जाए नहीं तो देखते ही गोली मार दी जाएगी। पौने चार बजे के लगभग चार नंबर गेट से गुरुद्वारा तंबू साहिब की तरफ सरोवर की दूसरी ओर गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब की दिशा में तोप के गोले चलने आरंभ हो गए। एक गोला अटारी में लगा जिससे चारों ओर आग ही आग फैल गई और अटारी गिर गई। बारादरी और टुट्टी गंढी में भी गोले लगने आरंभ हो गए। निशान साहिब को सहारा देने के लिए बनाई गई अटारी गोलियों से ध्वस्त हो गई। एक-दो गोले ऐतिहासिक बरगद अथवा वट वृक्ष में भी लगे जिससे वह धरती पर गिर गया। गोलो की आग इतनी तीव्र थी कि लोहे के मोटे गार्डर भी पिघल गए।

(क्रमशः)
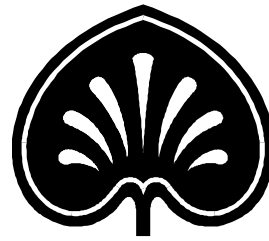
सरहिंद विजय का विवरण एवं दृश्य चित्रण

*-स. जसबीर सिंघ**

सन् १७०८ ई के प्रारंभ में महाराष्ट्र प्रांत के नांदेड़ नगर में गोदावरी नदी के तट पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने माधोदास वैरागी नामक साधु को गफलत की नींद से जागृत कर लोहपुरुष में परिवर्तित कर दिया तथा उसे सिंघों की सेना का जत्थेदार (सेनानायक) नियुक्त करके पंजाब में मुगलों की सलतनत के जुल्मो-सितम को समाप्त करने का आदेश दिया। इस वैरागी साधु ने गुरु-दीक्षा प्राप्त कर गुरबख्श सिंघ नाम धारण किया और बाबा बंदा सिंघ बहादर कहलाने लगा अर्थात् गुरदेव का प्रतिनिधि बन कर पंजाब पहुंचा। उसके पास गुरदेव के हुक्मनामे थे जो समस्त सिक्ख जगत के नाम थे। हुक्म था, जहां-कहीं भी खालसा है तुरंत हमारे सच्चे सिक्ख बाबा बंदा सिंघ के नेतृत्व में संगठित हो जाए। बस, फिर क्या था, गुरु के बंदे के पास देश के कोने-कोने से खालसा अस्त्रों-शस्त्रों सहित बड़ी संख्या में पहुंचने लगा। जब गुरु के बंदे ने महसूस किया कि अब मेरे पास सिक्ख सेना युद्ध करने के लिए पर्याप्त है तो उसने गुरदेव द्वारा दिये गये लक्ष्य के अनुसार विजय-घोष का बिगुल बजा दिया।

बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सर्वप्रथम समाणा क्षेत्र विजय किया, तत्पश्चात सढौरा इत्यादि। जब उसने अनुभव किया कि अब मेरे पास सैन्य बल इस योग्य है कि मैं सरहिंद के नवाब वजीर खान को धूल चटा सकता हूं तो उसने वजीर खान को ललकारा और गुरदेव के अल्प आयु के निर्दोष छोटे साहिबजादों की हत्या का हिसाब चुकता करने के लिए जा पहुंचा। चपड़चिड़ी के रणक्षेत्र में जालिम को हराकर फतह प्राप्त की। इससे पूर्व कुछ अन्य स्थानों पर विजय प्राप्त की गई।

पंजाब के माझा क्षेत्र के सिंघों का शेर खान से युद्ध : अब हम उन सिंघों का वर्णन करते हैं जो कीरतपुर साहिब में एकत्र हो रहे थे। इस समाचार ने कि सिंघ सरहिंद की ओर बढ़ने का कार्यक्रम बना रहे हैं, वजीर खान की नींद हराम कर दी। उसने सिंघों के दोनों दलों को मिलने से रोकने के लिए समस्त शक्ति लगा दी। मलेरकोटले के नवाब शेर मुहम्मद खान को कीरतपुर साहिब वाले सिक्खों को आगे बढ़ने से रोकने के लिए भेजा। शेर मुहम्मद खान के पास अपनी सैनिक टुकड़ियां भी थीं। नवाब के साथ उसका भाई खिजर खान तथा दो भतीजे खान वली व मुहम्मद बख्श भी थे। उस समय दूसरी ओर सिक्खों की संख्या इनकी तुलना में बहुत कम थी। उनके पास कोई अच्छे शस्त्र-अस्त्र भी न थे परंतु उनका मनोबल बहुत ऊंचा था। रोपड़ के पास दोनों सेनाओं का सामना हुआ। सिंघ बहुत बहादुरी से लड़े परन्तु संध्या के समय ऐसा अनुभव हो रहा था कि जैसे शेर मुहम्मद खान का पक्ष भारी है। रात्रि में सिंघों का एक दल माझा क्षेत्र से आ पहुंचा। बस, फिर क्या था, दूसरे दिन सूर्य उदय होते ही सिंघों ने खिजर खान पर आक्रमण कर दिया। सिंघ

**C/o* सुंदर ग्लास एंड प्लाईवुड्स, २३५, २५२, सेक्टर ३४-सी, चंडीगढ़। मो: ९९८८१-६०४८४*

आगे ही बढ़ते गये। दोनों सेनाएं इतनी समीप हो गयीं कि हाथों-हाथ युद्ध आरंभ हो गया। इस समय सिंघों ने खूब तेग चलाई। खिजर खान ने सिक्खों को हथियार फेंक देने के लिए ललकारा, तभी उसकी छाती में एक गोली लगी, जिसने उसको सदैव के लिए मौत की गोद में सुला दिया। पठान, खिजर खान को गिरते हुए देखकर भाग उठे। शेर मुहम्मद खान स्वयं आगे बढ़ा। उसके भतीजे भी साथ थे, जो अपने पिता के शव को उठाना चाहते थे, परन्तु सिंघों ने उन दोनों को भी खत्म कर दिया। शेर मुहम्मद खान भी घायल हो गया। मुगल सेनाएं सिर पर पैर रखकर भाग उठीं। इस प्रकार मैदान सिंघों के हाथ आया।

वजीर खान की तैयारी : सरहिंद के सूबेदार वजीर खान ने खालसा दल के जत्थेदार बाबा बंदा सिंघ बहादर से निपटने के लिए युद्ध की तैयारियों में सभी संभव साधन जुटा दिये। शाही सेना ने दिल्ली व लाहौर से कुमक मंगवाई। नई भर्ती खोल दी गई। अपने सज्जन, मित्र रजवाड़ों को सहायता के लिए बुला लिया और जेहाद का नारा लगा कर गाजियों के झुंड इकट्ठे कर लिए। उसने गोला-बारूद से गोदाम भर लिए। बड़ी संख्या में तोपें और हाथी इकट्ठे कर लिये गये। इतिहासकारों का अनुमान है कि इन सब लड़ने वालों की संख्या एक लाख के करीब हो गई थी। वो किसी प्रकार भी पराजित होने का खतरा नहीं लेना चाहता था। अत: उसने दल खालसा की संख्या और शक्ति को जांचने के उपाय किये। उसने सुच्चा नंद के भतीजे को एक हजार हिंदू सैनिक देकर बाबा बंदा सिंघ बहादर के पास भेजा और उसे छल-कपट करने का अभिनय करने को कहा कि "वह मुगलों के अत्याचारों से पीड़ित है, अत: वह वहां से भागकर आपकी शरण में आया है।" इसके पीछे योजना यह थी कि जैसे ही सुच्चा नंद का भतीजा उनका विश्वासपात्र बन जायेगा ठीक युद्ध के समय, गर्म रणक्षेत्र से उसकी सेना भागकर वापस शाही सेना में आ मिलेगी और दल खालसा के भेद बतायेगी। इस प्रकार उन पर विजय प्राप्त करना सहज हो जायेगा।

दल खालसा का योजनाबद्ध कार्यक्रम : दल खालसा के जत्थेदार बाबा बंदा सिंघ बहादर को उनके सहायक परामर्श देने लगे कि हमें और देरी नहीं करनी चाहिए, जल्दी ही सरहिंद पर आक्रमण कर देना चाहिए। इस पर बाबा बंदा सिंघ बहादर ने विचार दिया कि हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं और माझा क्षेत्र के सिंघों के पहुंचने तक स्थानीय सिक्खों को प्रेरित करके शस्त्र उठवाने का प्रयास करते हैं, जिससे हमारी संख्या शत्रु के मुकाबले काफी हो जाये। बाबा बंदा सिंघ बहादर का विचार उत्तम था कि यह क्षेत्र गुरु-घर के श्रद्धालुओं का था। जैसे ही खालसा फौज ने सेना भर्ती अभियान चलाया आस-पास के लोग गुरु साहिब के हुक्मनामों के कारण और बाबा बंदा सिंघ बहादर के चुम्बकीय आकर्षण के कारण, गुरदेव के नन्हें लालों की शहीदी का आक्रोष मन में लिए खालसा फौज के नायक बाबा बंदा सिंघ बहादर के नेतृत्व में इकट्ठे हो गये। कुछ ही दिनों में बाबा बंदा सिंघ बहादर के जवानों की संख्या चालीस हजार से सत्तर हजार हो गई। वास्तव में लोग बाबा बंदा सिंघ बहादर को गुरदेव द्वारा भेजा सैनिक अगुआ समझते हुए अपने को समर्पित करने लगे। बाबा बंदा सिंघ बहादर अपना सैन्य बल लेकर सरहिंद की ओर बढ़ने लगा। यहीं उसे सुच्चा नंद का भतीजा एक हजार सिपाहियों के साथ मिला और उसने खालसा फौज से शरण

मांगी। इस पर खालसा सेना ने बहुत गंभीरता से विचार किया। खालसा सेना का मत था कि वह शत्रु पक्ष का व्यक्ति है, केवल छल-कपट की राजनीति के कारण हमारे पास पहुंचा है, इसलिए इसे कदाचित शरण नहीं देनी चाहिए। एक विचार यह भी था कि इसे वापस लौटाने से शत्रु की शक्ति बढ़ेगी। यदि इसे निष्क्रिय कर के अपने पास रखा जाये तो अच्छा है। अत: इसे सबसे पिछली पंक्ति में रखा जाना चाहिए ताकि किसी प्रकार की क्षति न पहुंचा सके।

दल खालसा को आशा थी कि बनूड़ क्षेत्र में पहुंचने पर वजीर खान की सेना से आमना-सामना हो जाएगा परंतु वजीर खान की सेना और उसके सहयोगी शेर मुहम्मद खान रोपड़ के पास कीरतपुर से आये माझा क्षेत्र के सिंघों से जूझ रहा था। उसका ध्येय था कि यहां से सिक्ख लोग खालसा फौज से न मिल सकें। परन्तु वह इस लक्ष्य को प्राप्त न कर सका। वहां पर एक भाई और दो भतीजे मरवा कर वह घायल अवस्था में मलेरकोटला लौट आया।

खालसा फौज की शक्ति का सामना बनूड़ का फौजदार न कर सका और जल्दी ही परास्त हो गया। इस प्रकार बनूड़ क्षेत्र खालसा फौज के कब्जे में आ गया। यहां से बहुत बड़ी संख्या में फौज को अस्त्र-शस्त्र प्राप्त हुए। अब खालसा फौज ने निर्णय लिया कि पहले माझा क्षेत्र से आ रहे सिंघों को मिल लिया जाये। वे रोपड़ की ओर प्रस्थान कर गये। दोनों दलों का खरड़ ग्राम के निकट चपड़चिड़ी नामक गांव में मिलन हुआ। दोनों ओर से खुशी में जयकारे बुलंद किये गये : *'जो बोले सो निहाल, सति श्री अकाल'।*

चपड़चिड़ी का ऐतिहासिक युद्ध : सरहिंद के सूबेदार वजीर खान को सूचना मिली कि बाबा बंदा सिंघ बहादर के नेतृत्व में खालसा फौज और माझा क्षेत्र के सिंघों का काफिला आपस में चपड़चिड़ी नामक गांव में मिलने में सफल हो गया है और वे सरहिंद की ओर आगे बढ़ने वाले हैं तो वह अपने नगर की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सिक्खों से लोहा लेने अपना सैन्य बल लेकर चपड़चिड़ी की ओर बढ़ने लगा। खालसा फौज ने वहीं मोर्चाबंदी प्रारंभ कर दी। वजीर खान की सेना ने आगे हाथी रखे, उसके पीछे ऊंट, फिर घुड़सवार और उसके पीछे तोपें व सिपाही रखे। अंत में हैदरी झंडे के नीचे, गाजी जेहाद का नारा लगाते हुए चले आ रहे थे। अनुमानत: इन सबकी संख्या एक लाख के लगभग थी। सरहिंद नगर की चपड़चिड़ी गांव से दूरी लगभग २० मील है।

इधर खालसा फौज के जत्थेदार बाबा बंदा सिंघ बहादर ने अपनी सेना का पुनर्गठन करके अपने सहायक भाई फतह सिंघ, भाई करम सिंघ, भाई धरम सिंघ और भाई आली सिंघ को मालवा क्षेत्र की सेना को विभाजित करके उप-जत्थेदार बनाया। माझा क्षेत्र की सेना की बाबा बिनोद सिंघ और भाई बाज सिंघ की अध्यक्षता में मोर्चाबंदी करवा दी। एक विशेष सैनिक टुकड़ी अपने पास संकट काल के लिए भाई इंदर सिंघ की अध्यक्षता में सुरक्षित रख ली और स्वयं एक टीले (टेकरी) पर चढ़ कर युद्ध को प्रत्यक्ष देखकर उचित निर्णय लेकर आदेश देने लगे। खालसा फौज के पास जो छ: छोटे आकार की तोपें थीं उनको भूमिगत मोर्चों में स्थित करके भाई शाहबाज सिंघ को तोपखाने का सरदार नियुक्त किया। इन तोपों को चलाने के लिए बुंदेलखंड के विशेषज्ञ व्यक्तियों को कार्यभार सौंपा गया। तोपचियों का मुख्य लक्ष्य शत्रु-सेना की तोपों को खदेड़ना और हाथियों को आगे न

बढ़ने देना था। सबसे पीछे नौसिखिए जवान रखे गये और उसके पीछे सुच्चा नंद के भतीजे गंडा मल के एक हजार जवान थे।

खालसा फौज ने 'जो बोले सो निहाल, सति श्री अकाल' जयघोष करके छोटी तोपों के मुंह खोल दिये। ये तोपें भूमिगत अदृश्य मोर्चों में थीं। अंत इनकी मार ने शाही सेना की अगली पंक्ति उड़ा दी। बस, फिर क्या था, शाही सेना भी अपनी असंख्य बड़ी तोपों का प्रयोग करने लगी। खालसा फौज वृक्षों की आड़ में हो गयी। जैसे ही शत्रु सेना की तोपों की स्थिति स्पष्ट हुई शाहबाज सिंघ के तोपचियों ने अपने अचूक निशानों से शत्रु सेना की तोपों को सदा के लिए शांत करने का अभियान आरंभ कर दिया। जल्दी ही गोलाबारी बहुत धीमी पड़ गई, क्योंकि शत्रु सेना के अधिकांश तोपची मारे जा चुके थे। अब मुगल सेना ने हाथियों की कतार को सामने किया परंतु खालसा फौज ने अपनी निर्धारित नीति के अंतर्गत वही स्थिति रख कर हाथियों पर तोप के गोले बरसाए। इससे हाथियों में भगदड़ मच गई। इस बात का लाभ उठाते हुए घुड़सवार सिंघ शत्रु खेमे में घुसने में सफल हो गये और हाथियों की कतार टूट गई। बस, फिर क्या था? सिंघों ने लंबे समय से हृदय में शाही सेना के दांत खट्टे करने की जो भावना पाल रखी थी, उस भावना को ज्वाला बनाकर वे शत्रु पर टूट पड़े। घमासान का युद्ध हुआ। शाही सेना केवल संख्या के बल पर विजय की आशा लेकर लड़ रही थी। उनमें से कोई भी मरना नहीं चाहता था, जबकि खालसा फौज विजय और शहीदी दोनों की कामना रखती थी। जल्दी ही मुगल फौजें केवल बचाव की लड़ाई लड़ने लगीं। देखते ही देखते चारों ओर शवों के ढेर दिखाई देने लगे। चारों तरफ 'मारो-मारो' की आवाजें ही आ रही थीं। घायल जवान 'पानी-पानी' चिल्ला रहे थे और दो घंटों की गर्मी ने रणक्षेत्र तपा दिया था। जैसे-जैसे दोपहर होती गई जेहादियों का दम टूटने लगा, उन्हें जेहाद का नारा धोखा लगने लगा। इस प्रकार गाजी धीरे-धीरे पीछे खिसकने लगे। वे इतने हताश हुए कि मध्य दोपहर तक सभी भाग खड़े हुए। खालसा फौज का मनोबल बहुत उच्च स्तर पर था। वे मरना तो जानते थे, पीछे हटना नहीं। जब खालसा फौज मुगलों पर भारी पड़ रही थी तभी गद्दार सुच्चानंद के भतीजे गंडा मल ने अपने साथियों के साथ भागना शुरू कर दिया।

फिर से घमासान युद्ध आरंभ हो गया। मुगलों की आशा के विपरीत सिंघों की ताजादम कुमक ने रणक्षेत्र का पासा ही पलट दिया। सिंघ फिर से आगे बढ़ने लगे। इस प्रकार युद्ध लड़ते हुए दोपहर ढलने लगी। जो मुगल कुछ देर में अपनी जीत के अंदाजे लगा रहे थे वे भूख-प्यास की मार से पीछे हटने लगे। वे जानते थे कि इस बार की हार से उनके हाथ से सरहिंद तो जायेगा ही; साथ में मृत्यु भी निश्चित है। अत: वे अपना अंतिम दांव भी लगाना चाहते थे। इस बार वजीर खान ने अपना सब कुछ दांव पर लगाकर फौज को ललकारा और कहा, "चलो गाजियो, आगे बढ़ो और मंडरा रहे खतरे को हमेशा के लिए खत्म कर दो।" इस हल्लाशेरी से युद्ध एक बार फिर भड़क उठा। इस बार भाई बाज सिंघ बाबा बंदा सिंघ बहादर के पास पहुंचा और उसने बार-बार स्थिति पलटने की बात बताई। इस बार बाबा बंदा सिंघ बहादर स्वयं उठे और शेष संकटकालीन सेना लेकर युद्ध-भूमि में उतर गये। उन्हें देखकर खालसा फौज में नई स्फूर्ति

आ गई । फिर से घमासान युद्ध होने लगा। इस समय सूर्यास्त होने में कुछ समय शेष था। उप-जत्थेदार भाई बाज सिंघ व भाई फतह सिंघ ने वजीर खान के हाथी को घेर लिया। सभी जानते थे कि युद्ध का परिणाम आखिरी दांव में छिपा हुआ है, अत: दोनों ओर के सैनिक कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते थे। सभी सैनिक एक-दूसरे से गुत्थम-गुत्था होकर विजयी होने की चाहत रखते थे।

देखते ही देखते वजीर खान मारा गया। शत्रु सेना के कुछ ही क्षणों में पैर उखड़ गये और वो भागने लगी। इस समय का सिंघों ने भरपूर लाभ उठाया। उन्होंने तुरंत मलेरकोटला के नवाब शेर मुहम्मद खान तथा ख्वाजा अली को घेर लिया। वे अकेले पड़ गये थे। उनकी सेना भागने में ही अपना भला समझ रही थी। इन दोनों को भी भाई बाज सिंघ व भाई फतह सिंघ ने रणभूमि में मार गिराया। इनके मरते ही समस्त मुगल सेना जान बचाती हुई सरहिंद की ओर भाग गई। सिंघों ने उनका पीछा किया किन्तु जत्थेदार ने उन्हें तुरंत वापस आने का आदेश भेजा। उनका विचार था कि हमें समय की नजाकत को ध्यान में रखते हुए पहले अपने घायलों की सेवा-संभाल करनी चाहिए। ऐसा ही हुआ। शहीद सिंघों का अंतिम संस्कार किया गया।

खालसा फौज को यह ऐतिहासिक विजय १२ मई, १७१० को प्राप्त हुई। इस समय दल की कुल संख्या ७० हजार के लगभग थी। इस युद्ध में ३० हजार सिंघ शहीद हुए और लगभग २० हजार घायल हुए।

बाबा बंदा सिंघ बहादर ने खालसा फौज का जल्दी से पुनर्गठन किया और सभी को सम्बोधन करके कुछ आदेश सुनाये :

१. कोई भी सैनिक किसी निर्दोष को पीड़ित नहीं करेगा।

२. कोई भी महिलाओं अथवा बच्चों पर अत्याचार व शोषण नहीं करेगा। केवल दुष्ट का दमन करना है और गरीब की रक्षा करनी है। किसी भी धार्मिक स्थल को क्षति नहीं पहुंचानी है।

३. हमारा लक्ष्य केवल अपराधियों को दंडित करना तथा खालसा फौज को सुदृढ़ करने के लिए यथाशक्ति उपाय है।

१४ मई, १७१० को खालसा फौज ने सरहिंद नगर पर आक्रमण कर दिया। इस बीच वजीर खान का बेटा समुंद खान सपरिवार बहुत-सा धन लेकर दिल्ली भाग गया। उसे देखते हुए नगर के कई अमीरों ने ऐसा ही किया, क्योंकि उन्हें पता था कि अब मुकाबला हो नहीं सकता, अत: भागने में ही भलाई है। सभी जानते थे कि खालसा फौज अब अवश्य ही सरहिंद पर कब्जा करेगी।

इस प्रकार खालसा फौज के सरहिंद पहुंचने से पहले ही नगर में 'भागो-भागो' हो रही थी। खालसा फौज को सरहिंद में प्रवेश करने में एक छोटी-सी झड़प करनी पड़ी। बस, फिर आगे का मैदान साफ था। किले में बची-खुची सेना आकी होकर बैठी थी। उनके पास अन्य कोई चारा नहीं था। खालसा फौज ने हथियाई हुई तोपों से वे किले पर गोले दागे। घंटे भर के प्रयत्न से वे किले में प्रवेश का मार्ग बनाने में सफल हो गये। फिर हुई शाही सैनिकों से हाथों-हाथ लड़ाई। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने कह दिया, "अड़े सो झड़े" के वाक्य अनुसार खालसा फौज को कार्य करना चाहिए। इस प्रकार बहुत-से मुगल सिपाही मारे गये। जिन्होंने हथियार फेंक कर खालसा फौज के आगे पराजय स्वीकार कर ली उनको बंदी बना लिया गया।

बाबा बंदा सिंघ बहादर

*-बीबी जसपाल कौर**

कश्मीर में पुंछ रियासत के राजौरी क्षेत्र में राजपूत परिवार में जन्मे लछमण देव को शस्त्र-संचालन, घोड़े की सवारी आदि गुण विरासत में मिले। परिवर्तन अवश्यम्भावी है। इसके अनुसार जीवन में घटी एक छोटी-सी घटना ने लछमण देव को वैरागी बना दिया।

एक बार जब आप शिकार खेल रहे थे आपके द्वारा छोड़े तीर ने एक हिरनी को जख्मी किया जो कि गर्भवती थी। आप ने जब हिरनी के बच्चों को तड़प-तड़प कर मरते देखा तभी से आपको संसार से उपरामता हो गयी।

शिकार की इस घटना पर चिंतन-मनन करते हुए एक दिन आपको जानकी प्रसाद नाम का एक साधु मिला। उसके उपदेश सुनकर १६ वर्ष की उम्र में घर-बार छोड़कर राजौरी की बजाय कसूर के पास रामथम्मन गांव के एक डेरे में रहने लगे और नाम मिला 'माधोदास'। यहां की साधु मंडली के साथ आप नासिक तथा बाद में गोदावरी के किनारे नांदेड़ नामक स्थान के पास जंगल में रहने लगे। इसी दौरान जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी नांदेड़ पहुंचे तो गुरु जी के उपदेश ने माधोदास के जीवन को एकदम बदल दिया। माधोदास श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से अमृत-पान कर 'बंदा सिंघ' बन गये और बाबा बंदा सिंघ बहादर के नाम से ख्याति प्राप्त की।

बाबा बंदा सिंघ बहादर जिस समय दक्षिण से रवाना हुए तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उन्हें कमांडर के रूप में एक नगारा, एक निशान साहिब और पांच तीर दिये। साथ ही अपने पांच प्यारे बाबा बिनोद सिंघ, भाई काहन सिंघ, भाई बाज सिंघ, भाई दया सिंघ और भाई राम सिंघ तथा बीस अन्य सिंघों को भी उनके साथ पंजाब भेजा जिसके द्वारा उन्होंने सिक्खों से अपील की थी कि वे मुगल हकूमत और सरहिंद के फौजदार वजीर खां, जुल्म के स्थल सरहिंद तथा सुच्चानंद जैसे लोगों के अत्याचार को मिटाने में सहयोग दें और उनकी सेना में संगठित हों। इसी अपील में छोटे साहिबजादों की शहीदी और हजारों सिक्खों पर किये जाने वाले अमानवीय अत्याचारों की ओर भी संकेत किया गया।

कुछ महीने बाबा बंदा सिंघ बहादर को अपनी शक्ति बढ़ाने में लगे। जब धन तथा जन रूपी शक्ति बढ़ गयी तब आप ने समाणा, जहां का हाकिम सैयद जलालुदीन था, जिसने श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीद करने में सहयोग दिया था, पर चढ़ाई करने के लिये कूच कर दिया।

समाणा से सीधे घुड़ाम, ठसका, शाहबाद और मुस्तफाबाद की ओर कूच करते हुए सिंघों का दल कपूरी पहुंचा जहां का फौजदार कदमुदीन था, जिसने अनेक हिंदू स्त्रियों के सतीत्व को नष्ट किया। यहां पर कदमुदीन के दुराचार के केन्द्र महलों को आग लगा दी गयी। सढौरा का

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

**अध्यापिका, श्री गुरु नानक देव सी. से. स्कूल, आदर्श नगर, राजा पार्क, जयपुर (राजस्थान)-३०२००४*

अद्वितीय योद्धा तथा अमर शहीद बाबा बंदा सिंघ बहादर

*-डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई**

हमारे भारतवर्ष ने बहुत लम्बे समय तक गुलामी का दंश झेला है। इस गुलामी को आजादी में परिवर्तित करने के लिए अनेक वीर योद्धाओं ने अपने शीश अर्पण किये हैं तथा अपने लहू से चिराग जलाये हैं। आजादी की लंबी और खूनी लड़ाई में परम आदरणीय सिक्ख गुरु साहिबान के उच्च बलिदान और निर्णायक संघर्ष को कौन भूल सकता है? महान सिक्ख गुरु साहिबान ने स्वयं तो प्राणोत्सर्ग किया ही था साथ ही दूसरों को भी प्रेरित कर आजादी का परवाना बना दिया था। इन महान गुरु साहिबान से प्रेरित होकर एवं आशीर्वाद पाकर आजादी हेतु कुर्बान होने वाले वीरों में महान शूरवीर बाबा बंदा सिंघ बहादर अपना उल्लेखनीय नाम एवं स्थान रखते हैं। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से प्रेरित होकर उन्हीं के रास्ते पर चलते हुए अपने आप को कुर्बान कर दिया।

'बंदा' का अर्थ है 'दास'। गुरु जी से मिलने के बाद उन्होंने निश्चय किया कि वे केवल उन्हीं (गुरु गोबिंद सिंघ जी) के बंदे (दास) बन कर रहेंगे।

वास्तविकता यह है कि बाबा जी का पहले का जीवन चाहे कुछ भी रहा हो परन्तु एक योद्धा के रूप में उन्हें श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ही तैयार किया था। गुरु जी उसे निवृत्ति मार्ग से पुन: प्रवृत्ति मार्ग पर ले आये थे क्योंकि अन्तरयामी गुरु जी यह जानते थे कि इनमें आत्मिक साहस और युद्ध कौशल के गुण हैं जिनका सदुपयोग किया जाना चाहिए।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी बाबा बंदा सिंघ बहादर को लौकिकता से ऊपर उठाकर उससे कोई महान कार्य की अपेक्षा रखते थे। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने गुरु जी के उपदेशों का अक्षरश: पालन करते हुए जुल्म और जालिमों का नाश करने के लिए अनेक युद्ध लड़े व अनेक मोर्चों पर शत्रुओं के दांत भी खट्टे किये। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादर को सिक्खों का राजनीतिक नेतृत्व प्रदान किया और वे पीड़ित प्रजा के लिए एक आशा की किरण के रूप में सामने आये।

बाबा बंदा सिंघ बहादर एक वीर सेनापति और युद्ध-नीति के प्रकांड ज्ञाता थे। उनकी निपुणता का ही परिणाम था कि इन्होंने सरहिंद और मध्य पंजाब पर पूरा अधिकार किया। सहारनपुर और उसके समीप के क्षेत्रों पर अधिकार कर जलालुदीन के दस हजार साथियों को खत्म करके श्री गुरु तेग बहादर जी को शहीद करने वाले जल्लाद को खत्म किया। बाबा बंदा सिंघ बहादर शत्रुओं को पराजित करता रहा और धर्म की पताका फहराता रहा। उसने फतेहाबाद, कैथल, भिवानी, पानीपत सहित दिल्ली के पश्चिम और उत्तर क्षेत्र में अपना शासन कायम किया था।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ के पश्चात उन्हीं की

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

**असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी), दयानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार (हरियाणा)-१२५००१, मो: ९८१२१-०८२५५*

शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ

*-स. गुरबख्श सिंघ प्यासा**

१८वीं सदी के आरंभ में महाराजा रणजीत सिंघ का उदय किसी चमत्कार से कम नहीं। अपनी दूर-दृष्टि, अद्‌भुत शौर्य और न्याय-प्रियता के कारण लासानी जरनैल और गरीबों के हमदर्द के रूप में अमर हो गये।

कहने को आप एक सिक्ख महाराजा थे परन्तु अपने व्यवहार से आप ने राज्य को सांझीवालता का प्रतीक बना दिया और (आप) सब हिंदुओं, मुसलमानों एवं सिक्खों के हरमन-प्यारे हो गये। पंजाब के लोगों की ओर से दिया गया शेर-ए-पंजाब का खिताब उनके प्यार का प्रतीक है।

जहां आपके दरबार में फकीर अजीज-उ-दीन जैसे विदेश मंत्री थे वहां दीवान मोहकम चंद, सरदार शाम सिंघ अटारी, अकाली फूला सिंघ और सरदार हरी सिंघ नलूआ जैसे अद्वितीय जरनैल भी थे। अंग्रेज, फ्रांसीसी, जर्मन एवं रूसी जरनैल आपकी फौज में नौकरी करना गर्व की बात समझते थे।

आप शुक्रचक्किया मिसल के जत्थेदार सरदार महां सिंघ के इकलौते पुत्र थे। आपका जन्म १३ नवंबर, १७८० ई को बीबी राज कौर की कोख से हुआ। जन्म के समय आपका नाम बुध सिंघ रखा गया था। परन्तु चट्ठों से रसूलपुर में हुए युद्ध में विजय प्राप्त करके लौटे सरदार महां सिंघ ने विजय के उपलक्ष्य में अपने पुत्र का नाम बदल कर 'रणजीत सिंघ' रख दिया, जिसे उन्होंने अपने जीवन में पूर्ण रूप में सार्थक किया। चेचक की बीमारी से बचपन में ही आप की एक आंख जाती रही। आप अधिक शिक्षा प्राप्त न कर सके तथा आप गुरमुखी के अक्षर-ज्ञान से आगे नहीं बढ़ सके।

सन् १७९० में अपने पिता की मृत्यु के समय आपकी आयु मात्र दस वर्ष की थी। 'शुक्रचक्किया मिसल' को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए १६ वर्ष की आयु में आपका पहला विवाह 'कन्हैया मिसल' की महारानी सदा कौर सुपत्नी स्वर्गीय सरदार गुरबख्श सिंघ की पुत्री से हुआ। इससे दोनों मिसलों की सम्मिलित शक्ति बढ़ गयी। उपरोक्त उद्देश्य के तहत कालांतर में आपका दूसरा विवाह 'नकई मिसल' के जत्थेदार सरदार ज्ञान सिंघ की बहन बीबी राज कौर के साथ हुआ, जिससे आपका दबदबा और भी बढ़ गया।

महारानी सदा कौर की सूझ-बूझ भरी अगवाई से आपकी प्रत्येक कठिनाई हल होती गयी। १७९९ ई में लाहौर के शाही किले पर खालसे का झंडा फहरा दिया गया और सन् १८०१ ई में आपको महाराजा के पद पर आसीन कर दिया गया। १८०२ ई में महारानी सदा कौर और बाबा साहिब सिंघ के कूटनीतिक यत्नों से बिना किसी रक्तपात के अमृतसर को खालसा राज्य में मिला लिया गया।

महान पंजाब बनाने के लिए आपको निरंतर तीस वर्षों तक युद्ध करने पड़े। सन् १८३४ ई में आपके राज्य की सीमाएं पंच-नद से लद्दाख और सतलुज से खैबर तक फैली हुई थीं।

आप ने अपने राज्याभिषेक के समय दरबार को सम्बोधित करते हुए गुरु महाराज को ही 'सच्चा पातशाह' (बादशाह) कहा और अपने आप को खालसा और प्रजा का सेवक। अपने आप को महाराजा के स्थान पर 'सरकार' और राज्य को

*२२, प्रभु पार्क सोसायटी, ओल्ड छानी रोड, वडोदरा-२ (गुजरात), मो: ०९९१३०-५४३२३

'सरकार खालसा' कहने का अनुरोध किया एवं मोहर अथवा सिक्के महाराजा रणजीत सिंघ के नाम पर न होकर नानकशाही कहलाए।

सारा राज्य चार सूबों (लाहौर, मुलतान, कशमीर और पेशावर) में बांटा गया था और अलग-अलग सूबेदारों के अधीन था। केन्द्रीय न्यायालय लाहौर में था, जहां महाराजा स्वयं सुनवाई करते थे।

जहां आपने गुरुद्वारों की सेवा की वहां मंदिरों और मस्जिदों को भी मुक्त-हस्त से अनुदान दिए। आप ललित कलाओं के कद्रदान थे। पंजाबी का प्रसिद्ध कवि 'हाशिम' आपका दरबारी कवि था। आप अपनी प्रजा का अपनी संतान की तरह ध्यान रखते थे, जिसकी साक्षी हैं यत्र-तत्र फैली हुई दंत-कथाएं, जिनकी अनुगूंज लंबे समय से सुनाई देती आ रही है।

सन् १८३९ ई में महाराजा का देहावसान हो गया। चारों ओर शोक व्याप्त हो गया। कोई उन्हें प्रजा-पालक के रूप में रोता था तो कोई महादानी के रूप में याद करता था। किसी ने उनके जाने को पंजाब के 'विधवा' होने की संज्ञा दी।

उनकी प्रबंधकीय कुशलता का और क्या प्रमाण हो सकता है कि उनके लगभग चार दशकों (४० साल) के राज्य-काल में एक भी व्यक्ति को फांसी की सजा नहीं दी गयी और जब तक जीवित रहे अंग्रेजों की पंजाब की ओर आंख उठाने की हिम्मत नहीं हुई।

एक मनुष्य होने के नाते आप में भी मानवीय दुर्बलताएं थीं। उनमें से एक थी डोगरा बंधुओं (राजा धिआन सिंघ और गुलाब सिंघ) में अत्यधिक विश्वास की भावना। इनकी कुटिल चालों के प्रति अकाली फूला सिंघ और सरदार हरी सिंघ नलूआ द्वारा समय-समय पर सावधान करने के बावजूद भी उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया था, जिसका खमियाजा उनकी संतान को भुगतना पड़ा। डोगरा बंधुओं की बेवफाई और सरदारों की आपसी रंजिश के कारण दस वर्ष में ही बिसात उलट गई और मौके की ताड़ में बैठे अंग्रेज पंजाब पर काबिज हो गये। देखते ही देखते एक-एक करके उनके सात पुत्रों में से छः पुत्र षड़यंत्रों का शिकार हो गए।

सबसे छोटा पुत्र महाराजा दलीप सिंघ, जो उस समय अबोध ही था, को बगावत का दोषी मानकर सन् १८४९ ई में राजगद्दी से उतार कर, पहले पंजाब से यू. पी. में भेज दिया गया और फिर ईसाई बनाकर सन् १८५४ ई में, जब वे मात्र १६ वर्ष के थे, इंग्लैंड भेज दिया गया। एक ऐसा लोकप्रिय महाराजा जिसे मरते समय अपने देश की मिट्टी भी नसीब न हुई और उन्होंने पैरिस में अपनी आखिरी सांस ली।

महाराजा रणजीत सिंघ की सबसे छोटी रानी, महारानी जिंदां अर्थात् महाराजा दलीप सिंघ की मां वर्षों भिन्न-भिन्न कारागारों में बंदी होकर भी अंग्रेजों की नींद हराम करती रहीं। अंग्रेजों की क्रूरता की पराकाष्ठता देखिए, मां को पुत्र से मिलने की तब अनुमति दी गयी जब मां लगभग दृष्टिहीन हो चुकी थी और वह अद्वितीय मां! उन शेष पलों में पुत्र के मन में पुनः सिक्खी की भावना रोपने अर्थात् सिक्खी स्वरूप पुनः धारण करने एवं देश-प्रेम की लौ जगा गयी।

चाहे यह सब इतिहास के पन्नों का अंग बन चुका है परन्तु यदि आज भी महाराजा रणजीत सिंघ के वैभव के छोटे-से चिन्ह के दर्शन करने हों और अंग्रेजों की कुटिलता को महसूस करना हो तो इंग्लैंड की महारानी के ताज में सुशोभित कोहिनूर हीरे का जिक्र ही पर्याप्त है, जो बीते कल को साकार करने में सक्षम है और आज भी विजयी-भाव से दमक रहा है जैसे महाराजा रणजीत सिंघ और उनके आदर्श राज्य की झलक दे रहा हो।

महाराजा रणजीत सिंघ का आदर्श राज्य

-स. सुरजीत सिंघ*

महाराजा रणजीत सिंघ जो महाबली, महादानी, महायोद्धा, कुशल प्रशासक, सर्वश्रेष्ठ प्रजापालक, न्यायविद एवं इतने उदारदिल थे कि एक दिन घोड़े पर सवार होकर निरीक्षण पर जा रहे थे तो एकाएक फेंका हुआ कंकड़ गलती से आपको आ लगा जो बेर तोड़ने के लिए बच्चे बेरी के पेड़ को मार रहे थे। तुरत-फुरत आप ने दरबारियों को कहा कि बच्चों को बिलकुल भी तंग न किया जाए क्योंकि कंकर लगने से बेरी का पेड़ इनको बेर देता है। किन्तु यह कंकड़ तो बेरी के पेड़ के स्थान पर मुझे लगा है, इसलिए मुझसे तो इनको बेर के स्थान पर सोने की मोहरें मिलनी चाहिएं। सोने की मोहरें पाकर बच्चे खुशी-खुशी लौट गये।

दयालुता, सेवाभाव के प्रसंग तो महाराजा रणजीत सिंघ के प्रतिदिन के जीवन के अंग ही बन चुके थे। इसी प्रकार एक गरीब वृद्ध ब्राह्मण महिला अपने घर से खाना बनाने वाला लोहे का तवा अपने साथ महाराजा के दरबार में ले आयी और चुपके से महाराजा के कपड़ों से रगड़ने लग गयी। महाराजा ने वृद्ध महिला से इसका कारण पूछा, जवाब में महिला ने कहा, "सुना है कि राजा पारस हुआ करतें हैं और पारस से लोहा रगड़ने पर वह सोना बन जाता है। अपनी दरिद्रता मिटाने के लिए मैंने भी ऐसा ही किया। किन्तु यह तो फिर भी लोहा ही रहा!" वृद्धा पर करुणाभरी दृष्टि डालते हुए तुरंत महाराजा बोल पड़े, "नहीं माता! देखो, यह सोने का बन चुका है।" महाराजा के आदेश से लोहे के तवे के तोल के बराबर सोना वृद्ध महिला को देकर सम्मानपूर्वक घर भेज दिया गया।

शेरे-पंजाब तो वाकई ऐतिहासिक सच्चे पारस ही थे। ब्रिटिश साम्राज्य की आपकी सीमाओं के पास फटकने तक की भी हिम्मत नहीं होती थी। आपने हरिद्वार, काशी, ज्वालामुखी, कांगड़ा, कटास आदि अनेकानेक हिन्दू मंदिरों एवं धर्मशालाओं का जीर्णोद्धार एवं निर्माण कराया और अन्य आर्थिक सहायता प्रदान कर विश्वनाथ मंदिर को स्वर्णपत्र से आच्छादित कराया। अनेकानेक मस्जिदों-मजारों, जिसमें लाहौर की भिखारी शाह की सुनहरी मस्जिद, हजरत की मजार, मुलतान में पीर बहावल की मजार इत्यादि प्रमुख हैं, का पुनर्उद्धार एवं निर्माण कराया तथा आर्थिक सहायता प्रदान की। श्री हरिमंदर साहिब, श्री अकाल तख्त साहिब, श्री पटना साहिब एवं श्री हजूर साहिब नांदेड़ इत्यादि अनेक ऐतिहासिक गुरुद्वारों एवं धर्म-स्थानों की सेवा कराई तथा आर्थिक सहायता प्रदान की। महाराजा ने *"मानस की जात सबै एकै पहिचानबो"* के निर्मल लक्ष्य को सदैव सामने रखा।

शेरे-पंजाब की अपने सेना के जरनैलों को सख्त हिदायत थी कि जीते हुए इलाकों में किसी धर्म, धर्म-स्थल, धर्म-पुस्तक का अपमान न होने पाए, लूट-मार न हो और प्रत्येक धर्म की महिला को पूर्ण सम्मान मिले। आपके राज्य में सबको पूरी-पूरी आज़ादी थी और लोक-कल्याण ही राज्य का मुख्य उद्देश्य था। महाराजा सबके हमदर्द थे और स्वयं को 'सिंघ साहिब' कहलवा कर बहुत प्रसन्न हुआ करते थे। राज्य प्रबंधन के लिए मंत्री, अधिकारी अथवा कर्मचारी का चयन बिना किसी भेदभाव के केवल योग्यता और कार्यदक्षता के आधार पर ही होता था, जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, यूरोपी इत्यादि सभी को जनता की सेवा करने का दायित्व मिला हुआ था। 'गुरु नानक-गुरु गोबिंद सिंघ नानकशाही सिक्का' होता था।

*****५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान)

शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ

*-डॉ मनमोहन सिंघ**

प्रो प्यारा सिंघ पदम ने लिखा है कि "सिक्ख धर्म के प्रसार का जमाना एक विचित्र पेड़ की भांति था जिसके ऊपर महाबली रणजीत सिंघ 'शेर-ए-पंजाब' खूबसूरत फूल पैदा हुआ, जिसकी सुगंध ने भारत में ही नहीं बल्कि एशिया व यूरोप में भी खालसा पंथ व पंजाब की खूशबू पहुंचायी।" 'एलेगजेंडर बर्नज में लिखा है कि "मैं किसी भी भारतीय से इतना प्रभावित नहीं हुआ जितना कि महाराजा रणजीत सिंघ से हुआ। वे अपनी शक्ति का प्रयोग इस प्रकार करते थे कि कमाल कर देते थे। यह विशेषता मैंने किसी दूसरे में नहीं देखी।" आस्ट्रियाई सैलानी बैरन हयूगाला ने उनकी सेना की शक्ति व जौहर देखने के बाद अपने सफरनामे में लिखा है कि "उनकी सैनिक सूझबूझ व शस्त्र-विद्या देखकर मैं निष्पक्ष यह कह सकता हूं कि ये विदेशी फौजों के ऊपर अवश्य विजय प्राप्त कर सकते हैं।" अंग्रेज फौज का अफसर 'कैप्टन मरे' लिखता है कि "मैं महाराजा की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता और महाराजा रणजीत सिंघ दुनिया का नक्शा बदलने वालों में से एक था। अगर भारत में अंग्रेज शासक न आते तो वे दिल्ली से आगे तक अपनी सरकार की सीमा बढ़ा सकते थे।" एक अन्य अंग्रेज कहता है कि "वे सारे एशिया को जीत सकते थे इतनी योग्यता उनके पास थी, परन्तु चारों तरफ से अंग्रेजों ने उन्हें घेर रखा था।"

इन सभी तथ्यों को जानने से पता चलता है कि महाराजा रणजीत सिंघ दूरदर्शी रणनीतिज्ञ, राजनीतिज्ञ, साहसी, बाहुबली व बहादुर वीर थे।

महाराजा रणजीत सिंघ का जन्म २ नवंबर, १७८० ई में सरदार महां सिंघ के घर हुआ था। बालक रणजीत सिंघ का पालन-पोषण बहुत खुशियों से किया गया। आपके पिता का अधिकतर समय लड़ाइयों में ही व्यतीत हुआ था जिस कारण वे रणजीत सिंघ को पढ़ाने में असफल रहे। महाराजा रणजीत सिंघ स्वयं पढ़ाई में ज्यादा रुचि नहीं रखते थे। दूसरा कारण उनके न पढ़ने का यह था कि जब उनकी उम्र ६ साल ही थी तो उनको चेचक निकल आयी, जिसके कारण उनकी जिंदगी खतरे में पड़ गयी थी। पिता जी ने बहुत इलाज करवाया। महाराजा रणजीत सिंघ ठीक तो हो गये परन्तु बीमारी के कारण उनकी एक आंख खराब हो गई। प्रत्येक आदमी कहने लगा था कि महाराजा सभी को एक आंख से देखता है। ऐसा कहने के पीछे यह दर्शाने का मनोभाव है कि वे समदृष्टि के धारक थे अथवा उनके दिलो-दिमाग में धार्मिक या सांप्रदायिक पक्ष से तनिक भी बिखराव न था। उनके व्यक्तित्व का इतना प्रभाव था कि एक बार एक अंग्रेज ने उनके मंत्री से पूछा कि "महाराजा की कौन-सी आंख खराब है?" मंत्री ने उत्तर दिया कि "मुझे इस बारे में कुछ नहीं पता, क्योंकि मैंने कभी भी अपनी आंख उठाकर महाराजा के

**८८९, फेस-१०, मोहाली-१६००६२*

चेहरे की तरफ नहीं देखा।"

सरदार महां सिंघ १७९२ में कुछ समय बीमार रहने के बाद स्वर्गवासी हो गये। इसके बाद महाराजा रणजीत सिंघ 'शुकरचक्किया' मिसल के मालिक बन गये तथा 'गुजरांवाला' को अपनी राजधानी बनाया। उनकी शादी 'घनईया' मिसल के सरदार जय सिंघ की पोती महताब कौर से हुई। इस प्रकार दो मिसलों के आपसी संबंध से उनकी शक्ति बढ़ गयी जिससे दूसरी मिसलें भी इनके प्रभाव में आ गयीं। महाराजा रणजीत सिंघ के समय में अफगानिस्तानी जब भी लड़ाई चाहते थे तभी वे पंजाब पर चढ़ाई करके दिल्ली तक पहुंच जाते थे, परंतु महाराजा की रणनीति से उनका रास्ता बिलकुल बंद हो गया था।

महाराजा रणजीत सिंघ का विचार था कि एक बहुत बड़ा पंजाब बनाया जाये तथा सभी रियासतों को अपने राज्य में लिया जाये। वे यह भी चाहते थे कि उनके घोड़े दिल्ली पार यमुना का पानी पीयें, पर लुधियाना व पूर्वी दिशा की रियासतों ने साथ न दिया, जिस कारण उन्हें १८०९ में अंग्रेजों के साथ संधि करनी पड़ी तथा दरिया सतलुज को ही पंजाब की सीमा मानना पड़ा।

महाराजा का इतना बोलबाला था कि अंग्रेजों का दिल्ली पर अधिकार होने के बावजूद भी वे पंजाब पर हमला न कर सके। पंजाब लगभग १०० साल तक ही अंग्रेजों की गुलामी में रहा, जबकि समूचा भारत २५० साल तक अंग्रेजों का गुलाम रहा। महाराजा की फौज में फ्रांसीसी व इटालवी जरनैल भी थे, जिससे पता लगता है कि संसार में उनकी प्रसिद्धि थी तथा वे फौजी माहिरों के कद्रदान भी थे।

जसवंत राव हुलकर का राज्य अंग्रेजों ने छीन लिया था। महाराजा ने उसका राज्य वापस दिलवाने में सहायता की। महाराजा ने अंग्रेजों को केवल संदेश ही भेजा था कि ऐसी बे-इंसाफी नहीं होनी चाहिए। अंग्रेज महाराजा से डरते थे, अतः उन्होंने हुलकर की रियासत वापस कर दी। इस प्रकार भारत की दूसरी रियासतों के राजाओं को भी महाराजा की शक्ति का पता लग गया तथा कई रियासतों के राजाओं की तरफ से महाराजा को तोहफे भेंट किये गये। १८३८ में अंग्रेजों ने महाराजा से फौजी सहायता मांगी तथा लार्ड आकलेडा ने उनके साथ मुलाकात भी की। शाह सुजाह को दूसरे ग्रुप में निकाल दिया जो कि गद्दी के लिये उम्मीदवार था। शाह सुजाह की सहायता अंग्रेजों तथा महाराजा ने की। काबुल के ऊपर फौजी हमला किया गया तथा शाह सुजाह को गद्दी दिलवाकर फौजें वापस आ गयीं। इस प्रकार अफगानिस्तान में यह बात फैल गयी कि काबुल का बादशाह आगे से वही बन सकेगा जिसे लाहौर दरबार की सहायता मिलेगी।

महाराजा बहादुर और दूरदर्शी थे। उन्होंने अंग्रेजों की बढ़ती हुई शक्ति देखकर अनुमान लगा लिया था कि जिस प्रकार अंग्रेज शक्ति व राज्य-क्षेत्र बढ़ा रहे हैं, वह दिन दूर नहीं जब सिक्खों को भी अंग्रेजों से टक्कर लेनी पड़ेगी, इसी लिये उन्होंने अपनी फौज को संगठित करने के लिये पश्चिमी तरीका अपनाया। सारी सेना को चार भागों में बांटा गया, पैदल सेना, तोपखाना, घुड़सवार सेना तथा जागीरदारी, सुरक्षित सेना। पैदल सेना पश्चिमी आधार पर तैयार की गयी, क्योंकि भारत में अंग्रेजों तथा फ्रांसीसियों के आने से यह बात स्पष्ट हो गई थी कि घुड़सवार फौज का हमला बेशक कितना भी तेज क्यों न हो परन्तु वे पैदल फौज की

लगातार गोलियों की बौछार के सामने नहीं ठहर सकते। प्रत्येक पैदल सिपाही को एक बंदूक, शमशीर व संगीन दी जाती थी। इसके अलावा प्रत्येक सैनिक के पास सिक्के की पचास गोलियां तथा पेटी के साथ लटकती छाबे की कुप्पी में जरूरी बारूद भी होता था। ये शस्त्र लाहौर में बनाये जाते थे। सेना को पश्चिमी ढंग से सिखाने के लिये अनेक अंग्रेज व फ्रांसीसी अधिकारी सेना में भर्ती किये गये। पैदल सैनिकों की गिनती २७,००० तक पहुंच गई थी।

महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने तोपखाने को बहुत ही शक्तिशाली बनाया तथा उसमें अलग-अलग आकारों की तोपें बनायी गयीं। 'विलयम अजदरन' के अनुसार, "उस समय देशी रियासतों में शक्तिशाली तोपखाना कहीं भी नहीं था। महाराजा के अंतिम दिनों तक ४७० तोपें तथा ४,५३५ गोलंदाज थे, जो कि गोला चलाने में इतने प्रवीण हो गये थे कि अंग्रेज भी उनका लोहा मानने लगे थे। उनकी घुड़सवार सेना प्रति बहुत ही रूचि थी तथा घोड़ों से उन्हें बहुत प्यार था। वे प्रत्येक साल ३०,००० रुपये के घोड़े खरीदते थे। उनका रसाला एशिया में सबसे सुंदर व चुस्त था। जागीरदार पैदल फौज जोकि बहुत समय से चल रही थी, वह महाराजा ने भी रखी, जिन्हें महाराजा की ओर से जागीरें दी जाती थीं। उनके लिये यह जरूरी था कि बाद में वे अपनी फौजें भेजें। जागीरदारों के अधीन सैनिकों की गिनती लगभग ३५०० थी। किले की सुरक्षा के लिये भी किले के अंदर फौज रहती थी।

महाराजा रणजीत सिंघ बहुत ही दयालु थे। एक बार उनके राज्य में अकाल पड़ गया तो महाराजा ने ऐलान किया कि जिसे अनाज की जरूरत है वह शाही अन्नभंडार में से अनाज ले जाये। एक बूढ़ा व्यक्ति अनाज लेने आया। उससे अनाज की गांठ उठायी न गयी। महाराजा जी वहां अपना वेश बदल कर उपस्थित थे। उन्होंने वो गांठ उस बूढ़े के घर स्वयं अपने सिर पर उठाकर पहुंचायी। इसी प्रकार एक बार कुछ लड़के बेरी से बेर तोड़ रहे थे और महाराजा भी उधर से ही गुजर रहे थे। एक लड़के के द्वारा बेरी को मारा गया कंकड़ उनको आकर लगा। महाराजा ने सारे लड़कों को अपने पास बुलाकर पूछा, "क्या कर रहे हो?" लड़के घबरा गये तथा डरते-डरते उन्होंने कहा, "हम बेर तोड़ रहे हैं।" इस पर महाराजा ने अपने अधिकारियों को कहा कि बेरी को कंकड़ मारने से इन्हें बेर मिलते है तो यह कंकड़ हमें मारने से भी इनको कुछ मिलना चाहिये।" अत: उन लड़कों को पैसे दिये गये।

महाराजा धर्म-निरपेक्ष शासक थे। उनकी सेना में प्रत्येक धर्म के जवान थे तथा वे उच्च पदों पर आसीन थे। महाराजा सभी धर्मों के स्थानों की संभाल तथा रखरखाव के लिए वित्तीय सहायता देते थे।

इस महान पुरुष का देहांत १८३९ ई में हुआ। इसके बाद अंग्रेजों ने बड़ी गहरी चाल से अंत को १८४९ में पंजाब को अंग्रेज राज्य का भाग बना ही लिया। 'शाह मोहम्मद' ने महाराजा रणजीत सिंघ का इस संसार में न होना ही सिक्ख सेनाओं की हार का कारण माना है।

मूल-मंत्र व्याख्या

-डिंपल रानी*

सृष्टि के प्रारंभ से ही मानव उस परम तत्व की किसी न किसी रूप में उपासना करता आया है। समय के साथ-साथ उस परम सत्ता की कल्पना में परिवर्तन आता गया, जिसके परिणामस्वरूप उसके (प्रभु के) स्वरूप सम्बंधी विभिन्न धारणाओं का उद्‌भव हुआ।

प्रभु निरूपण की एक दीर्घ एवं प्राचीन परंपरा है परंतु इसके पश्चात श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार उस निर्गुण प्रभु को वास्तव में वही जान सकता है जो उस परमात्मा जितना ही महान तथा श्रेष्ठ है :

एवडु ऊचा होवै कोइ ॥
तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥ (पन्ना ५)

उस अव्यक्त निर्गुण प्रभु के स्वरूप का निरूपण गुरु जी द्वारा मूल-मंत्र के रूप में किया गया, जिसकी व्याख्या विभिन्न टीकाकारों द्वारा अपने-अपने ढंग से अपनी बौद्धिक योग्यता के आधार पर की गई। समस्त गुरबाणी का सारभूत माना जाने वाला मूल-मंत्र इस प्रकार है :

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥
(पन्ना १)

प्रस्तुत आलेख में मूल-मंत्र की सर्वसम्मत व्याख्या करने का मेरा विनम्र प्रयास कुछ इस प्रकार है :

ੴ : गुरु जी के अनुसार परमात्मा से ही सबकी उत्पत्ति हुई है तथा उसी से ही पर्वतों, युगों और धर्म-ग्रंथों की रचना हुई है। इसके द्वारा ही मानव का उद्धार होता है। यही सम्पूर्ण जगत अर्थात् तीनों लोकों का सार है :

ओअंकारि ब्रहमा उतपति ॥
ओअंकारु कीआ जिनि चिति ॥
ओअंकारि सैल जुग भए ॥
ओअंकारि बेद निरमए ॥
ओअंकारि सबदि उधरे ॥
ओअंकारि गुरमुखि तरे ॥
ओनम अखर सुणहु बीचारु ॥
ओनम अखरु त्रिभवण सारु ॥ (पन्ना ९२९)

अकाल पुरख विलक्षण है, अमर, अयोनि है, उसकी न कोई जाति है, न बंधनों में फंसा है। वह अगम और अगोचर है। इसका न कोई रूप है और यदि ढूंढा जाए तो घट-घट में विद्यमान है :

एकम एकंकारु निराला ॥
अमरु अजोनी जाति न जाला ॥
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ॥
खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ॥ (पन्ना ८३८)

ब्रह्म को एकमात्र **'ੴ'** नाद से ही क्यों अभिहित किया गया? मानवीय मस्तिष्क में इस प्रश्न के सम्बंध में होने वाली जिज्ञासा का यदि कोई समाधान मिलता है तो यही कि केवल यही ध्वनि है जो प्राकृतिक है। शेष सभी ध्वनियां कृत्रिम हैं जो सभी दो वस्तुओं के आपसी घर्षण से पैदा होती हैं। नदी की 'कल-कल' ध्वनि दरिया तथा किनारे के घर्षण से पैदा होती है। पेड़ों की सरसराहट वृक्षों तथा वायु के घर्षण से

*शोधकर्त्री, संस्कृत विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला-१४७००२ (पंजाब)

पैदा होती है। इस प्रकार जितनी भी ध्वनियां हैं, वे द्वैत से पैदा होती हैं। वे उस अद्वितीय, निराकार की वाचक नहीं हो सकतीं। उस पारब्रह्म का वाचक **'ੴ'** ही केवल मात्र अनाहद नाद है।

यही **'ੴ'** उस परमेश्वर (ब्रह्म) की संज्ञा है। जब सभी शब्द गुम हो जाते हैं और मन पूर्णत: रिक्त हो जाता है, तब भी एक मात्र **'ੴ'** की ध्वनि सुनाई देती है। यह प्रकृति की धुन है। वस्तुत **'ੴ'** कोई शब्द नहीं, यह तो ऐसी ध्वनि है, ऐसा नाद है, जिसमें सभी शब्दों का लय हो जाता है। अत: **'ੴ'** सर्वदा नित्य है, मौजूद है।

अब यदि अंक '१' के विषय में चिंतन किया जाए तो इसके प्रयोग के पीछे श्री गुरु नानक देव जी का उद्देश्य 'एकत्ववाद' की स्थापना करना है। मनुष्य के विभिन्न बौद्धिक स्तरों के परिणामस्वरूप विभिन्न व्युत्पत्तियों तथा व्याख्याओं से बचने के लिए **'ਓ'** के आगे '१' अंक का प्रयोग किया। अत: '१' अंक उस परम सत्ता के 'एक' होने का निश्चित तथा विशिष्ट सूचक है। श्री गुरु नानक देव जी प्राणी मात्र को उपदेश देते हुए कहते हैं :

--दूजा कउणु कहा नही कोई ॥
सभ महि एकु निरंजनु सोई ॥ (पन्ना २२३)
--एको लेवै एको देवै
अवरु न दूजा मै सुणिआ ॥ (पन्ना ४३३)

श्री गुरु नानक देव जी ने कहा कि एक परमात्मा ही ज्ञान, ध्यान और वाणी की ध्वनि है। एक शब्द ही उसका सच्चा निशान है। मनुष्य का एकमात्र धर्म परमात्मा को चित्त में दृढ़ करना है। एक परमात्मा का एक ही सिंघासन है, उसका एक ही स्वरूप है, उसकी एक ही भक्ति तथा एक ही भाव है।

अत: श्री गुरु नानक देव जी का उद्देश्य पथ से विचलित अथवा पथभ्रष्ट मानवता को *'एक पिता एकस के हम बारिक'* तथा *'मानस की जाति सबै एकै पहिचानबो'* भावना के द्वारा सही मार्ग पर लाना है।

सति नामु : 'अस्' धातु से व्युत्पन्न इस शब्द में 'सत्' तथा 'सत्य' दोनों शब्द निहित हैं। 'सति नामु' ब्रह्म के वाचक इस शब्द का वाच्यार्थ 'सदा सत्य रहने वाला' है। संसार की अन्य सभी वस्तुएं प्रत्युत् सम्पूर्ण जगत ही नश्वर है, परन्तु एकमात्र ब्रह्म ही सदा नित्य, अनश्वर तथा सर्वदा विद्यमान है। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी में सत्य स्वरूप परमात्मा ही सच्चा है, उससे भिन्न और कोई दूसरा नहीं। उसी ने सृष्टि का सृजन किया है और वही विनाशकार भी है।

'सत्' का अर्थ प्रकृति अथवा एगजिस्टैंस माना जाता है तथा 'सत्' सच्चाई का बोधक है। सत्य वह है जो तर्क पर आधारित होता है, जो विज्ञान और गणित का आधार है। उनके सिद्धांतों एवं कसौटियों पर सही उतरने वाला ही सत्य है, यथा दो विपरीत चुम्बकीय ध्रुवों में आकर्षण होता है एवं पृथ्वी हमेशा सूर्य के इर्द-गिर्द घूमती है। यह सत्य है, परन्तु रात्रि में देखा गया स्वप्न सत् है, सत्य नहीं, क्योंकि सुबह होते ही वह न के बराबर रह जाता है।

विज्ञान सत्य पर आधारित होता है तथा कला सत् की तलाश करती है, परन्तु ब्रह्म न केवल गणित की भांति सत्य है और न ही कला की भांति सत्। वह तो सत्य और सत् दोनों है। जब हृदय तथा मस्तिष्क का संयोग होता है तब मनुष्य पूर्णत: **ੴ** में प्रवेश कर जाता है और प्रभु की अनुभूति होती है। उस ब्रह्म का नाम 'सति' है।

जपु जी साहिब के प्रथम श्लोक के अनुसार परमात्मा सृष्टि के आदि में सत्य था, युगों के आरंभ में सत्य रूप में स्थित था, वर्तमान में भी सत्य है और भविष्य में भी सत्य ही होगा:

आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ (पन्ना १)

जिस प्रभु ने इस सृष्टि की रचना की है वह अनाशवान है, नित्य है :

सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥
(पन्ना ६)

प्रभु की नित्यता से सम्बंधित कुछ श्लोक इस प्रकार हैं :

--सचु पुराणा होवै नाही सीता कदे न पाटै ॥
नानक साहिबु सचो सचा तिचरु जापी जापै ॥
(पन्ना १२४८)

--सच बिनु सतु संतोखु न पावै ॥ . . .
सच बिनु भवजलु जाइ न तरिआ ॥
(पन्ना १०४०)

अत: ब्रह्म का वाचक सति नामु है।

करता पुरख : इसका अर्थ है, वह सब कुछ करने वाला है जिसे श्री गुरु नानक देव जी ने आदि पुरख, सच्चा साहिब तथा अपरंपार संज्ञाओं से भी अभिहित किया है :

मेरा मनो मेरा मनु राता राम पिआरे राम ॥
सचु साहिबो आदि पुरखु अपरंपरो धारे राम ॥
(पन्ना ४३७)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सृष्टि का कर्त्ता अथवा निर्माता परमात्मा को ही माना गया है:

तूं करता पुरखु अगंमु है आपि स्रिसटि उपाती ॥
रंग परंग उपारजना बहु बहु बिधि भाती ॥
तूं जाणहि जिनि उपाईऐ सभु खेलु तुमाती ॥
(पन्ना १३८)

केवल परमात्मा को पुरुष तथा शेष सभी जीवात्माओं को नारी कहा गया है।

--ठाकुरु एकु सबाई नारि ॥ (पन्ना ९३३)

--आपे पुरखु आपे ही नारी ॥
आपे पासा आपे सारी ॥
आपे पिड़ बाधी जगु खेलै आपे कीमति पाई हे ॥ (पन्ना १०२०)

अत: श्री गुरु नानक देव जी ने समस्त जगत को एकमात्र अकाल पुरख से उत्पन्न हुआ माना है। ब्रह्म को 'पुरख' अथवा 'करता पुरख' मानना केवल एक अभिव्यक्ति का साधन है। वस्तुत: गुरु जी ने स्पष्ट कहा है कि तीनों लोक उसकी ज्योति में ही ध्यान लगाते हैं। उसके विषय में सभी मूक हैं और सभी उसकी शरणार्थ हैं:

सुंन मंडल इकु जोगी बैसे ॥
नारि न पुरखु कहहु कोऊ कैसे ॥
त्रिभवण जोति रहे लिव लाई ॥
सुरि नर नाथ सचे सरणाई ॥ (पन्ना ६८५)

अब यदि पूर्णत: सूक्ष्मता से ब्रह्म के इस विशेषण का चिंतन किया जाए तो मन में यह प्रश्न स्वाभाविक उठता है कि यदि वह ब्रह्म 'बनाने वाला है' अर्थात् कर्त्ता है और समस्त सृष्टि इसका कृत्य है तो यहां द्वैत सिद्ध होता है, परन्तु गुरु जी तो मानते हैं कि वह एक है।

इस स्वाभाविक प्रश्न का समाधान यह है कि वह करता पुरख है तथा जो उसका कृत्य है वह उससे भिन्न नहीं है। कर्त्ता अपने कृत्य में ही अन्तरलीन है। वह अपनी सृष्टि में ही छिपा हुआ है। अत: श्री गुरु नानक देव जी ने कदापि सांसारिक व्यवहार का त्याग नहीं किया। उन्होंने कर्म में ही कर्त्ता को पाया है।

यह कर्त्ता और कृत्य का सम्बंध घट तथा कुम्हार जैसा नहीं और न ही पिता और पुत्र जैसा है। घट का निर्माण करके कुम्हार घट

से भिन्न है और पुत्र को उत्पन्न करके पिता अथवा माता पुत्र से अलग है। गुरु जी ने उस करता पुरख को सृष्टि में ही लीन माना है।
निरभउ : '੧ਓ' का वाचक 'निरभउ' शब्द का अर्थ है कि परमात्मा भय से रहित है। भय केवल वहीं होता है जहां कोई अन्य हो। पश्चिम में एक उक्ति प्रसिद्ध है : 'The other is hell' अर्थात् 'दूसरा' नरक है। मित्र से कम भय, शत्रु से अधिक भय, पानी से भय, हवा से भय, हर अन्य वस्तु से भय। भय तब होता है जब कोई अन्य दिखाई दे। जब हम ੧ਓ में लीन हो जाते हैं तो वहां भय नहीं रहता, क्योंकि मनुष्य, मनुष्य न रहकर ब्रह्म हो जाता है।

जब यह स्थिति आती है वो मैं भी ब्रह्म, तू भी ब्रह्म हो जाता है। जब सब कुछ ही ब्रह्म है तथा मैं, तू और ब्रह्म में कोई अंतर ही नहीं तो भय किस वस्तु का?

ब्रह्म तो स्वयं ही सर्वशक्तिमान है। उसके भय से ही सूर्य, वायु, आकाश, अग्नि आदि सभी अपने-अपने अधिकार क्षेत्रों में विचरण करते हैं। गुरु साहिबान कहते हैं :

--तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥
(पन्ना १२)
--सागरि डूगरि निरभउ ऐसा ॥ (पन्ना २२१)
--निरभउ सो सिरि नाही लेखा ॥
आपि अलेखु कुदरति है देखा ॥
आपि अतीतु अजोनी संभउ
नानक गुरमति सो पाइआ ॥ (पन्ना १०४२)

गुरबाणी में उस 'निरभउ' का निर्मल भय रखने का आदेश दिया गया है :

भै रचि रहै सु निरभउ होइ ॥ (पन्ना २२३)

'निरभउ' के भय में रहते हुए जब मनुष्य अपने अहंकार से निवृत्त हो जाता है तो उसका जन्म सिद्ध हो जाता है तथा जगत का डर उसके मन से सदा के लिए समाप्त हो जाता है।
निरवैर : वो परम सत्ता वैर भाव से रहित है अर्थात् उसे किसी से शत्रुता नहीं है, वही सम्पूर्ण जगत में शत्रु रहित है। वैर के मूल में समानता की भावना रहती है। वैर वहीं होता है जहां पर कोई किसी से समानता को लेकर ईर्ष्या करे। उस परम तत्त्व से ऊपर कुछ भी नहीं। उसे किसी से समानता की होड़ नहीं है जिसके परिणामस्वरूप उसके लिए 'निरवैर' विशेषण का प्रयोग किया गया। उसकी सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमत्ता का कोई पार नहीं पा सकता। वह कर्मफल-प्रदाता होते हुए भी निरवैर है ठीक उसी भांति जिस प्रकार एक गुरु अपने शिष्य को सभी विद्याओं का ज्ञाता बनाने के लिए उसको सजा भी देता है तथा एक पिता की तरह है जो पुत्र की सर्वगुणसम्पन्नता हेतु उसे कभी-कभी पीटता भी है, परन्तु वे कभी भी अपने शिष्य अथवा पुत्र के वैरी नहीं होते।

उसी प्रकार प्रभु भी कर्मों के परिणामस्वरूप ही फल प्रदान करता है ताकि मनुष्य बुरे कर्मों का पश्चाताप करके सन्मार्गी बने रहें। गुरु साहिबान फरमान करते हैं :

--निरभउ निरंकारु निरवैरु पूरन जाति समाई ॥
(पन्ना ५९६)
--आपे मिहर दइआपति दाता ना किसै को बैराई हे ॥ (पन्ना १०२२)

अकाल मूरति : मूल-मंत्र में प्रयुक्त इस शब्द से अभिप्राय है कि परमात्मा कालातीत है। वह त्रिकाल से बाधित नहीं होता। वह समय की सीमा में नहीं है। इस तथ्य की पुष्टि जपु जी साहिब का यह श्लोक स्वत: ही कर देता है :

आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ (पन्ना १)

परमात्मा काल के प्रभाव से मुक्त है, काल

का मूल परिवर्तन है। अन्य शब्दों में परिवर्तन समय की मांग है। समय के साथ-साथ प्रत्येक वस्तु अथवा तत्व में परिवर्तन आता है, विकार आता है। पहले बचपन, फिर यौवन और फिर वृद्धावस्था, जिससे निरंतर देह में विकार आते रहते हैं, जो समय की गति को घोषित करते हैं। यदि यह मान लें कि सूर्य की गति रुक गई, किसी भी वस्तु में कोई विकार नहीं, सब कुछ ठहर जाए तो कैसे पता लगेगा कि समय परिवर्तित हो रहा है? तब समय होगा ही नहीं।

समय को केवल परिवर्तन से ज्ञात किया जाता है, जिसकी परिधि में यह प्राणी-जगत है। वह परमात्मा तो शाश्वत है, नित्य है, सत् है, चिरस्थाई है, सनातन है, जो काल की परिधि से बाहर है। उसमें कभी भी बचपन, यौवन वृद्धावस्था जैसे विकार नहीं होते। वह तो 'अकाल मूरति' है। काल उसे बांध नहीं सकता। प्रत्युक्त समय उसकी शक्ति से ही परिवर्तित होता है। गुरु जी फरमान करते हैं :

--तू अकाल पुरखु नाही सिरि काला ॥
तू पुरखु अलेख अगंम निराला ॥ . . .
काल बिकाल कीए एक ग्रासा ॥ (पन्ना १०३८)
--विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥
सूरजु एको रुति अनेक ॥
नानक करते के केते वेस ॥ (पन्ना १२)

उस परमात्मा के अधीन काल और विकाल हैं तथा वह परम-सत्ता अपरिवर्तनशील है तथा कालातीत है।

अजूनि (अयोनि) : वह प्रभु 'अयोनि' है अर्थात् जिसका कोई भी कारण नहीं, जिसको किसी ने जन्म नहीं दिया, क्योंकि परमात्मा द्वारा बनाई गई सृष्टि का नियम है कि जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु अवश्यसंभावी है। श्री गुरु नानक देव जी इसी कथन की पुष्टि करते हुए कहते हैं:

--अलखु न लखीऐ अगमु अजोनी तूं नाथां नाथणहारा ॥ (पन्ना १२५५)
--सो ब्रहमु अजोनी है भी होनी घट भीतरि देखु मुरारी जीउ ॥ (पन्ना ५९७)
--सुरि नर नाथ बेअंत अजोनी साचै महलि अपारा ॥ (पन्ना ४८९)

गुरु जी का ब्रह्म को 'अयोनि' कहने का मंतव्य अवतारवाद की धारणा को समाप्त करना भी है। प्रत्येक मनुष्य के भीतर वह 'अयोनि' है, इस शरीर मात्र के अंदर कालातीत है। जब मनुष्य में उसे अपने अंदर अनुभव करने की अनुभूति पैदा होती है तो वह अनुभव करता है कि अंदर कुछ भी परिवर्तित नहीं हुआ है, सब कुछ अपरिवर्तनशील है तथा वही अयोनि है।

है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ (पन्ना ६)

वस्तुतः वह अकारण है, वह अजन्मा है। यद्यपि उसके आस्तित्व का कोई कारण नहीं तथापि वही सभी कारणों का कारण है :

करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥
कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥ (पन्ना १४८)

सैभं : 'सैभं' विशेषण का अर्थ विद्वानों द्वारा दो अर्थों में किया जाता है। 'स्वयंभू' तथा दूसरा शबद 'स्वयं' तथा 'भं'। इन दो शब्दों का योग निष्पन्न माना जाता है। यदि प्रथम पक्षीय विद्वानों का मत लिया जाए तो वह स्वयंभू अर्थात् स्वतः ही उत्पन्न हुआ माना जाता है, जिसका अर्थ अयोनि (अजूनी) शब्द के अर्थों के अन्तर्गत स्वतः ही आ जाता है, क्योंकि जो किसी से उत्पन्न नहीं हुआ, जिसका कोई कारण नहीं, वह स्वयं से ही उत्पन्न हुआ है, जिसका कारण

वह स्वयं आप ही है।

द्वितीय पक्ष के अनुसार 'भं' शब्द 'भा' का ही प्रकृत रूप है, जिसका अर्थ 'स्वत: प्रकाशमान' है अर्थात् जो अन्त:करण में प्रकाशस्वरूप है। वह प्रभु स्वत: ही प्रकाशित होता है। उसे प्रकाशित होने के लिए किसी अन्य प्रकाश की आवश्यकता नहीं, प्रत्युत सभी प्रकार के प्रकाशों, यथा सूर्य का प्रकाश, अग्नि का प्रकाश, दीपक का प्रकाशादि में वही प्रकाशमान रहता है।

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
(पन्ना १३)

परमेश्वर को ज्योतिस्वरूप, प्रकाशस्वरूप 'स्वैभं' कहने का तात्पर्य है कि वह चेतन है, उसकी चेतनता स्वत: ही है, जिसका अन्य कोई आधार नहीं :

जोति सरूप सदा सुखदाता सचे सोभा पाइदा ॥
(पन्ना १०३६)

गुर प्रसादि : 'गुर प्रसादि' का अर्थ है गुरु की कृपा से। अन्य शब्दों में उस ब्रह्म की प्राप्ति गुरु की कृपा होने पर ही हो सकती है। इस अर्थ की पुष्टि सुखमनी साहिब की इन पंक्तियों से सिद्ध हो जाती है :

गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥ (पन्ना २७०)
गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥ (पन्ना २७४)
जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥ (पन्ना २८२)
गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥ (पन्ना २८९)
गुर प्रसादि नामु जपि लइआ ॥ (पन्ना २९०)
गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥ (पन्ना २९४)
गुर परसादि भरम का नासु ॥ (पन्ना २९४)

प्रभु की प्राप्ति गुरु की कृपा से ही हो सकती है। गुरु जी के कहने का अभिप्राय यह है कि बिना गुरु के प्रभु की प्राप्ति नहीं हो सकती। यदि 'मैं' प्रत्यक्ष रूप से क्यों नहीं परमात्मा तक पहुंच सकता? इसका उत्तर यही है कि गुरु की आवश्यकता इसलिए है चूंकि हम स्वयं अपने अहंकार को मिटाने में समर्थ नहीं होते। अपने अहंकार को मिटाना उतना ही कठिन है जितना जूते के फीते को पकड़कर अपने आप को ऊपर उठाना; वैसे ही कठिन है जैसे कुत्ता अपनी ही पूंछ को पकड़ने की कोशिश करे, परन्तु जितनी तीव्रता से वो छलांग लगाता है उतनी ही तीव्रता से उसकी पूंछ भी छलांग लगाती है।

गुरु की आवश्यकता अहंकार को समाप्त करने के लिए है। स्वत: यदि अहंकार मिटा दिया तो "मैंने अपना अहंकार मिटा दिया।" यहां फिर से अहं उत्पन्न हो गया। अहंकार फिर से किसी अन्य 'मैं' के रूप में पैदा हो गया। परन्तु यदि गुरु की कृपा से 'अहं' मिटेगा तो मनुष्य कहता है कि गुरु की कृपा से अहंकार मिट गया आदि। अत: अहंकार के लिए गुरु की कृपा-दृष्टि अत्यावश्यक है और अहंकार की समाप्ति हो जाने पर उस ब्रह्म की प्राप्ति हो जाती है।

गुरबाणी में वर्णित मूल-मंत्र प्रभु का वास्तविक निरूपण माना जाता है। मूल-मंत्र में वर्णित उस परमात्मा (ब्रह्म) के समस्त गुणों को आत्मसात करना ही जिज्ञासु का सर्वोच्च लक्ष्य होना चाहिए जिससे वह उस प्रभु सत्ता के गुणों का अनुकरण करता हुआ स्वयं ही उन गुणों का धारणी होकर परम-पद (प्रभु-पद) को प्राप्त कर लेता है।

सिक्ख धर्म का विचार-तत्व

*-डॉ. अरुण रानी**

भारत के अनेक धर्मों में सिक्ख धर्म का अपना विशेष महत्त्व है। जिस समय भारत में जातीय भेदभाव, धार्मिक आडम्बरों से जनसामान्य क्षुब्ध था, चारों ओर अराजकता का वातावरण व्याप्त था, शूद्रों को मंदिर-देवालयों में प्रवेश से रोक कर अस्पृश्य घोषित किया। स्पर्शमात्र से अपवित्र हो जाने की भावना से उच्च वर्ण के लोग दूर रहने लगे।[१] ब्राह्मण वर्ण में जन्म लेने वाला एक धर्महीन व्यक्ति भी राजा का सलाहकार हो सकता है, किन्तु शूद्र और अन्त्यज कभी राजा के सलाहकार नहीं हो सकते।[२] ऐसे अराजक व असामंजस्य से भरे वातावरण में मानवों का उद्धार करने को जिस महान आत्मा का आविर्भाव हुआ वे थे सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी। श्री गुरु नानक देव जी समाज-सुधार के द्योतक हैं। उन्होंने सभी तत्कालीन प्रचलित धर्मों के पाखंडों की आलोचना की तथा कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने बिना किसी भेदभाव के सभी वर्गों के लोगों को शिष्य के रूप में स्वीकार किया और अपने को शूद्रों का सहचर बताया :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥ *(पन्ना १५)*

श्री गुरु नानक देव जी ने जपु जी साहिब के आरंभ में अंकित मूल मंत्र में ईश्वर के प्रत्यय को निम्न रूप में व्यक्त किया है :

੧ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

एक समय शूद्रों व महिलाओं को मंत्रों के उच्चारण की अनुमति नहीं थी। शूद्रों को यदि अध्यात्म से संबंध रखता कोई शब्द सुनाई पड़ जाए तो उनके कानों में उबलता हुआ तेल डालने का प्रचलन हो गया था। सिक्ख पंथ ने इस प्रचलन का विरोध किया और धार्मिक क्रियाओं में सभी व्यक्तियों को सहभागिता की स्वतंत्रता दी। जपु जी साहिब में रूहानी गुणों को मान्यता की कसौटी स्वीकार किया गया, जैसे कि :

पंच परवाण पंच परधानु ॥
पंचे पावहि दरगहि मानु ॥
पंचे सोहहि दरि राजानु ॥
पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥ *(पन्ना ११)*

प्रभु-स्तवन और परमात्मा की प्राप्ति का अधिकार सभी को है। पंचम गुरु जी सुखमनी साहिब में कथन करते हैं : *"बीज मंत्रु सरब को गिआनु ॥ चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥"* में भी ऐसे भाव को प्रदर्शित किया है। इसी प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब में समाज में सहअस्तित्व हेतु कहा गया है कि "श्वास की हवा द्वारा सभी जीवों को उसने एक साथ बांधा है। आग और लकड़ी जुड़े हुए हैं, जल और थल एक स्थान पर उसने स्थापित किये हैं, कोई दूसरे के लिए अनिष्टकर नहीं।"

सिक्ख दर्शन में कहा गया है कि जीव को अपने द्वारा किये गये कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होता है :

पुंनी पापी आखणु नाहि ॥

**जी. एस. एच. पी. जी. कालेज, चांदपुरस्याऊ, जिला बिजनौर (उ. प्र.)*

करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥
नानक हुकमी आवहु जाहु ॥ (पन्ना ४)

राग गउड़ी में श्री गुरु तेग बहादर जी के पवित्र वचन हैं कि जागृत मनुष्य बुराई की ओर तो जा ही नहीं सकता, क्योंकि उसे पता है कि मेरा स्वामी प्रभु हर स्थान पर व्याप्त है। मेरे कार्यों को तो क्या वह मेरे दिल के संकल्प तक को भी जानता है, इसलिए अचानक हो जाने वाले पाप से भी डरना चाहिए :

नर अचेत पाप ते डरु रे ॥ (पन्ना २२०)

सिक्ख धर्म में 'नाम-जप' से ही परमात्म-तत्त्व की प्राप्ति होती है। जिनके मुख में परमात्मा का नाम नहीं बसता उनकी प्रतिष्ठा नष्ट हो जाने से उनका मुख काला हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी का सिरीरागु में निर्मल कथन है :

चहु जुगि मैले मलु भरे जिन मुखि नामु न होइ ॥
भगती भाइ विहूणिआ मुहु काला पति खोइ ॥
जिनी नामु विसारिआ अवगण मुठी रोइ ॥
(पन्ना ५७)

सिक्ख धर्म ईश्वरवादी धर्म है। इस धर्म में ईश्वर के गुण अच्छी प्रकार से समझाये गये हैं। सिक्ख धर्म एकेश्वरवादी धर्म है। यह अनेकश्वरवाद का विरोधी है। श्री गुरु नानक देव जी ने कहा है कि 'ईश्वर एक है।' परंतु कई लोग सोचते हैं कि उनका ईश्वर शायद अन्य लोगों के ईश्वर से भिन्न है। यहां कथन किया गया है कि जिस ईश्वर की मैं पूजा करता हूं वह अल्लाह भी है, राम भी है, वाहिगुरु भी है। मैं निरंकार के आगे नमन करता हूं। इस तरह मैंने हिंदू और मुसलमान का झगड़ा समाप्त कर दिया। सिक्ख धर्म में अवतारवाद एवं बहुदेववाद का विरोध किया गया है, लेकिन सिक्ख गुरु साहिबान ने प्रभु को भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हुए गोबिंद, राम, शिआम, क्रिशन, मुरारी, बनवारी, गोपाल आदि नामों का अनेक बार उल्लेख किया है। ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सर्वज्ञानी, जगत का सृष्टा और संहारकर्ता, परम न्यायी, प्रेमी व दयावान है। सिक्ख धर्म में समन्वयवादी दृष्टि से ईश्वर के निर्गुण और सगुण दोनों ही रूप स्वीकार किये हैं।

गुरमति में धर्म के अंतर्गत गुरु-कृपा को मोक्ष-प्राप्ति का प्रमुख साधन माना गया है, जैसे:

बिनु गुर सबद नही घरु बारु ॥
नानक गुरमुखि ततु बीचारु ॥ (पन्ना ९०६)

गुरमति में सदगुरु की महत्ता उसके मोक्ष-प्रदायक 'शबद' के कारण है। गुरमति में 'शबद' परमात्मा के नाम का वाचक है। 'शबद' का नाम शाश्वत है जो इंद्रियों से ग्राह्य नहीं है, मन से कल्पानीय नहीं और बुद्धि से चिन्तनीय नहीं। वह अगोचर, अकलय और अचिन्त्य है। 'शबद' के दो गुण हैं--'दिव्य ध्वनि' और 'दिव्य प्रकाश'। श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि सुरति (आत्मा) का सम्बंध जब 'शबद' से जुड़ जाता है तो जीव मुक्त हो जाता है :

सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥ (पन्ना ९३८)

गुरमति के अनुसार 'हउमै' (अहंकार) से मुमुक्षु को सदैव सावधान रहना चाहिए, क्योंकि यह मोक्ष-मार्ग का प्रमुख अवरोध है। जब मनुष्य का 'अहम्' देहादि से सम्बंध होता है तब वह मिथ्या है, किन्तु जब वह आत्मा का वाचक बनकर आता है तो ज्ञानात्मक होता है। आत्मा ही परमात्मा है *"आतम रामु रामु है आतम ॥"* गुरमति में वाह्याचार को निरर्थक और अन्त:साधना को महत्त्वपूर्ण प्रतिपादित किया गया है :

हाथ कमंडलु कापड़ीआ मनि त्रिसना उपजी भारी ॥

इसत्री तजि करि कामि विआपिआ चितु लाइआ पर नारी ॥
सिख करे करि सबदु न चीनै लंपटु है बाजारी ॥
अंतरि बिखु बाहरि निभराती ता जमु करे खुआरी ॥
(पन्ना १०१३)

अर्थ का सम्बंध कृषि-शास्त्र, गोरक्षा-शास्त्र, वाणिज्य-शास्त्र, शिल्प-शास्त्र से है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब, जो कि एक धर्म ग्रंथ है, में इन शास्त्रों का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। अर्थ पुरुषार्थ के उदाहरण कहीं-कहीं मिल जाते हैं। अर्थ को पुरुषार्थ की संज्ञा तब प्राप्त होती है जब वह आत्मार्थ होता है। पुरुषार्थ का अर्थ ही आत्मार्थ है। आत्मार्थ व्यक्ति के लिए प्रिय नहीं होता है आत्मा के लिए होता है। ईमानदारी की कमाई से जो सुख मिलता है वह बेईमानी की कमाई से नहीं मिलता। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कहीं प्रत्यक्ष तो कहीं परोक्ष, अर्थ के पुरुषार्थ रूप में निर्मल निर्देश प्राप्त होते है। अर्थ, लोभ व सत्ता की भूख को लेकर बाबर ने जो रक्तपात व लूट मचाई, उससे गुरु साहिब को अत्यधिक पीड़ा हुई। वे कहते हैं :

इसु जर कारणि घणी विगुती इनि जर घणी खुआई ॥
पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥
(पन्ना ४१७)

काम निन्द्य भी है और स्तुत्य भी। जो काम इंद्रियों के विषय संयोगों से युक्त होता है वह निन्द्य तथा जो आत्म-साक्षात्कार की कामना से युक्त होता है वह स्तुत्य काम है। गुरमति में गुरु और परमात्मा को एक माना गया है। गुरु साकार तथा परमात्मा निराकार गुरु है। अत: श्री गुरु ग्रंथ साहिब में परमात्मा व गुरु से प्यार सम्बंधित है। प्रियतम (आत्मा) का जब परमात्मा से मिलन होता है तो वह वधु अपने वर से मिलकर मंगल गीत गाने लगती है:

मिलि वरु नारी मंगलु गाइआ ॥
गुण गाइ मंगलु प्रेमि रहसी मुंध मनि ओमाहओ ॥
नानक पिरु धन करहि रलीआ इछ मेरी पुंनीआ ॥
(पन्ना २४२)

गुरु और हरि के प्रति भक्ति भी है और उस भक्ति में आत्मोद्धार की आध्यात्मिक कामना भी है। यही काम का भक्ति आयाम है।

मोक्ष मानव-जीवन का परम पुरुषार्थ है, परम प्रयोजन है। मोक्ष का अर्थ है सांसारिक बंधनों से और आत्मा की परमात्मा के साथ अद्वैतावस्था। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मोक्ष के अनेक क्षेत्रों में नये आयाम या मौलिक विचार विस्तार से प्राप्त हुए हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मनमुख, गुरमुख तथा माया तीनों का वर्णन मिलता है। गुरमति में विषयोन्मुख जीव को मनमुख तथा आत्मोन्मुख जीव को गुरमुख कहा गया है। मनमुख स्वेच्छाचारी होता है। उसके लिए इंद्रियों के विषयों का भोग ही सब कुछ होता है। आत्मा-परमात्मा, मोक्ष के विचार उसे अहंकार के कारण कपोल कल्पित लगते हैं। गुरमति में ऐसे जीव की बड़ी भर्त्सना हुई है। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं :

कूकर सूकर कहीअहि कूड़िआरा ॥
भउकि मरहि भउ भउ भउ हारा ॥
मनि तनि झूठे कूडु कमावहि दुरमति दरगह हारा हे ॥
(पन्ना १०२९)

गुरमुख अपनी सुरति (आत्मा) को अपने ही अंदर एकाग्र कर परमात्मा के नाम से जोड़ता है। सतिगुरु की कृपा से उसके सब सांसारिक बंधन कट जाते हैं और वह अलख को लखने लगता है।

भोजनु नामु निरंजन सारु ॥
परम हंसु सचु जोति अपार ॥
जह देखउ तह एकंकारु ॥ *(पन्ना २२७)*

परमात्मा की यह कुदरत यद्यपि अज्ञेय,

अचिन्त्य एवं अकल्प्य है तथापि इसने समस्त विश्व ब्रह्मांड को अभिभूत कर रखा है :

माइआ मोहि सगल जगु छाइआ ॥ (पन्ना १३४२)

गुरमति में परमात्मा को सीधे सृष्टिकर्त्ता माना गया है। उसमें यह तो माना गया है कि परमात्मा ने त्रिगुणमयी माया को जन्म दिया है पर यह नहीं माना कि परमात्मा ने अपनी माया से सृष्टि का निर्माण किया है। गुरु नानक साहिब कहते हैं :

आपे आपि निरंजना जिनि आपु उपाइआ ॥
आपे खेलु रचाइओनु सभु जगतु सबाइआ ॥
(पन्ना १२३७)

सन्दर्भ :

१. सहगल, प्रसिन्नी, 'गुरु गोबिंद सिंघ और उनका काव्य', हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ, १९६५, पृ. १७.

बाबा बंदा सिंघ बहादर

(पृष्ठ २९ का शेष)

हाकिम उस्मान खां था, जो कि हिंदुओं को अपने मृत लोगों का अंतिम संस्कार करने की आज्ञा नहीं देता था। मुस्लिम फकीर सैयद बदरुदीन शाह को भी भंगाणी की लड़ाई में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सहायता करने के कारण इसने मरवा डाला था। बाबा बंदा सिंघ बहादर की फौज ने इसका अंत करने के बाद दोआबा और माझा की तरफ चढ़ाई की। इसी दौरान बाबा बंदा सिंघ बहादर ने यह ऐलान किया कि सरहिंद पर चढ़ाई करने का समय आ गया है। आप अपने सभी मिलने-जुलने वालों को इस पवित्र काम में सहयोग देने के लिए इकट्ठा करें।

सिक्ख फौजों ने सरहिंद की ओर कूच किया। मंजिल केवल दो ही कदम पर थी कि बाबा बंदा सिंघ बहादर ने पठानों को बंदी बना लिया। इससे पठानों के दिल दहल गये। यह सब देखकर उनकी सेना के लड़ते-लड़ते हाथ-पैर फूलने लगे। तब आपने ऐलान किया कि आओ गुरु के वीरो! आगे बढ़ो, विजय आपके पास ही है। इस ऐलान को सुनकर भाई फतह सिंघ ने वजीर खां को अपनी तलवार से मौत के घाट उतार दिया। वजीर खां के गिरते ही सारी शाही सेना तितर-बितर हो गयी। विजय प्राप्त होने पर चारों ओर 'सति श्री अकाल' के जयकारों से आसमान गूंज उठा। सरहिंद के सूबेदार वजीर खां, जो कि साहिबजादों तथा माता गुजरी जी की शहीदी के लिए जिम्मेवार था, को कत्ल करके, सरहिंद की ईंट से ईंट बजाकर आपने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के वचनों का पालन किया।

. . . शहीद बाबा बंदा सिंघ बहादर

(पृष्ठ ३० का शेष)

प्रेरणा से बाबा बंदा सिंघ बहादर ने पंजाब में जो नवीन जागृति और चेतना भरी उसका प्रभाव महाराजा रणजीत सिंघ तक बना रहा। अंत में बाबा बंदा सिंघ बहादर अनेक शत्रुओं की कुटिल नीति का शिकार होकर अपने लगभग ७०० साथियों के साथ गिरफ्तार किये गए। अमानवीय कृत्यों के लिए कुख्यात मुगलों की तलवारों ने प्रतिदिन १००-१०० वीर सिक्खों के सिर कलम किये। अंत में जून, १७१६ को बाबा बंदा सिंघ बहादर की भी बारी आयी। इन्हें अनेक प्रलोभन दिए गये, उनके सामने ही उनके पुत्र को शहीद किया गया, परन्तु शौर्य की मिट्टी से बने बाबा बंदा सिंघ बहादर ने झुकना नहीं सीखा था। लपलपाती मुगल तलवारों ने उनके शरीर का बंद-बंद तो काट दिया परन्तु उनका यश अमर हो गया।

धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ . . .

*-प्रवीण बाला**

मानव जन्म अमूल्य है। गुरु साहिबान तथा भक्त साहिबान ने इसकी पुष्टि की। चौरासी लाख योनियों को पार करके जीव जब मानव-देह धारण करता है तो उसकी महत्ता और भी बढ़ जाती है। उपरोक्त बताए साधनों द्वारा सदैव इस बात पर बल दिया गया कि मानव जन्म व्यर्थ करने के लिए नहीं है। इसका उद्देश्य नाम-सिमरन से जुड़कर इसके द्वारा स्वयं का उद्धार करना है। इस उद्देश्य को महापुरुषों ने अपने ढंग से व्याख्यायित किया। हम गुरु साहिबान की बाणी के अक्षय स्रोत 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' को यहां आधार लेकर चलेंगे। यह पावन ग्रंथ इस परम उद्देश्य को प्राप्त करने की विधि को बताने का कार्य बड़ी सुगमता से करता है। इसमें अध्यात्म का सार तथा महापुरुषों की झीनी-बीनी अमृतमय बाणी संग्रहित है जो प्रत्येक जिज्ञासा का समाधान सीधी व सरल भाषा में कर देती है। यही वह ग्रंथ है जिसने पूरे भारत के रूहानी अनुभवी संतों-भक्तों-फकीरों को एक ही जगह पर इकट्ठा कर दिया है, जिसमें कहीं भक्त कबीर जी बोलते हैं तो कहीं भक्त नामदेव जी; कहीं बाबा फरीद जी व भक्त पीपा जी जैसे भक्त साहिबान अपनी मधुर बाणी से उस प्रभु को रिझा रहे हैं तो कहीं भक्त रविदास जी जैसे भक्त उसकी महिमा को व्यक्त कर रहे हैं :

नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥ (पन्ना ११०६)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जब हम नाम-सिमरन के विषय को लेकर उस सम्बंधी कुछ खोजते हैं तो पाते हैं कि नाम-सिमरन की प्रक्रिया उतनी सहज नहीं जितनी समझी जाती है बल्कि इसके पीछे तो जन्म-जन्मांतरों के अनेक शुभ कर्म हैं जिसका संचय एक दिन बड़ा पुण्य बन कर मानव देह के रूप में नाम-सिमरन के फल से जोड़ता है और यह सब परमात्मा की विशेष कृपा द्वारा प्राप्त होता है। इसलिए मानव-देह मिलने पर सदैव शुभ कर्मों, जैसे साधसंगति, नाम-सिमरन आदि में प्रवृत्त होने के लिए कहा गया है। गुरबाणी ने नाम-सिमरन द्वारा परमात्मा-मिलन को ही देह का धर्म और ध्येय बताया :

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ (पन्ना १२)

सब कार्यों में उत्तम कार्य साधसंगति और नाम-सिमरन है। ऐसा करना आवश्यक है। इसे कोई भी कर सकता है। वास्तव में यह उतना सरल नहीं जितना दिखाई देता है। गुरबाणी की पंक्ति *"आखणि अउखा साचा नाउ"*

**शोध छात्रा, हिंदी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला-१४७००२।*

सोचने पर विवश करती है कि नाम-सिमरन करना मुश्किल कैसे है? गुरबाणी ही उत्तर बताती है कि इस प्रक्रिया में आड़े आने वाले काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार ही मनुष्य को भटका कर इसे इस पथ से विमुख करते हैं- *"कामि क्रोधि डूबे अभिमानी"* और कोई विरला ही इन सबसे छूट पाता है। इस सब की समझ परमात्मा ही उसे देता है--*"विरले कउ सोझी पई . . . ॥"* वह परमात्मा किसी विरले को ही यह समझ क्यों देता है, सभी को क्यों नहीं देता? गुरबाणी ही इसे स्पष्ट करती है कि नाम-सिमरन के आड़े आने वाले इस काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रुओं से बचने के लिए गुरु-शरण, संत सेवा तथा सतसंग का आश्रय लेना होगा जो प्रत्येक व्यक्ति नहीं, कोई विरला ही प्राप्त करता है। व्यवहारिक रूप में इनको प्राप्त करना भी उतना ही कठिन है जितना कि नाम-सिमरन का कार्य। तब व्यक्ति क्या करे? आगे गुरबाणी स्पष्ट करती है कि प्रभु-कृपा और सौभाग्य से। जी हां, श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज गुरबाणी ही इस सब का प्रत्यक्ष प्रमाण देती है कि प्रभु-कृपा से लेकर गुरु-सान्निध्य, सेवा तथा सिमरन तभी मिलता है यदि मनुष्य के भाग्य में है या फिर वह मनुष्य पीछे (पिछले जन्म) से ही लेकर आया हो--*"धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥"* फिर वो परमात्मा अपनी कृपा के साथ उस व्यक्ति को नाम देता है :

तुमरी क्रिपा ते जपीऐ नाउ ॥
तुमरी क्रिपा ते दरगह थाउ ॥ (पन्ना १९२)

और वही व्यक्ति उस प्रभु की कृपा से उसका यश गाता है :

हरि का नामु सोई जनु लेइ ॥
करि किरपा नानक जिसु देइ ॥ (पन्ना २४०)

वास्तव में वही व्यक्ति प्रभु-नाम से जुड़ता है, वही सिमरन करता है या नाम-सिमरन से जुड़ता है जिससे वह परमात्मा स्वयं सिमरन करवाना चाहता है--*"से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥"* परमात्मा जिसको अपना 'नाम' देना चाहता है उसके मन में उसे बसा देता है-- *"आपणा नाउ मंनि वसाए ॥"* परन्तु यह भी सत्य है कि धुरि (भाग्य) में होने पर ही यह 'नाम' जपा जाता है। यह बिना गुरु की कृपा से जपा नहीं जाता :

धुरि खसमै का हुकमु पइआ
विणु सतिगुर चेतिआ न जाइ ॥ (पन्ना ५५६)

इसलिए वो परमात्मा पहले सद्गुरु की प्राप्ति करवाता है और इसके लिए जीव को सद्विचारों से भरता है :

गुरमति साची साचा वीचारु ॥
आपे बखसे दे वीचारु ॥ (पन्ना ६६६)

उत्तम विचारों के द्वारा वह उस गुरु की सेवा की बख्शिश करता है जिसके प्रताप से वह नाम में दृढ़ रहता है :

आपे बखसे गुर सेवा लाए ॥
गुरमती नामु मंनि वसाए ॥ (पन्ना १०५३)

यदि व्यक्ति सोचे कि अपने बल, बुद्धि और धन से या अपनी मेहनत से परमात्मा या उसके नाम को पा सकता है तो गुरबाणी सुचेत करती है कि :

आपन कीआ कछू न होवै किआ को करै परानी ॥
जा तिसु भावै सतिगुरु भेटै एको नामु बखानी ॥
(पन्ना ११२४)

अर्थात् अपने प्रयत्न से कुछ नहीं होता।

जिस पर परमात्मा प्रसन्न होता है उसकी ही सतिगुरु से भेंट करवाता है तथा एक प्रभु-नाम का जाप करवाता है और इसी से वह संसार-सागर से उबरता है :

सतिगुरू नो मिले सेई जन उबरे जिन हिरदै नामु समारिआ ॥ *(पन्ना ३१२)*

इसलिए नाम-सिमरन के पीछे सारा प्रताप 'धुरि' (भाग्य) का है :

पूरबि लिखिआ पाइआ हरि सिउ बणि आई ॥
(पन्ना ११००)

अब धुरि या भाग्य भी अच्छे कर्मों पर निर्भर करता है जिससे एक बात और स्पष्ट होकर सामने आती है कि शुभ कर्मों का संचय ही बड़ा पुण्य बन कर आगे नाम-सिमरन से जोड़ता है। इसी लिए सदैव शुभ कर्म करने की प्रेरणा संत पुरुषों द्वारा दी गई है। दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी स्वयं उस असीम शक्ति से इसमें प्रवृत्त होना मांगते हैं :

देहु सिवा बरु मोहि इहै सुभ करमण ते कबहूं न टरों। *(दशम ग्रंथ)*

शुभ कर्मों में सदैव तत्पर रहने वाला जीव इन्हीं शुभ कर्मों का फल नाम-सिमरन के रूप में अपने मस्तक (भाग्य) पर लिखा लाता है :

जिन कउ मसतकि लिखिआ तिन पाइआ हरि नामु ॥ *(पन्ना ४५)*

और इसी लिखे के कारण वह हरि-गुण गाता है :

धुरि मसतकि भागु हरि नामि सुहागु
हरि नामै हरि गुण गाइआ ॥ (पन्ना ४४६)

कहीं-कहीं 'मसतकि' की जगह 'लिलाटि' शब्द भी रखा गया है :

जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि नामु ॥
अनदिनु नामु सदा सदा धिआवहि साची दरगह पावहि मानु ॥ *(पन्ना १२५९)*

इस तरह नाम-सिमरन की सारी प्रक्रिया 'धुरि करमि' की ही सारी कहानी है।

उपरोक्त विवेचन यही सब स्पष्ट करता है कि जन्मों के शुभ कर्मों का संचय और प्रभु-कृपा व्यक्ति के भाग्य में मसतकि पर नाम-सिमरन लिखता है, जिसे समय आने पर कोई महापुरुष, सतिगुरु सिमरन करा कर या जगा कर नाम में जोड़ देता है।

इसलिए स्पष्ट है कि प्रकट रूप में चाहे कोई भी नाम-सिमरन कर ले लेकिन यदि नाम उसके भाग्य में नहीं तो उसके चिंतन में नहीं उतर सकेगा। ठीक उसी तरह जिस तरह रोगी स्वादिष्ट व्यंजन खा लेने पर भी पचा नहीं पाता। गुरबाणी भी यही बताती है कि वह जो खाकर इस नाम को पचा लेगा उसी का उद्धार होगा :

जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥
(पन्ना १४२९)

अर्थात् जो इसे भुंचेगा (पचाएगा) उसी का उद्धार होगा और जो पचाएगा भी वही जिसने 'धुरि' से नाम प्राप्त किया है।

इसलिए अब हम जब किसी व्यक्ति को नाम से जुड़ा पाएंगे तो यही कह उठेंगे :

धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥
कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥ *(पन्ना ९२२)*

अरदास : प्रभु आगे सीधी विनती

*-भाई किरपाल सिंघ**

सांसारिक कामों में अक्सर हम उस व्यक्ति की मदद लेते हैं जो हमसे ज्यादा सियाना तथा योग्य हो। हम भगवान के आगे भी मदद के लिए अरदासें करते हैं जो शक्ति का पूर्ण संसाधन है। इसमें कोई शक नहीं कि यह एक सही पहुंच है जो हमारी रोजाना की जिंदगी में आने वाली जटिल समस्याओं के इलाज के लिए जरूरी है। उस सर्वव्यापक शक्ति को अपने से अलग और उसे एक बाहरी ताकत समझते हुए प्रार्थना करना ही हमारी सबसे बड़ी भूल है, क्योंकि वो हमारी सारी आत्माओं की आत्मा है। वह हमारे में और बाहर भी विराजमान होकर काम करता है तथा हमारी सबकी होंद ही उसी के कारण है। मालिक की सारी शक्तियों को अपने अंदर जानते हुए अरदास-विनती करना ही कामयाबी का एक भेद है तथा यह भरपूर फलदायक भी होती है। मालिक (प्रभु) के सम्बंध में यह सोचना कि वह बर्फ से ढकी ऊंची पहाड़ियों, पवित्र नदियों तथा झरनों के जल की गहराई में मंदिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों या पवित्र स्थानों पर ही रहता है, उसके तथा अपने प्रति अन्याय है। वस्तुत: जैसे हमारी सोच-शक्ति, समय तथा घेरा सीमित है उसी प्रकार हम उस असीम शक्ति को अपनी सोच द्वारा पैदा किए तंग दायरे में सीमित करने की कोशिश करते हैं। हमारा ऐसा विश्वास और परिणामस्वरूप हुई मायूसी हमें कई बार उस पर अविश्वास करने की तरफ ले जाती है।

जब सारी शक्तियों का संसाधन हमारे अंदर मौजूद है तो हम अपने अंदर ही गोता लगाकर आत्मिक रूप से ज्यादा से ज्यादा बलवान बन सकते हैं। जैसे हर रोज शारीरिक कसरत करने से हम अधिक बलवान एवं फुर्तीले होते हैं वैसे ही प्रतिदिन आत्मिक अभ्यास करने से हमारी छुपी हुई रूहानी ताकतें उजागर हो जाती हैं। इस प्रकार हम अपनी आत्मा के बंद कपाट खोलते हुए रूहानियत से भर जाते हैं। जब कोई मनुष्य रूहानियत वाला बन जाता है तो सारी कायनात, जो परमात्मा ने बनाई है, उसके इशारे पर चलती है तथा उसकी जरूरतों की पूर्ति के लिए काम करती है।

एक तीव्र इच्छा ही एकाग्र अवस्था में अपना एक रास्ता खोल लेती है। कभी-कभी अपने से अलग दूसरी ताकतों की आराधना करने से भी हमारी इच्छाओं की पूर्ति हो जाती है। यह सफलता वास्तव में हमारी अपनी एकाग्रता का ही परिणाम है न कि किसी बाहरी ताकत का। इस प्रकार हम केवल अपने आप को ही धोखा नहीं देते बल्कि इस आदत में इतना फंस जाते हैं कि यह हमारे जीवन का एक अंग बन जाती है तथा हम परमात्मा को अपने से एक बाहरी ताकत समझने लग जाते हैं, जिसका सबसे बुरा परिणाम यह होता है कि हम रूहानियत के असीम खजाने, जो हमारी विरासत है, से विहीन रह जाते हैं। केवल भीतर उसके साथ सम्पर्क होने के बाद ही हम

**२२१, सेक्टर-१८, पंचकूला (हरियाणा)*

कायनात में उसकी सर्वव्यापक हस्ती को जान सकते हैं तथा सब जगह उसकी असली शान को देख सकते हैं। अपने अंदर उसके सीधे अनुभव के बिना प्रभु की धारणा केवल एक सुना-सुनाया या पुस्तकीय ज्ञान ही रह जाता है। हम भ्रम के वश हो जाते हैं तथा इस प्रकार परमात्मा के लिए अरदास करना एक खोखला-सा शब्दों का संग्रह ही बनकर रह जाता है।

अरदास और यत्न

अरदास और पुरुषार्थ का चोली-दामन का साथ है। हम प्रभु के आगे अरदास किसलिए करते हैं? केवल अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए। जब हम किसी चीज की प्राप्ति के लिए इच्छा करते हैं तो उसे हासिल करने के लिए हमें अपनी कोशिश करनी चाहिए तथा इसके साथ ही अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए भगवान के आगे अरदास भी करनी चाहिए। यह यकीनी भी है, जिससे हमें मदद मिलती है। जहां इंसानी कोशिशें नाकाम हो जाती हैं वहां अरदास सफल हो जाती है।

जैसे पक्षी एक पंख से उड़ नहीं सकता, रथ एक पहिए से चल नहीं सकता, वैसे ही संकटमयी कार्यों की पूर्ति के लिए यत्न करना तथा अरदास करना दोनों जरूरी हैं। इन दोनों में से किसी अकेले से मकसद हल नहीं होता। जब तक कोई व्यक्ति पूर्ण रूप में रूहानियत हासिल नहीं कर लेता या परमात्मा को हासिल करके उसकी रजा में रहना नहीं सीख जाता तब तक वह यत्न के बिना नहीं रह सकता, क्योंकि परमात्मा केवल उनकी ही मदद करता है जो अपनी मदद खुद करते हैं।

कोशिश किए बिना अरदास करना हमारी गंभीर भूल है। उदाहरणत: एक बच्चा यदि स्कूल जाने में लेट हो जाए और यदि वह सड़क के किनारे बैठकर अरदास करने लग जाए तो वह केवल समय की बर्बादी होगी। हां, हो सकता है कि यदि वह स्कूल से कुछ लेट भी हो जाए तो भी उसका अध्यापक उसे लेट आने पर माफ कर दे, क्योंकि उसने आने के लिए कोशिश तो की है। अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तीव्र भावना रखना तथा सख्त मेहनत करना ही वास्तव में सच्ची अरदास है। उद्देश्य की पूर्ति के लिए अरदास के साथ-साथ यत्न करना जरूरी है। वास्तव में जब किसी निष्कपट भाव से अपने मन्तव्य की पूर्ति के लिए अरदास करते हैं वह अरदास सच्चे दिल से, अंदर से, रोम-रोम में से निकलती है और हमेशा फलदायक होती है। हर तरह की परीक्षाओं एवं कष्टों में हमें चाहिए कि हमारे अंदर कमियों तथा कमजोरियों के कारण जो दोष पैदा हो गए हैं उनको दूर करने के लिए केवल प्रभु के आगे ही अरदास की जाए, क्योंकि मात्र वही हमें इन बंधनों से छुटकारा दिला सकता है। यही एक सच्चा ढंग है। गुरु साहिब फरमान करते हैं :

मै ताणु दीबाणु तूहै मेरे सुआमी मै तुधु आगै अरदासि ॥
मै होरु थाउ नाही जिसु पहि करउ बेनंती मेरा दुखु सुखु तुझ ही पासि ॥

(पन्ना ७३५)

अरदास के आवश्यक अंग

सच्चे हृदय से की गई अरदास कभी भी व्यर्थ नहीं जाती। दिल से निकली पुकार हमेशा सुनी जाती है, लेकिन इसकी पूर्ति कब और कैसे हो, यह परमात्मा की इच्छा पर निर्भर है। श्री गुरु अरजन देव जी फरमाते हैं :

बिरथी कदे न होवई जन की अरदासि ॥

(पन्ना ८१९)

अर्थात् भक्तों की प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं

जाती।

जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै ॥ *(पन्ना ४०३)*

अर्थात् सेवक जो कुछ भी अपने परमात्मा से मांगता है वह उसी वक्त हो जाता है।

नानक दास मुख ते जो बोलै ईहा ऊहा सचु होवै ॥ *(पन्ना ६८१)*

अर्थात् सत्यवादी तथा एकाग्रचित मनुष्य जो कुछ भी अपने भगवान से मांगता है वही हो जाता है और जो कुछ भी उच्चारता है सच हो जाता है।

गुरबाणी में आता है कि मालिक पिता ने एक हुक्म दिया है कि मेरे बच्चो! जो कुछ मुझसे मांगोगे मैं तुम्हें दूंगा :

पिता क्रिपालि आगिआ इह दीनी बारिकु मुखि मांगै सो देना ॥ *(पन्ना १२६६)*

अर्थात् पिता ने कृपालु होकर यह आज्ञा दी है कि बच्चा अपने मुंह से जो मांगेगा उसे मिलेगा।

यह आम देखने में आता है कि हमारे में से कोई जो अक्सर विनतियां करते हैं उन्हें कुछ मिलता नहीं, इसलिए हमें इस बात की अच्छी तरह जांच करनी चाहिए कि भगवान को किस तरह की अरदास अच्छी लगती है। यह विनती कैसे की जाए और क्यों सारी अरदासें प्रवान नहीं होतीं? अरदास की सफलता के लिए कुछ आवश्यक विचारबिंदु हैं, जैसे :

१. परमात्मा में पक्का विश्वास

परमात्मा में पक्का विश्वास सफलता का सबसे बड़ा कारण है। हम अपने आप को या अपने इर्द-गिर्द के लोगों को धोखा दे सकते हैं लेकिन अपने अंदर समायी प्रभु-शक्ति को धोखा नहीं दे सकते। अरदास करते समय प्राय: हम अधूरी दौड़ ही लगाते हैं। हम अपने मन, वचन एवं कर्मों में शुद्ध नहीं होते। साधारण रूप से इन तीनों में समानता नहीं होती। हम अपनी चतुराइयों, निपुणता एवं योग्यताओं पर बहुत विश्वास रखते हैं। हमें परमात्मा तथा उसकी शक्ति पर विश्वास ही नहीं होता। हमारी अरदास रूह की गहराइयों से नहीं होती। हमारी अरदास में विरह की पुकार न होकर केवल जल्दी-जल्दी दोहराये शब्दों का एक संग्रह ही रह जाता है। यह अरदास केवल जुबानी जमा-खर्च ही होता है, जिसकी गहराई चमड़ी की तह जितनी (तक) भी नहीं होती। यदि भाव हमारे दिल में से नहीं प्रक्ट हुआ तो उसका प्रभाव कैसे पड़ेगा? हमें इस चीज का एहसास होना चाहिए कि परमात्मा सबसे महान है और उसकी उदारता पर भरोसा होना चाहिए, क्योंकि वह हमारे सारे भीतरी विचारों तथा मन की क्रियाशीलता से भली-भांति परिचित है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी फरमाते हैं :

घट घट के अंतर की जानत ॥
भले बुरे की पीर पछानत ॥ *(चौपई)*

अर्थात् वह सबके दिलों का हाल जानता है तथा भले-बुरे सबकी पीड़ा को समझता है।

२. परमात्मा के आगे समर्पण

परमात्मा में विश्वास होने के साथ ही दूसरा विचारबिंदु यह है कि हमें उसके चरणों पर पूर्ण रूप में आत्मसमर्पण कर देना चाहिए। जब एक छोटा आपा (इंसान) बड़े में समा जाता है तो बड़ा (परमात्मा) अपने आप छोटे की खातिर काम करता है। इस प्रकार अरदास का प्रयोजन स्वत: ही पूर्ण हो जाता है :

मन जिउ अपुने प्रभ भावउ ॥
नीचहु नीचु नीचु अति नान्हा होइ गरीबु बुलावउ ॥ *(पन्ना ५२९)*

अर्थात् हे मन! तू प्रभु के स्वीकारने योग्य बन और उसके आगे अपने आप को नीचों से

भी नीच समझ।

३. *प्रभु के लिए प्यार*

प्रभु के लिए प्यार अरदास की सफलता का एक और जरूरी अंग है। इससे पहले कि हम उससे कुछ और मांगें, हमें उससे बिना मांगे मिली सौगातों के लिए शुक्रगुजार होना चाहिए तथा उनके अनुसार ही चलना चाहिए। हम हजारों बार उसके आगे झुकते हैं, लेकिन दुर्भाग्यवश उसके हुक्मों को गंभीरता से नहीं लेते और इस बात से अनभिज्ञ होते हैं कि परमात्मा तथा उसके हुक्मों में अंतर नहीं है।

४. *सही दृष्टिकोण*

सही दृष्टिकोण भी परमात्मा की रहमतों को पाने का एक और आवश्यक साधन है। मनुष्य और परमात्मा के सम्बंध में भी सही दृष्टिकोण होना चाहिए। इसके अलावा यदि हम चाहते हैं कि परमात्मा हमारे गुनाहों को क्षमा कर दे तो हमें भी दुनिया द्वारा की गलतियों को क्षमा करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

"जब अरदास के लिए खड़े होते हैं तो सारे मानवी गुनाहों को क्षमा कर देना चाहिए ताकि हमारा अरशी पिता हमारे गुनाहों को माफ कर दे।"

५. *परमात्मा का भय*

हम साधारणत: परमात्मा के भय में जिंदगी व्यतीत नहीं करते। वह हमारी आत्माओं की आत्मा है, लेकिन हम हठधर्मी से कुछ ऐसे काम गुप्त ढंग से करते हैं जैसे वह इनके बारे में जानता ही नहीं। एक छोटे बच्चे के सामने गलत काम करने से तो हम शमति हैं लेकिन वह शहंशाहों का शहंशाह, जो हमारे अंदर विराजमान है, जो न केवल हमारे कर्मों को देखता है बल्कि हमारे अर्ध-चेतन मन में छुपी उमंगों एवं रुझान से भी वाकिफ है, से कोई भय महसूस नहीं करते। केवल एक प्रभु के भय में रहकर हम सारे संसार के आगे निर्भय हो सकते हैं। दुर्भाग्यवश हम उस एक की बजाय आस-पास के छोटे-मोटे का भय अपने दिलों में ज्यादा बिठा लेते हैं। हमें तो दुखों एवं सुखों के समय उस परमात्मा के आगे ही अरदास करनी चाहिए। गुरबाणी का फरमान है:

जे सुखु देहि त तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई ॥ . . .
नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई ॥ *(पन्ना ७५७)*

६. *पवित्रता*

तन, मन और रूह की स्वच्छता परमात्मा के प्यार को जीतने का एक मुख्य कारण है। इसको तीन भागों में लिया जा सकता है, जैसे पश्चाताप, क्षमा एवं बुराइयों से परहेज।

(अ) पश्चाताप : इस संसार में कोई भी पूर्ण नहीं है। मनुष्य-मात्र होने के कारण प्रत्येक में कोई न कोई कमजोरी अवश्य होती है। मनुष्य में पाप का रुझान है। इंसान का मन काल-शक्ति का प्रतिनिधि है और यह हमेशा इंसान को परमात्मा से अलग करने का काम करता है। आम जिंदगी में हम कदम-कदम पर फिसल जाते हैं। दुनिया के भोगों, रसों के स्वाद में हमारे इरादे भी ढह-ढेरी हो जाते हैं। इसलिए यह सम्भव नहीं कि हम किसी सत्ता की मदद के बिना इस काल-शक्ति या उसके एजेंट भाव चलाक मन के छल, अर्द्ध-चेतन, मोह-जाल तथा वहशियाना जकड़ से बच सकें। केवल सतिगुरु की रक्षक भुजा ही हमें मन के इन भयंकर हमलों से बचा सकती है। हर समय जब हम उत्तेजनाओं का शिकार हो जाते हैं तो हमें अपनी कमजोरियों को समझना चाहिए तथा सच्चे हृदय से पश्चाताप करना चाहिए।

(आ) क्षमा : पश्चाताप चाहे अच्छा है लेकिन इससे बीते समय को बदला नहीं जा सकता। भूल-चूक में हुई प्रत्येक गलती मन पर अपनी एक अमिट छाप छोड़ जाती है जिसका परिणाम भुगतने के लिए हम अर्थात् हमारी आत्मा अकेली रह जाती है। इस प्रकार के अनगिनत कर्मों के संस्कार हमारे संचित कर्मों (ऐसे अनेक कर्मों का संग्रह जिनका फल भुगतना अभी शेष है) में दिनो-दिन वृद्धि करते हैं तथा कोई भी इस भारी बोझ से बच नहीं सकता, जिन्हें भुगतने के लिए हम लंबे रास्ते पर पड़ जाते हैं। इसका केवल एक ही ढंग है जो असल है। क्षमा के लिए अरदास करना ही पापी जीवों के पास एक हथियार है। पापियों तथा प्रत्येक के लिए यह एक आशा है। रूहानी ज्ञान के धारक जन पापियों तथा गुमराह लोगों को बचाने के लिए ही संसार में आते हैं। सतिगुरु की संगत ही कर्मों के बोझ को हल्का करने में मददगार है, जबकि सतिगुरु हमारी गलतियां बख्श देते हैं और साथ ही वे हमें आने वाले समय में इनसे परहेज करने का भी आदेश देते हैं। उनकी प्यार-भरी डांट यही होती है कि जाओ! आगे से पाप नहीं करना :

पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु आगै मारगि पावै ॥ *(पन्ना ६२४)*

(इ) बुराइयों से परहेज : पश्चाताप तथा क्षमा से जहां क्रिया-मान कर्मों (दिन-प्रतिदिन के कर्म) का नाश करने में मदद मिलती है वहां यह भी आवश्यक है कि आगे से ये बुराइयां दोहरायी न जाएं। कर्मों के बोझ की सफाई करने में कोई मदद तब तक सहायक नहीं हो सकती जब तक उन कर्मों की गति पर गतिरोध न लगाया जाए। हो सकता है कि किसी समय दंड-अधिकारी किसी गलती के लिए कम सजा दे दे लेकिन उससे अपराधी के चरित्र में उन्नति की आशा नहीं। सतिगुरु जहां बख्शिशों का भंडार है वहां वो यह सख्त चेतावनी भी देता है जो इंसान को बुरे कर्मों से परहेज करने में बहुत सहायक सिद्ध होती है। उसने प्रत्येक प्राणी के अंत:करण की सफाई करनी है, ताकि वह अपने निज-घर (परमात्मा के देश) जाने के योग्य हो जाये, ठीक उसी तरह जैसे एक शिल्पकार पत्थर की मूर्ति को सुंदर तथा ठीक रूप देने के लिए पत्थर को तराशता है।

संक्षेप में हम अपने सतिगुरु के आदेश की पालना करें तथा उसका ध्यान करते हुए सच्ची खुशी महसूस करें और दूसरा, हमें उसकी इच्छा समझते हुए केवल उन वस्तुओं के लिए ही अरदास करनी चाहिए जो उसे भाती हैं। तीसरा, हमें उसकी रजा में उसका सम्मान करते हुए सहर्ष अरदास करनी चाहिए।

आखिर में सबसे बढ़ कर प्यार ही है जहां जिंदगी सबसे ज्यादा बढ़ती-फूलती है। प्यार में हमेशा किसी को दिया जाता है, किसी के लिए कुछ किया जाता है, किसी से कोई आशा नहीं रखी जाती। पवित्र जिंदगी जीने से सभी ईश्वरीय रहमतें खुद मिलनी आरंभ हो जाती हैं। ईश्वर से प्यार हमारी सर्वप्रथम आवश्यकता है। हमें अपनी जिंदगी उसी के आगे समर्पित कर देनी चाहिए तथा उसका बंधुआ-गुलाम बन जाना चाहिए। उसकी हजूरी में रहना ही एक वरदान है तथा इससे बढ़कर और कोई वरदान नहीं हो सकता। गुरु साहिब फरमाते हैं :

जे गुरु झिड़के त मीठा लागै जे बखसे त गुर वडिआई ॥ *(पन्ना ७५८)*

सचु तेरा दरबारा

-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ*

सिक्ख गुरु साहिबान ने सच को पूरी पारदर्शिता के साथ सामने रखा ताकि ज्ञान देने वाले और ज्ञान प्राप्त करने वाले में कोई अंतर न रहे। ज्ञान प्राप्त करने वाला ज्ञान के उस स्तर तक पहुंच सके जहां ज्ञान देने वाला अर्थात् 'गुरु' है। इसमें गुरु साहिबान की परम महानता के दर्शन होते हैं और सच की महिमा अतुलनीय हो जाती है। *'आपे गुर चेला'* का सिद्धांत भी इसी परम महानता के कारण ही साकार होकर सामने आ पाया और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी स्वयं पांच प्यारों से अमृत-पान करने की याचना करते हुए अपनी आत्मिक उच्चता की पराकाष्ठा सामने रख सके। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सच के जिस स्वरूप के दर्शन होते हैं उसमें न तो किसी संशय की संभावना शेष रहती है और न ही किसी तर्क का कारण उभरता है। परम शक्ति एक ही है और किसी भी स्तर पर अन्य कोई शक्ति है ही नहीं। यह समझ में आ जाये, इसे विस्तार से विश्लेषित किया गया है। शक्ति एक है, इतना मान लेना ही पर्याप्त नहीं है, इसलिये गुरु साहिबान ने कहा कि सारे संसार की रचना करने वाली भी वही शक्ति है और वही सूत्रधार है।

आपे तखतु रचाइओनु आकास पताला ॥
हुकमे धरती साजीअनु सची धरम साला ॥
आपि उपाइ खपाइदा सचे दीन दइआला ॥
सभना रिजकु संबाहिदा तेरा हुकमु निराला ॥
आपे आपि वरतदा आपे प्रतिपाला ॥ (पन्ना ७८५)

यहां सच के दो आयाम साथ-साथ चलते दिखाई देते हैं। परमात्मा कोई ऐसा रचनाकार नहीं है जिसने एक रचना रच दी और कर्त्तव्य-मुक्त होकर बैठ गया। ऐसा भी नहीं है कि उसने कुछ अंश बनाया हो और कुछ स्वयं उत्पन्न हो गया। यह भी नहीं है कि उसने एक बार सब कुछ सृजित कर दिया। उस अकाल पुरख ने ही धरती बनाई, आकाश और पाताल भी बनाया। ब्रह्मांड के इन तीन स्तरों की कल्पना ही हम कर सकते हैं और यही हमारी दृष्टि में भी है। जो भी रचित हुआ है और अस्तित्व में था अथवा है उसका रचयिता एक वही है, इसलिये उसे करता पुरख भी कहा जाता है। करता पुरख का क्या अर्थ है और किन परिस्थितियों में वह करता पुरख है यह बात श्री गुरु अमरदास जी के निर्मल वचनों में स्पष्ट होती है :

आपणा आपु उपाइओनु तदहु होरु न कोई ॥
मता मसूरति आपि करे जो करे सु होई ॥
तदहु आकासु न पातालु है ना त्रै लोई ॥
तदहु आपे आपि निरंकारु है ना ओपति होई ॥
जिउ तिसु भावै तिवै करे तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ (पन्ना ५०९)

परमात्मा का अस्तित्व स्वयं से है। वह स्वयं उत्पन्न है। उसे किसी ने उत्पन्न नहीं किया। जब परमात्मा था उस समय कोई और नहीं था। एक मात्र अस्तित्व परमात्मा का ही था। उसने स्वयं ही अपने आप से विचार-

*E-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो: ९४१५९-६०५३३

विमर्श किया, योजना तैयार की और अपने मनोनुकूल इस सृष्टि की रचना की। उसे जो कुछ और जैसा अच्छा लगा उसने वैसी ही रचना बनायी। इससे सर्वश्रेष्ठ स्थिति कोई हो ही नहीं सकती और इस श्रेष्ठता का तो कोई अंत ही नहीं है :

अति ऊचा ता का दरबारा ॥
अंतु नाही किछु पारावारा ॥
कोटि कोटि कोटि लख धावै ॥
इकु तिलु ता का महलु न पावै ॥ (पन्ना ५६२)

करता पुरख की श्रेष्ठता के समक्ष सब फीका है। मनुष्य कितनी भी बौद्धिक ऊर्जा व्यय कर ले उसकी श्रेष्ठता का अनुभव प्राप्त नहीं कर सकता। उसने जो किया है उसे शब्दों में कहा ही नहीं जा सकता :

जे को कहै करै वीचारु ॥
करते कै करणै नाही सुमारु ॥ (पन्ना ३)

उसने अद्भुत रूप से इस सृष्टि की रचना की और ऐसे कितने ही आकाश, पाताल बनाये। इस अद्भुत विस्तार को भी परमात्मा ने सच का ही आधार दिया, जैसा कि भाई गुरदास जी ने अपनी वार में निरूपण किया है:

सचा सिरजणिहारु सचि समाइआ।
सचहु पउणु उपाइ घटि घटि छाइआ।
पवणहु पाणी साजि सीसु निवाइआ।
तुलहा धरति बणाइ नीर तराइआ।
नीरहु उपजी अगि वणखंडु छाइआ।
अगी होदी बिरखु सुफल फलाइआ।
पउणु पाणी बैसंतरु मेलि मिलाइआ।
आदि पुरखु आदेसु खेलु रचाइआ ॥
(वार २२:४)

उस आदि सच ने अपने सच को अपनी रचना में प्रसारित किया। सच से ही उसने वायु उत्पन्न करके अपनी समस्त रचना में समाहित कर दिया। वायु से जल को उत्पन्न करके उसे सर्व उपलब्ध बनाया। जल के संचरण के लिये उसने धरती बनाई और धरती को जल के ऊपर टिका दिया। जल से अग्नि की उत्पत्ति की और जल के सिंचन से पेड़-पौधे हरे-भरे हो गये। वृक्षों में अग्नि का वास है किन्तु वे फलते-फूलते जल से ही हैं। यह कौतुक परमात्मा ही कर सकता है कि उसने जल, अग्नि, वायु जैसे परस्पर विरोधी तत्वों को एक कर उनमें भली-भांति सामंजस्य स्थापित कर दिया। इसी कौतुक के कारण ही सृष्टि में स्थापित्व आया और वह युगों से चलती आ रही है। सच से उत्पन्न हुए इस संयोग के कारण ही सृष्टि का यह अद्भुत रूप बना है।

करता पुरख ने इस सृष्टि की रचना की है तो उसके रूप को भी पूरी तरह सजाया-संवारा और इस योग्य बनाया कि मनुष्य धर्म का अनुशीलन करते हुए जीवन-यापन कर सके। सृष्टि उन सभी गुणों से भरपूर है जिनसे मनुष्य के जीवन की सारी आवश्यकताएं मूल रूप से पूरी हो सकें। इसके अतिरिक्त सृष्टि के माध्यम से ऐसे संकेत देने का भी प्रबंध किया कि मनुष्य उन संकेतों को समझते हुए सदैव सच के मार्ग पर चलता रहे और धर्म का अवलंबन कभी न छोड़े। सबसे बड़ा संकेत है सृजन और विनाश का जो सदैव जीवन की प्रासंगिकता की ओर ध्यान दिलाता रहता है ताकि मनुष्य सचेत रहे :

साचा सचु सोई अवरु न कोई ॥
जिनि सिरजी तिन ही फुनि गोई ॥
(पन्ना १०२०)

एक परमात्मा ही सच है, स्थिर है, निरंतर है, अविनाशी है। दूसरा कोई भी ऐसा नहीं है और दूसरा कोई भी सच नहीं है। वही

सृजन कर रहा है और फिर अपनी रचना का विनाश भी कर रहा है :

आपे दाना आपे बीना ॥
आपे आपु उपाइ पतीना ॥ (पन्ना १०२०)

वही ज्ञानवान है, वही पालन-पोषण करने वाला है जो बड़ी प्रसन्नता से इस सृष्टि का संचालन कर रहा है। जो भी कार्य प्रसन्नता से किया जाता है वह सर्वश्रेष्ठ होता है। सृष्टि का आधार सच है इसलिये सच प्रसन्नता प्रदान करने वाला हुआ और परमात्मा आनंददाता हुआ। उसकी उत्पत्ति में भी सच है और विनाश में भी सच है। इस तरह दोनों ही स्थितियां प्रसन्नता प्रदान करने वाली हुईं, किन्तु विनाश से प्रसन्नता अथवा उसे सहर्ष स्वीकार करने की योग्यता सच द्वारा परमात्मा से जुड़ कर ही प्राप्त होती है। परमात्मा से जुड़ने पर उसका सच और उसका आनंद संचरित होकर हमारी आत्मा को समृद्ध करता है :

आपे कुदरति करे साजि ॥
सचु आपि निबेड़े राजु राजि ॥
गुरमति ऊतम संगि साथि ॥
हरि नामु रसाइणु सहजि आथि ॥ (पन्ना ११७०)

परमात्मा अपने मत के अनसुार सृष्टि को शोभायमान करके उसमें सच की सत्ता चला रहा है। मनुष्य जब सदबुद्धि से सच के इस राज की अधीनता स्वीकार कर लेता है तो सच की उपमा और परमात्मा की महानता स्वयं ही उसके हृदय में समाहित हो जाती है। सुख इसी अवस्था में है जो मनुष्य को सहज भाव प्रदान करता है अन्यथा दुख ही है :

हरि बिनु किउ रहीऐ दुखु बिआपै ॥
जिहवा सादु न फीकी रस बिनु बिनु प्रभ कालु संतापै ॥ (पन्ना ११९७)

सच के बिना जीवन रसहीन है, जीवन का अर्थ ही नहीं रह जाता। जीवन का अर्थ उस सच को जानने में है जो करता पुरख की सत्ता का आधार है, जिससे सृष्टि संचालित हो रही है। परमात्मा से जुड़ने और आनंद प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग उसकी कृपा ही है :

तिना अनंदु सदा सुखु है जिना सचु नामु आधारु ॥
गुर सबदी सचु पाइआ दूख निवारणहारु ॥
सदा सदा साचे गुण गावहि साचै नाइ पिआरु ॥
किरपा करि कै आपणी दितोनु भगति भंडारु ॥
(पन्ना ३६)

करता पुरख ने जिस चाव से इस सृष्टि की रचना की है उसी चाव से हम सृष्टि को स्वीकार करें :

आपीन्है आपु साजिओ आपीनै रचिओ नाउ ॥
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥
(पन्ना ४६३)

परमात्मा और मनुष्य जब समान भाव धारण करते हैं तो आनंद स्वाभाविक है। सच-भाव परमात्मा का है और मनुष्य को उसे ग्रहण करना है, उसकी रचना के सच को ग्रहण करना है :

सचु तेरी सामगरी सचु तेरा दरबारा ॥
सचु तेरे खाजीनिआ सचु तेरा पासारा ॥
(पन्ना ७४६)

सिक्ख कौम का गौरव एवं सम्मान बहाल रखा जाए!

-स. ओंकार सिंघ*

बहलोल लोधी, सिकंदर लोधी, इब्राहिम लोधी एवं बाबर जैसे लोधी और मुगल आक्रांताओं द्वारा निरीह जनता पर किये अत्याचार को श्री गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन में देखा, परखा एवं महसूस किया। हिंदू लोगों को अकथनीय कष्टों में से गुजरना पड़ा, उनके धर्म-स्थान तोड़े गए और उनका बलात् धर्म परिवर्तन किया गया। जजिया कर लगाकर उन्हें तीसरे दर्जे का नागरिक एवं काफिर समझ कर मारा। उन्हें लूटना एवं मारना पुण्य का काम है, इससे हमें जन्नत मिलेगी, जहां बस आनंद ही आनंद है, ऐसा ये सुलतान सोचते थे। गैर मुस्लिम संप्रदायों की संस्कृति, धर्म और जीवन-पद्धति का उपहास किया जाता था। आम जनता गुलामों जैसा जीवन जीती थी। बलात् धर्म परिवर्तन तो रोज की बात थी।

श्री गुरु नानक देव जी ने स्वयं अपने समय की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों का पुरजोर विरोध किया :

"यह कलयुग छुरी के समान है, राजे कसाई हो गये हैं, धर्म पंख लगाकर उड़ गया है, झूठ की अमावस्या चारों ओर छाई हुई है। सच का चंद्रमा कहीं दिखाई नहीं देता। मैं उस सच रूपी चंद्रमा को ढूंढ-ढूंढ कर व्याकुल हो गया हूं, अंधेरे में कोई राह नहीं सूझती। अहंकार के कारण सृष्टि दुखी होकर रो रही है।"

जहांगीर और औरंगजेब द्वारा बलात् धर्म परिवर्तन के दंभ को श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी शहादत देकर चकनाचूर किया। श्री गुरु नानक देव जी से लेकर दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक (२३९ वर्ष गुरु-काल में) सभी गुरु साहिबान ने मुगल साम्रज्य की धर्मान्धता से पनपे सामाजिक-धार्मिक आडंबर, झूठ-फरेब युक्त जीवनशैली, जात-पात, ऊंच-नीच जैसी सामाजिक, धार्मिक कट्टरता और अराजकता के खिलाफ जागृति पैदा की। लोगों को एकजुट होकर, सेवा, प्रेम और सद्भावना युक्त कर्म-प्रधान जीवन जीने हेतु प्रेरित किया।

इसके बाद सिक्ख शूरवीरों की शहादत का लंबा दौर, बाबा बंदा सिंघ बहादर से लेकर महाराजा रणजीत सिंघ तक चला। जब तक शेरे-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ जिंदा रहे अंग्रेज पंजाब से दूर रहे। इस दौरान सिक्खों ने न केवल अपना अस्तित्व बनाए रखा बल्कि गरीब, असहाय और पिछड़ी जातियों को उनके अधिकारों के प्रति सुचेत भी किया। सिक्खों में देश के प्रति बलिदान का सिलसिला मुल्क की आजादी और पाकिस्तान व चीन-युद्ध तक कायम रहा और आज भी है। इस दौरान नामधारी बाबा राम सिंघ जी, सरदार करतार सिंघ सराभा, शहीदे-आजम सरदार भगत सिंघ, सरदार ऊधम सिंघ जैसे अनेकों सिक्ख शहीद हुए। सिक्खों के ५४१ वर्ष के इतिहास में देश की अखंडता और परस्पर सौहार्द बनाये रखने के लिये उनके बलिदान की यदि चर्चा करें तो

*६-क-१०, जवाहर नगर, जयपुर(राजस्थान)-३०२००४, मो: ९९८२२२२६०६

किसी देश-भक्त सिक्ख प्रेमी को हजारों पन्नों का ग्रंथ लिखना पड़ेगा। संकेतात्मक इतना ही पर्याप्त है कि सिक्खों की २ प्रतिशत आबादी ने देश की कुल शहादत में ४० प्रतिशत हिस्सेदारी निभाई है।

सिक्ख कौम को शहादत की चाह गुरु साहिबान की अमृत-रूपी बाणी से मिली है जिसमें शीश को हथेली पर रख कर चलना सिखाया गया है :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने शूरवीरता का ऐसा जज्बा जगाया कि अल्पसंख्या का भय सिक्खों के दिलों में से हमेशा के लिए निकल गया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित भक्त कबीर जी के इस पावन वचन को सत्यवादी सिक्ख एक आदेश की तरह आज भी धारण किए हुए हैं :

सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥
(पन्ना ११०५)

सिक्खों ने अपने त्यागमय इतिहास में देश के लिए कितनी कुर्बानियां दीं इन सबको अनदेखा करके दिल्ली सहित देश के कई शहरों में राह चलते सिक्खों को गले में टायर डाल जला दिया और देखते ही देखते हजारों बेकसूर सिक्खों को उन्हीं के घरों में परिजनों के सम्मुख जिंदा जला दिया या काट दिया गया। ऐसी निर्मम हत्याएं आजाद भारत में पहले कभी नहीं हुईं थीं। नवंबर, १९८४ के सिक्ख कत्लेआम को 'दंगों' का नाम देकर सिक्खों की मानसिकता को और भी आघात पहुंचाया जा रहा है।

आजाद मुल्क की एक राजनीतिक पार्टी द्वारा प्रायोजित हत्याकांड ने मानवता को ही कलंकित कर दिया। ऐसी प्रतिक्रिया विश्व के कई राजनेताओं, धर्म-गुरुओं, बुद्धिजीवियों एवं लेखकों ने व्यक्त की है।

दोषियों को सजा दिलवाने हेतु १९८४ से अब तक कितने आयोग बने, कितनी जांच-पड़तालें हुईं, मगर परिणाम क्या आया? शून्य। आयोगों का क्या हश्र हुआ? कितनों को सजा हुई? कितने बरी हुए? हम सब जानते हैं।

सिक्ख, राष्ट्र के लिये भार नहीं बल्कि राष्ट्र का भार अपने कंधों पर उठाने के लिए सदैव तत्पर एवं सक्षम रहे हैं और अब भी हैं। यदि किसी को इसकी जानकारी नहीं तो वह सिक्खों का इतिहास, संस्कृति और गुरबाणी पढ़कर जान सकता है। सिक्खों ने जो कुछ भी किया देश और मानव जाति की रक्षा के लिए किया। सिक्ख तो स्वयं ही बलिदान का पर्याय हैं। हम निष्काम सेवक और सिपाही हैं। हमें किसी फोकट सहानुभूति या दया की जरूरत नहीं। हम दशमेश पिता के जुझारू सिक्ख अपना हक लेना जानते हैं। अत: हर सूरते-हाल में सिक्ख कौम का गौरव एवं सम्मान बहाल रखा जाए। सारे देश के लिए यही हितकारी है।
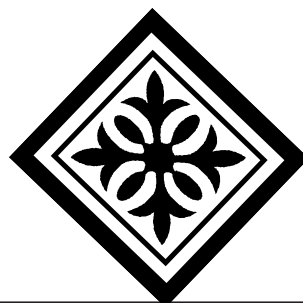
जीवन में सफलता प्राप्ति का रहस्य

-डॉ. सुनील कुमार*

दृढ़ निश्चय, आत्म-विश्वास तथा संकल्प का हमारे जीवन की सफलताओं से गहरा संबंध है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का कथन है :

न डरों अरि सों जब जाइ लरों,
निसचै करि अपुनी जीत करों ॥

नेपोलियन ने कहा था कि सोच सफलता का शुरुआती बिन्दु है। जिस तरह छोटी-सी आग से कम गर्माहट मिलती है उसी तरह कमजोर सोच से कमजोर परिणाम मिलते हैं। मनुष्य परमात्मा की उत्कृष्ट रचना है। उसने मनुष्यों को क्षमताओं से निवाजा है लेकिन हमें अपनी हरेक क्षमता को सही रूप में उपयोग में लाना होता है। किसी ने कहा है कि हमारी सोच ही हमारे भाग्य का निर्माण करती है। सच ही कहा गया है कि यदि आप कुछ सोच सकते हैं तो उसे कर भी सकते हैं, क्योंकि

आप वो हैं जो आपकी गहन इच्छा है।
जैसी आपकी इच्छा है, वैसी आपकी आकांक्षा है।
जैसी आपकी आकांक्षा है, वैसा आपका कर्म है।
जैसा आपका कर्म है, वैसा आपका भाग्य है।

सबसे पहले हम यह जानें कि हम जीवन में क्या बनना चाहते हैं। यदि हम यह नहीं जानते तब उसे प्राप्त करने का प्रश्न ही नहीं उठता। इसके लिए हमको एक निश्चित लक्ष्य या प्रयोजन का निर्धारण अवश्य करना चाहिए। हम अपना दृष्टिकोण, स्वप्न, इच्छा, योग्यता, कौशल, ज्ञान और आवश्यकताओं के अनुसार अपने लक्ष्य का निर्धारण करें। हम सितारों जैसा ऊंचा तथा निर्मल अपना लक्ष्य बनाएं और उन तक पहुंचने का प्रयास करें। हमारे लक्ष्य मात्र सांसारिक तथा छोटे स्तर के नहीं होने चाहिएं। वैसे भी जो साहसी होते हैं वे ऐसा कर भी सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों के लिए लक्ष्य की कोई सीमा नहीं होती। हम साहसी व निर्भय बनें और समस्त चुनौतियों का सामना करते हुए अपने जिम्मे लगा हरेक काम पूरा करें। कुछ भी असंभव नहीं है, कोई बाधा ऐसी नहीं है जिसे पार करना असंभव हो। यदि हम दृढ़ निश्चय कर लें और उस पर चट्टान की तरह अडिग रहें तो हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचने और उसमें सफलता प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता। आशा और विश्वास के साथ अपने दृष्टिकोण को नियंत्रित करें। छोटी-छोटी बातों को सोचने के बजाए अपने दृष्टिकोण को व्यापक बनाएं। हम आगे की ओर देखें और अपने कार्य को सुनियोजित करें। हम याद रखें कि यदि हम योजना बनाने में असफल होते हैं तो हम असफल होने के लिए योजना बनाते हैं। एक बार लक्ष्य निर्धारित करने के बाद हम न तो किसी अनिश्चय में पड़े, न ही हिचकिचाएं और लक्ष्य की प्राप्ति तक निरंतर लगे रहें। हो सकता है कि हमारी महत्वाकांक्षाएं प्रारंभ में एक हवाई किले की तरह प्रतीत हों, पर हम इस सम्बंध में न डरें और न चिंतित होवें। जो हमको आज असंभव दिखाई दे रहा है वह कल हमारे

*सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, श्री अमृतसर।

विश्वास, दृढ़ निश्चय, समर्पण-भाव और कठिन परिश्रम के बल पर साकार हो सकता है। आज महत्वपूर्ण प्रतीत होने वाली उपलब्धियां पहले मात्र कल्पनाएं ही थीं। नि:संदेह सबसे महत्वपूर्ण यह है कि हम कितना परिश्रम करते हैं और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कितने क्रियाशील हैं। जीवन में हमारी अभिवृत्ति यह निर्धारित करती है कि हम कितनी ऊंचाई तक जाएंगे? अत: यदि हमारी अभिवृत्ति सकारात्मक है तो हम अपने जीवन में नई ऊंचाइयों को छू पाएंगे। सकारात्मक विचार सकारात्मक अभिवृत्ति उत्पन्न करते हैं और यही अभिवृत्ति सकारात्मक परिणाम प्रदान करती है। मानव-जाति कई मायनों में अति विशिष्ट है। हमारी एक विशेषता है कि हमारा मस्तिष्क विचारों का चयन करने में सक्षम है, इसलिए हम सदा सकारात्मक सोचें। यदि हम सोचते हैं कि हम यह कार्य कर सकते हैं तो अवश्य कर पाएंगे। हम स्वयं को लक्ष्य के रास्ते से विचलित होने देने वाले किसी नकारात्मक विचार को मन में न आने दें। ये स्वचालित नकारात्मक विचार नाभिकीय अस्त्र से भी ज्यादा खतरनाक हैं, इसलिए हमको इनके प्रति सुचेत रहना चाहिए। यदि हम सकारात्मक विचार बोते हैं, सकारात्मक कार्य करते हैं तो हम अच्छी फसल भी अवश्य काटेंगे। हमेशा छोटे प्रयास से शुरू करें, क्योंकि हजारों मीलों की यात्रा पहले एक छोटे-से कदम से ही शुरू होती है। हम हमेशा याद रखें :

नींद कहां उनकी आंखों में, जो धुन के मतवाले हैं।
गति की तृष्णा और बढ़ती, जब पड़ते पांव में छाले हैं।

हमें तन, मन और धन से भी परोपकार करना चाहिए। हमें अधिक से अधिक विद्या प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। विद्वान होना राजा होने से भी अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि राजा सिर्फ अपने देश में पूजा जाता है और विद्वान सब जगह।

यह अपना है, पराया है, ऐसी भावना तो छोटे हृदय वालों में होती है। उदार चरित्र वाले तो पूरी पृथ्वी को ही परिवार मानते हैं :

सभु को मीतु हम आपन कीना
हम सभना के साजन ॥ *(पन्ना ६७१)*

आपका पत्र मिला

श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन की लालसा है!

पत्रिका 'गुरमति ज्ञान' में मेरी कविता "गुरुद्वारा" देखकर मेरा मन खुशी से गदगद हुआ। मेरी हजारों कविताओं में "गुरुद्वारा" मेरी पहली रचना है जो किसी पत्रिका में छपी है। इसके लिये मैं वाहिगुरु को धन्यवाद प्रगट कर आप तथा 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका से जुड़े प्रत्येक सदस्य का आभार प्रगट करता हूं।

मेरा मन करता है कि मैं सिक्ख समाज को अपनी भरपूर सेवाएं दूं। परम आदरणीय गुरु साहिबान की जीवन-गाथा को अपनी लेखनी से काव्यमय स्वरूप दूं, सिक्ख समाज की सेवा कर वाहिगुरु कृपा प्रसाद पाऊं। सम्पूर्ण सिक्ख समाज का प्यार पाऊं।

पावन श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन की लालसा है, बेरोजगारी के कारण धनाभाव के रहते फिलहाल तो यह कठिन दिखता है। लेकिन मुझे पूरा भरोसा है कि मेरी यह लालसा अवश्य पूरी होगी।

-संजय बाजपेयी रोहितास, हरदोई (उ. प्र.)

गुरबाणी राग परिचय : २८

नाउ प्रभातै सबदि धिआईऐ

*-स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बाणी राग क्रमांक में राग प्रभाती ३० पर पन्ना १३२७ से पन्ना १३५१ तक २५ पन्नों में अंकित है। श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा संपादन के अनुसार राग प्रभाती अंतिम राग था तथा बाद में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने राग जैजावंती का अंकन किया। राग प्रभाती में श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरबाणी के संदेश के केन्द्रीय भाव नाम-साधना तथा सतिगुरु-महिमा को महत्व दिया है। राग की प्रथम पंक्ति *"नाइ तेरै तरणा नाइ पति पूज"* है तथा राग का समापन *"बिनु सतिगुर बाट न पावै"* से किया गया है।

यह गुरमति संगीत के अन्तर्गत भैरउ ठाठ का राग है। इसके आरोह और अवरोह में 'म' स्वर वर्जित है। वादी स्वर पंचम है। गायन का समय प्रात: काल है :

जब भैरउ के ठाठ मे मधम दई हटाइ।
पा वादी संवाद सा प्रभाती कहलाइ।

प्रभाती राग की बाणी में राग बिभास की बाणी का भी अंकन है। इस राग में 'मा' और 'नी' दो सुर वर्जित हैं। इसका वादी सुर धैवत है। गायन का समय प्रात: काल है।

जब भैरउ के ठाठ में मा नी सुर न लगाइ।
धा वादी संवाद गा राग बिभास कहाइ।

राग प्रभाती में नाम-साधना के विविध पक्षों को शबदों और असटपदियों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इस राग में छंद और वारों के रूप में बाणी अंकित नहीं है। मुख्य बाणी श्री गुरु नानक देव जी की है। श्री गुरु नानक देव जी के विचारों को सरल रूप में श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी तथा श्री गुरु अरजन देव जी ने व्याख्यायित किया है। राग के अंत में भक्त-बाणी के अन्तर्गत तीन मुख्य भक्त--भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी तथा भक्त बेणी जी के कुल ९ शबद हैं।

श्री गुरु नानक देव जी के १२ शबदों के पहले ७ शबदों में नाम-महिमा, सतिगुरु के उपदेश का वर्णन है, जिसका समापन प्रभु से नाम-दान प्राप्ति से किया गया है। सभी शबदों की पंक्तियां लघु और सूक्ति रूप में हैं। नाम-महिमा के प्रथम दो शबद एक इकाई के रूप में हैं। प्रभु का नाम हमारे जीवन की शोभा 'गहना' है और शुभ मति अंतिम लक्ष्य 'मकसद'। सभी चतुराई बाहरी दिखावा (पाज) हैं। वही व्यक्ति भाग्यशाली है जिस पर प्रभु-कृपा से नाम की बख्शिश होती है :

अवर सिआणप सगली पाजु ॥
जै बखसे तै पूरा काजु ॥ (पन्ना १३२७)

प्रभु का नाम रत्न है। हमारा हृदय प्रभु-कृपा और नाम-सिमरन के प्रकाश से आलोकित होता है जिससे अंधकार का नाश होता है। संसार का बाहरी दृश्यमान रूप परिवर्तनशील है। संसार के मोह ज्वर की औषधि प्रभु का नाम है। सृष्टि का निर्माता असीम प्रभु ही है:

इहु संसारु सगल बिकारु ॥
तेरा नामु दारू अवरु नासति करणहारु

*C-127, Guru Teg Bahadar Nagar, Allahabad-211016

अपारु ॥ *(पन्ना १३२७)*

'नाम' के स्वरूप की व्याख्या अगले शबद (३) में की गई है। 'नाम' प्रभु के निर्गुण स्वरूप 'सत्य' का परिचायक है जिसकी आराधना ब्रह्मा और शिव करते हैं। सच्चे मन से सत्य की आराधना से जीव जन्म-मरण के बंधन से छूट कर सत्य स्वरूप हो जाता है। सत्य के सहज तत्व की व्याख्या विविध निषेध के लक्षणों से की गई है: *"जा कै रूपु नाही जाति नाही नाही मुखु मासा ॥"* जीव प्रभु का अंश है। बुद्धि की प्राप्ति से अपने स्वरूप को जान कर परम तत्व का अनुभव होता है :

तंत कउ परम तंतु मिलिआ नानका बुधि पाई ॥ *(पन्ना १३२८)*

परम तत्व का अनुभव होने पर मनुष्य में सम रस बुद्धि का विकास होता है। उसे सभी में समाए प्रभु का दर्शन होता है। विष और अमृत दोनों प्रभु की देन हैं। अमृत-नाम प्राप्त सतिगुरु दूसरों को भी नाम दान करता है। ज्ञान ज्योति से अहंकार नष्ट हो जाता है। वास्तव में गुरु नाम-अमृत से मलिन जीव का प्रक्षालन करता है और दुरमति की मैल दूर करता है। गुरु उपदेश से पूरा स्नान होता है। प्रभु के प्रेम में अनुरक्त गुरु का हृदय चंदन के समान सुगंधमय होता है, जिसकी महक से सभी वनस्पति (सम्पर्क में आने वाले प्राणी) प्रभु-चरणों में लीन होकर जीवन सुधार लेते हैं :

रता सचि नामि तल हीअलु सो गुरु परमलु कहीऐ ॥
जा की वासु बनासपति सउरै तासु चरण लिव रहीऐ ॥ *(पन्ना १३२९)*

गुरु नानक साहिब नाम-महिमा की व्याख्या के संदर्भ में स्पष्ट करते हैं कि नाम कोई इकांगी धारणा नहीं बल्कि प्रभु से आध्यात्मिक और नैतिक गुणों की प्राप्ति है, जिस का सेवन करना है। प्रभु यजमान है जिससे नाम दक्षिणा की याचना की गई है। जिस प्रकार यज्ञोपवीत के समय गुरु नानक साहिब ने विविध गुणों से निर्मित जनेऊ को धारण करने की मांग की थी उसी प्रकार दक्षिणा में भी नाम-साधना का समन्वित रूप प्रस्तुत किया गया है। दक्षिणा की पत्तल पर सामग्री का विवरण निम्न प्रकार है:

जतु सतु चावल दइआ कणक करि प्रापति पाती धानु ॥
दूधु करमु संतोखु घीउ करि ऐसा मांगउ दानु ॥
(पन्ना १३२९)

राग प्रभाती में गुरु नानक साहिब के शबदों का उत्तरार्द्ध शबद ८ से १७ तक है। इसमें नाम-साधना के व्यवहारिक पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। आरंभिक शबद में मानव-जीवन के सम्बंध में तात्विक चिंतन है। जीवन का अस्तित्व प्रभु की रजा के अधीन है:

तूहै है वाहु तेरी रजाइ ॥
जो किछु करहि सोई परु होइबा
अवरु न करणा जाइ ॥ *(पन्ना १३२९)*

जीवन के इस जन्म-मरण के गूढ़ रहस्य को रहट के प्रतीक के साथ स्पष्ट किया गया है। रहट में सिंचाई की क्रिया के कई स्तर हैं। रहट की बाल्टी में पानी भरता है, पुन: ऊपर आकर पनाले में पात्र खाली हो जाता है। जल स्वरूप 'चेतन' मानव-शरीर में प्रवेश करता है, पुन: अवसान को प्राप्त होता है। रहट की माला में पानी का भरना रहट की यांत्रिका से संचालित है और रहट की चरखी बैल की वृत्ताकार गति के अधीन है। रहट की सम्पूर्ण प्रक्रिया मानव-जीवन के रहस्यों का सरलीकृत रूप है। जीवन का उद्गम-अवसान दृष्टिगोचर नहीं होता :

आवतु किनै न राखिआ जावतु किउ राखिआ जाइ ॥
जिस ते होआ सोई परु जाणै जां उस ही माहि समाइ ॥ . . .
जैसे हरहट की माला टिंड लगत है इक सखनी होर फेर भरीअत है ॥
तैसो ही इहु खेलु खसम का जिउ उस की वडिआई ॥ *(पन्ना १३२९)*

मानव-जीवन के खेल की सार्थकता क्या है? गुरु नानक साहिब इसका उत्तर 'सिद्ध गोसटि' में चरपट को दे चुके हैं। नाम और सिमरन से जन्म-मरण के सागर को पार किया जा सकता है। वर्तमान शबद में ब्रह्मज्ञानी को सम्बोधित करते हुए अपने संदेश को स्पष्ट करते हैं। गृहस्थ और सन्यासी के बाहरी वेष को छोड़कर साधक को प्रभु के सिमरन के मार्ग पर चलना होगा। प्रभु की कृपा, उसकी दृष्टि विकारों से हटकर प्रकाशित होगी। हो सकता है कि मानव तृष्णा का निर्मूल उच्छेदन न हो सके। ऐसी दशा में अहंता भाव को त्याग प्रभु के द्वारा दी गई आशा को प्रभु को सौंप जीवन-मुक्त हो सकते हैं :

सुरती कै मारगि चलि कै उलटी नदरि प्रगासी ॥
मनि वीचारि देखु ब्रहम गिआनी कउनु गिरही कउनु उदासी ॥
जिस की आसा तिस ही सउपि कै एहु रहिआ निरबाणु ॥
जिस ते होआ सोई करि मानिआ नानक गिरही उदासी सो परवाणु ॥ *(पन्ना १३२९)*

नाम-साधना में मन की भूमिका महत्वपूर्ण है। जब गुरु-उपदेश से विकार दूर हो जाते हैं तो मन हृदय-नगर का शिष्ट नागरिक होकर शीतल हो जाता है। मनुष्य की जाति या सम्मान कर्ज पर आधारित है :

सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥
जनम मरन दुखु कटीऐ नानक छूटसि नाइ ॥
(पन्ना १३३०)

गुरबाणी में नाम-साधना के यथार्थ धरातल को भी स्वीकार किया गया है। जीवन देने वाला परमात्मा सदैव जागृत है। उसके भंडार में परम सुख है किन्तु जीव गुरु-उपदेश न मान कर अज्ञान के अंधकार में डूबा रहता है और विकृत कर्म करता है। जागृत अवस्था में भी यह जीव अंधा बना हुआ है और लूटे जाने पर खुश हो रहा है। गले में मोह का फंदा है। वह आशाएं लेकर पैदा होता है और मन में इच्छाएं रखकर विदा होता है। मानव-जीवन का ताना-बाना प्रभु की कृपा (करम) तथा मनुष्य के शुभ कर्म के अभाव में उलझ गया है :

उरझी ताणी किछु न बसाइ ॥ (पन्ना १३३०)

ऐसे विषय-जाल में फंसा मन हरि-नाम के साबुन-जल से धुल कर उज्जवल हो जाता है:

बाबा ऐसा बिखम जालि मनु वासिआ ॥
बिबलु झागि सहजि परगासिआ ॥ (पन्ना १३३१)

गुरु नानक साहिब जी के अंतिम चार शबदों में नाम-साधना के अमृत-रस से हृदय के सराबोर होने का वर्णन है :

प्रिउ प्रिउ प्रीति प्रेमि उर धारी ॥
दीना नाथु पीउ बनवारी ॥ . . .
अंतरि वसै चूकै मै मोर ॥
किसु सेवी दूजा नही होरु ॥ *(पन्ना १३३१)*

नाम-साधना के सहज योग में योग के प्रतीक प्रयोग करके आनंद की अवस्था का वर्णन किया गया है। गुरु-ज्ञान रूपी किरण के प्रसार से हृदय रूपी कमल सरस होकर विकसित हो गया है। इस प्रकार मन में गुरु-ज्ञान का आलोक जगा है। जो प्रभु के शबद में रत हैं वही पूरे वैरागी हैं। उनका हृदय ही भिक्षा का

विशेष पात्र है जिसमें नाम की भिक्षा ग्रहण करते हैं :

सबदि रते पूरे बैरागी ॥
अउहठि हसत महि भीखिआ जाची एक भाइ लिव लागी ॥ (पन्ना १३३२)

एक आदर्श गुरमुख का चित्र अंतिम शबद में मिलता है। गुरमुख अपनी ज्ञान-इंद्रियों, मन और बुद्धि के सात स्रोतों को निर्मल आचरण से पूर्ण कर लेते हैं। वे माया से उलटी दिशा में नाव खेते हैं, मन को अन्तर्मुखी करके सहज में लीन कर देते हैं। जिसने गुरु-कृपा से अपने को पहचान लिया है वही उपयुक्त गृहस्थी है, प्रभु-भक्त है, सन्यासी है। सत्य-स्वरूप प्रभु का मन में अनुभव होने पर द्वैत भावना मिट जाती है:

साइर सपत भरे जल निरमलि उलटी नाव तरावै ॥
बाहरि जातौ ठाकि रहावै गुरमुखि सहजि समावै ॥
सो गिरही सो दासु उदासी जिनि गुरमुखि आपु पछानिआ ॥
नानकु कहै अवरु नही दूजा साच सबदि मनु मानिआ ॥ (पन्ना १३३२)

राग प्रभाती में श्री गुरु अमरदास जी और श्री गुरु रामदास जी के सात-सात शबद हैं। श्री गुरु अमरदास जी सरस शैली में हरि-शरण ग्रहण करने का उपदेश देते हैं :

तेरी सरणाई सची हरि जीउ ना ओह घटै न जाइ ॥
जो हरि छोडि दूजै भाइ लागै ओहु जंमै तै मरि जाइ ॥ (पन्ना १३३४)

श्री गुरु अमरदास जी गुरु-उपदेश का सार प्रस्तुत करते हुए फरमाते हैं :

मेरे मन गुर की सिख सुणीजै ॥
हरि का नामु सदा सुखदाता
सहजे हरि रसु पीजै ॥१॥रहाउ॥
मूलु पछाणनि तिन जिन घरि वासा
सहजे ही सुखु होई ॥
गुर कै सबदि कमलु परगासिआ
हउमै दुरमति खोई ॥
सभना महि एको सचु वरतै
विरला बूझै कोई ॥ (पन्ना १३३४)

राग प्रभाती में श्री गुरु रामदास जी के सात शबदों में से छ: शबद एक शैली में हैं, जिनके अंत में 'छका १' अंकित है। अंतिम शबद प्रभाती विगास राग में पड़ताल शैली में है। श्री गुरु रामदास जी के शबदों में रसपूर्ण वृत्ति से नाम अमृत रस-पान का वर्णन है। जब वृत्ति गुरु-उपदेश से सहज अवस्था में होती है तभी यह संभव होता है :

रसकि रसकि गुन गावह
गुरमति लिव उनमनि नामि लगान ॥
अंम्रितु रसु पीआ गुर सबदी
हम नाम विटहु कुरबान ॥ (पन्ना १३३५)

श्री गुरु रामदास जी के शबदों का तुकांत मिलाने का प्रयोग शबदों को नया रूप और अर्थवत्ता प्रदान करता है:

पीना/प्यार करना = पीक
(गुरमुखि खिनु हरि पीक)
स्थित होना/करना = कीक
(विचि उडवा ससि कीक)
फा प्रत्यय से = वडफा/निमखफा आदि
भा प्रत्यय से = आराधना से अरधांभा
लोभायमान होना से लुभिभा

राग प्रभाती में श्री गुरु अरजन देव जी के १५ बोधगम्य और सरल शबद हैं। इनमें दो शबद राग प्रभाती विभास में पड़ताल शैली में हैं। इन दुपदों की पंक्तियों में नादात्मक सौन्दर्य है:

चरन कमल सरनि टेक ॥
ऊच मूच बेअंतु ठाकुरु सरब ऊपरि तुही एक ॥
प्रान अधार दुख बिदार दैनहार बुधि बिबेक ॥

नमसकार रखनहार मनि अराधि प्रभु मेक ॥
संत रेनु करउ मजनु नानक पावै सुख अनेक ॥
(पन्ना १३४१)

प्रभु के चरण-कमलों की शरण में रहना एक मात्र सहारा है। वह सबसे ऊंचा और बड़ा स्वामी है। वह प्राणाधार है। दुखों को दूर करने वाला तथा बुद्धि विवेक देने वाला है। उस रक्षक प्रभु को हमारा नमस्कार है। उसी एक प्रभु की आराधना करो। संतों की चरण-धूलि में स्नान करने से अनेक सुख मिलते हैं।

राग प्रभाती की असटपदियों में भी श्री गुरु नानक देव जी की बाणी की प्रधानता है। चउपदों में नाम का सीधा वर्णन है। असटपदियों में दुविधा या माया के निरसन के बाद गुरु-शबद का महत्व दर्शाया गया है। प्रत्येक असटपदी के सातवें पद में शबद-महिमा दी गई है :

इसु जग महि सबदु करणी है सारु ॥
बिनु सबदै होरु मोहु गुबारु ॥
सबदे नामु रखै उरि धारि ॥
सबदे गति मति मोख दुआरु ॥ (पन्ना १३४२)

दूसरी असटपदी में सेवा के आध्यात्मिक पक्ष की व्याख्या की गई है। शबद और सिमरन के विचार से सच्ची सेवा संभव है। सेवायुक्त जप-तप से अहंकार का नाश होता है। सत्य शबद सुनकर व्यक्ति जीवन-मुक्त हो जाता है और सच्चे सुख को प्राप्त करता है :

सेवा सुरति सबदि वीचारि ॥
जपु तपु संजमु हउमै मारि ॥
जीवन मुकतु जा सबदु सुणाए ॥
सची रहत सचा सुखु पाए ॥ (पन्ना १३४३)

तीसरी असटपदी में नाम के बिना सभी योग क्रियाओं को व्यर्थ बताया गया है। दुविधा से छुटकारा शबद से संभव है :

दुबिधा चूकै तां सबदु पछाणु ॥
घरि बाहरि एको करि जाणु ॥
एहा मति सबदु है सारु ॥
विचि दुबिधा माथै पवै छारु ॥ (पन्ना १३४३)

परमात्मा के भय में रहना, खाना, पीना यही श्रेष्ठ व्यवहार है। सतसंग से मुक्ति मिलती है। हरि-नाम का यशोगान ही वार्तालाप का प्रिय विषय है। गुरु की आज्ञा श्रेष्ठ उपलब्धि है:

भउ खाणा पीणा सुखु सारु ॥
हरि जन संगति पावै पारु ॥
सचु बोलै बोलावै पिआरु ॥
गुर का सबदु करणी है सारु ॥ (पन्ना १३४५)

उक्त असटपदियों के बीच एक असटपदी में परंपरागत कथाओं (मिथिकों) से यह संदेश दिया गया है कि अभिमान-युक्त नैतिक जीवन श्रेयस्कर नहीं है जिसके उदाहरण राजा बलि, राजा हरिशचंद, राजा जन्मजेय और ऋषि गौतम हैं। हमारे कर्मों का सूत्रधार प्रभु है। वह स्वयं अच्युत (भूल से रहित) है और अन्य सभी भूलों के घेरे में हैं। गुरु की कृपा से प्राणी नाम-साधना के इस फंदे से छूट जाता है :

भुलण विचि कीआ सभु कोई करता आपि न भुलै ॥
नानक सचि नामि निसतारा को गुर परसादि अघुलै ॥ (पन्ना १३४४)

हरि-नाम रूपी तीर्थ में स्नान करने वाले निर्मल होते हैं। उनकी अहं भाव की सब मैल धुल जाती है। सतिगुरु जी कथन करते हैं कि उनके चरण धोना सौभाग्य समझने वालों ने सत्य स्वरूप प्रभु को प्राप्त कर लिया है :

नामि रते तीरथ से निरमल दुखु हउमै मैलु चुकाइआ ॥
नानकु तिन के चरन पखालै जिना गुरमुखि साचा भाइआ ॥ (पन्ना १३४५)

राग प्रभाती में विभास राग से श्री गुरु

अमरदास जी की विशेष असटपदी का आरंभ होता है। इसमें मानव-शरीर को 'हरिमंदर' की संज्ञा दी गई है। हमारे हृदय में सत्य स्वरूप हरि का निवास है जिसकी पहचान गुरु-उपदेश से होती है। सच्चे नाम के व्यापारी इस हाट में सत्य का व्यापार करते हैं :

हरि मंदरु हरि का हाटु है रखिआ सबदि सवारि ॥
तिसु विचि सउदा एकु नामु गुरमुखि लैनि सवारि ॥ *(पन्ना १३४६)*

श्री गुरु अमरदास जी की दूसरी असटपदी में दुविधाग्रस्त जीवों की भर्त्सना की गई है।

श्री गुरु अरजन देव जी ने प्रथम असटपदी में मानव शरीर को 'घर' की संज्ञा दी है। इस घर का स्वामी जीव का शुद्ध रूप 'आत्मा' है। इसमें माया नागिन के दूत ठगी कर रहे हैं। गुरु जी ने प्रभु का आंचल थाम लिया है। हे सर्वज्ञ प्रभु! न्याय करो। प्रभु ने हंस कर कहा, तुम्हारा यही न्याय है, सब दूत तुम्हारी सेवा में लगा दिये हैं। अब तुम ही इस घर के स्वामी हो। गुरु ने यह निर्णय कर दिया है :

प्रभ हसि बोले कीए निआंएं ॥
सगल दूत मेरी सेवा लाए ॥
तूं ठाकुरु इहु ग्रिहु सभु तेरा ॥
कहु नानक गुरि कीआ निबेरा ॥ (पन्ना १३४७)

राग सूही में इसी भाव को श्री गुरु अरजन देव जी ने व्यक्त किया है। उस प्रभु-पति ने गुरु के द्वारा मेरा घर संयमित कर दिया है। अब मैं घर की स्वामिनी हूं। उस पति ने दसों इंद्रियों को मेरी दासी बना दिया है :

ग्रिहु वसि गुरि कीना हउ घर की नारि ॥
दस दासी करि दीनी भतारि ॥ (पन्ना ७३७)

राग प्रभाती में भक्त-बाणी में भक्त कबीर जी के पांच शबद हैं। भक्त कबीर जी के लिए 'राम' निर्गुण नाम का ही पर्याय है :

प्रगटी जोति मिटिआ अंधिआरा ॥
राम रतनु पाइआ करत बीचारा ॥ (पन्ना १३४९)

भक्त कबीर जी की दृष्टि समन्वय की है:

कबीरु पूंगरा राम अलह का सभ गुर पीर हमारे ॥ *(पन्ना १३४९)*

श्री गुरु नानक देव जी के 'सो दरु' और 'आरती' *(गगन मे थालु)* को छोड़कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्राय: ही उल्लेख किया जाने वाला शबद मानव भाईचारे सम्बंधी भक्त कबीर जी द्वारा रचित है :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥ *(पन्ना १३४९)*

भक्त कबीर जी का आरती सम्बंधी शबद राग प्रभाती में अंतिम शबद के रूप में है।

भक्त नामदेव जी के तीन शबद गुरबाणी के इसी राग में संकलित शबदों के विषय से सम्बंधित हैं। 'हरि मंदर' में हाट का वर्णन प्रभु की चंदन की सुगंध से तुलना तथा अकाल पुरख के रहस्य का चित्रण भक्त नामदेव जी ने किया है। प्रभाती राग की समाप्ति भक्त बेणी जी के विचारपूर्ण उद्‌बोधन से है। आत्म-तत्त्व की पहचान जीवन का परम लक्ष्य है जो परमात्मा के ध्यान से संभव है :

जिनि आतम ततु न चीन्हिआ ॥
सभ फोकट धरम अबीनिआ ॥
कहु बेणी गुरमुखि धिआवै ॥
बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥ (पन्ना १३५१)

दासों का दास होकर वही आदमी विजेता है जो दुनिया की प्रीति छोड़कर गुरबाणी के अनुसार अमृत वेला में प्रभु-नाम सिमरन करता है:

नाउ प्रभातै सबदि धिआईऐ छोडहु दुनी परीता ॥
प्रणवति नानक दासनि दासा जगि हारिआ तिनि जीता ॥ *(पन्ना १३३०)*

गुरबाणी चिंतनधारा : ४४

अनंदु साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

'अनंदु साहिब' बाणी की विलक्षणता यह है कि इसका संक्षिप्त रूप छह पउड़ियों का पाठ सिक्ख जगत में हर सुख एवं दुख की घड़ी में एक ही भाव से किया जाता है जिससे एक गूढ़ तथ्य का स्पष्टीकरण स्वत: ही हो जाता है कि उस मालिक की रजा (हुक्म) में हर हाल में खुश रहना है तथा आनंद की अनुभूति करना है।

इंसान का परम लक्ष्य है आनंद की प्राप्ति, लेकिन विकारों में ग्रसित यह जीव आनंद के असल मायने नहीं जानता। हम अज्ञानी जीव चंद लम्हों की खुशियों को आनंद मान लेते हैं। वस्तुत: आनंद और खुशी में बहुत बड़ा अंतर है। हम उसका भेद नहीं समझते या यूं कहा जाये कि समझना ही नहीं चाहते। भौतिकतावादी दृष्टिकोण के कारण नश्वर पदार्थों की प्राप्ति को ही हम जीव खुशी समझते हैं और जब वे पदार्थ नहीं रहते तो पुन: दुखी हो जाते हैं। इसके विपरीत जब गुरु-कृपा से दात प्राप्त करके भी दातार पिता अर्थात् सब कुछ देने वाले ईश्वर को जीव मन से कभी नहीं भुलाता तभी वह सच्ची खुशी अर्थात् आत्मिक आनंद प्राप्त कर सकता है।

आत्मिक आनंद की प्राप्ति का एक ही मार्ग है--अहं का परित्याग। इंसान अहं को त्याग कर, गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलता हुआ प्रत्येक परिस्थिति में उस परम पिता परमेश्वर की सिफत-सालाह के गीत गाता हुआ ही सदैव आनंद में रह सकता है।

रामकली महला ३ अनंदु
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥
राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥
सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥
कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥१॥
(पन्ना ९१७)

"अनंदु" बाणी का शीर्षक है। इस पावन बाणी का उच्चारण करने वाले तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी हैं। यह पावन बाणी रामकली राग में उच्चारण की गई है। वह परमेश्वर एक है तथा सतिगुरु की कृपा से ही उसकी सिफत-सलाह की जा सकती है। इस बाणी में गुरु पातशाह समूची मानवता को सच्चा आत्मिक आनंद प्राप्त करने का सहज मार्ग समझा रहे हैं।

श्री गुरु अमरदास जी रूहानी मार्ग पर चलने की अभिलाषा रखने वाली जीव-स्त्री की ओर से फरमान करते हैं कि हे मेरी मां! मेरे हृदय में आत्मिक आनंद पैदा हो गया है, क्योंकि मुझे सच्चे गुरु की प्राप्ति हो गई है। सतिगुरु को तो मैंने परमेश्वर की कृपा द्वारा सहजता से ही पा लिया है जिसके फलस्वरूप मुझे आत्मिक

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ०९३१४६-०९२९३*

अडोलता प्राप्त हुई है। अतः मेरे अंतःकरण वमें खुशियों के बाजे बज रहे हैं।

वस्तुतः गुरु पातशाह अपनी आत्मिक अवस्था का वर्णन करते हुए स्पष्ट करते हैं कि गुरु के मिलाप से मेरा मन अडोल अवस्था को प्राप्त हो गया है, मेरे मन में खुशी के बाजे सुंदर राग एवं रागनियों सहित उस प्रभु की उपमा के गीत गा रहे हैं। अतः हे भाई! तुम सब भी प्रभु की उपमा करो ताकि तुम्हारे अंदर भी सदैव आनंद कायम रहे।

ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥
हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥
अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥
सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥
कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥

श्री गुरु अमरदास जी इस पउड़ी में मन को संबोधित एवं प्रबोधित करते हुए पावन संदेश देते हैं कि हे मेरे मन! तू सदा कायम रहने वाले ईश्वर के चरणों में ध्यान लगा ताकि तेरा जुड़ाव प्रभु से हमेशा बना रहे। हे मेरे मन! तू प्रभु की सिफत-सलाह रूपी यादों को हृदय-घर में पिरो कर रख, क्योंकि वह ईश्वर ही सारे दुख दूर करने वाला है, वह प्रभु ही तेरी मदद करेगा अर्थात् वही हमेशा तेरा मददगार बनकर तेरे समस्त कार्य सहजता से पूर्ण करेगा।

वह परमेश्वर, जो सब कुछ करने में समर्थ है, उसे क्यों मन से भुलाता है? भाव यह हुआ कि सर्वकला समर्थ एवं सर्वशक्तिमान उस ईश्वर को कभी मन से दूर मत कर। तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं कि हे मन! तू हमेशा प्रभु-चरणों से प्रीत जोड़ कर रख, श्वास-श्वास उसका सिमरन कर, पल भर के लिए भी उसे मन से मत भुला।

गुरु पातशाह समूची मानवता को आत्मिक आनंद की प्राप्ति हेतु हर पल आनंद एवं सुखों के सागर परमेश्वर की सिफत-सालाह करने का पावन संदेश देते हैं। वस्तुतः भक्त-जन सदैव उस प्रभु का सिमरन करते हुए आनंदावस्था में रहते हैं, यथा गुरबाणी में अन्यत्र भी यही भाव लक्षित होता है :

आजु हमारै ग्रिहि बसंत ॥
गुण गाए प्रभु तुम्ह बेअंत ॥ . . .
त्रिपति अघाने हरि गुणह गाइ ॥
जन नानक हरि हरि हरि धिआइ ॥ (पन्ना ११८०)
साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥
घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥
सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥
नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥
कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥

गुरु जी कथन करते हैं कि हे सदैव कायम रहने वाले प्रभु! सदा सत्य स्वरूप मालिक! तेरे घर में किस चीज की कमी है अर्थात् लोक-परलोक की कौन-सी ऐसी वस्तु या ऐसा सुख है जो तेरे घर में मौजूद नहीं है? तेरे घर में सब कुछ मौजूद है, लेकिन प्राप्त वही कर सकता है जिसे प्रभु आप प्रदान करे। जिस पर तेरी रहमत होती है वही तेरी सदा उपमा करता है और तेरी ही कृपा से तेरे पावन नाम को हृदय में बसाता है। तेरी ही रहमत से जिन जीवों ने तेरा नाम मन में बसाया है उनके अंदर मानो अनेकों वाद्य-यंत्रों की मिली-जुली स्वर लहरियां एक साथ बज उठती हैं। उनके हृदय रूप घर में आनंद और उमंग पैदा हो जाती है, जैसे अनेक वाद्य-यंत्रों की मधुर झंकार से मन रूपी कमल खिल उठता है।

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं कि हे सदैव स्थिर प्रभु! तेरे घर में किसी भी पदार्थ की कोई कमी नहीं है। मैं तेरे दर से आनंद की बख्शिश की याचना करता हूं।

वस्तुत: समस्त दातें उसी आनंद स्वरूप सर्वकला समर्थ प्रभु के हाथ में हैं। नाम-सिमरन से आनंद की प्राप्ति होती है, लेकिन यह अमूल्य दात वाहिगुरु किसी विरले को ही देता है। किसी तरह की चतुराई या बाहरी क्रिया-कलाप से इसे प्राप्त नहीं किया जा सकता, जैसा कि श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी इसी भाव को दृढ़ करवाती है :

जे तू किसै न देही मेरे साहिबा किआ को कढै गहणा ॥ (पन्ना ६६०)

यही नहीं, चतुराई को छोड़ कर सहज भाव से ईश्वर की भक्ति करते हुए आनंद की प्राप्ति होती है। गुरबाणी का फरमान है :

छोडहु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जीउ ॥
मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ ॥
बाहरि ढूढत बहुतु दुखु पावहि घरि अंम्रितु घट माही जीउ ॥ (पन्ना ५९८)

साचा नामु मेरा आधारो ॥
साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥
करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥
सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥
कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥
साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥

श्री गुरु अमरदास जी उस अकाल पुरख परमेश्वर का शुक्राना करते हुए फरमान करते हैं कि वाहिगुरु की रहमत सदका उसका सदा कायम रहने वाला सत्य-स्वरूप पावन नाम मेरे जीवन का आधार बन गया है। जिस हरि-नाम ने मेरे सारे लोभ-लालच मिटा दिये हैं, जिस ईश्वर के नाम ने मेरी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण कर दी हैं, जो प्रभु-नाम मेरे अंदर शांति तथा सुख पैदा करके मेरे हृदय-घर में आकर बस गया है वही अटल रहने वाला प्रभु-नाम ही मेरा जीवनाधार है। गुरु जी जीव-स्त्री की ओर से कथन करते हैं कि मैं सदैव स्वयं को सतिगुरु से कुर्बान करती हूं। ये समस्त रहमतें गुरु से ही प्राप्त हुई हैं। तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का फरमान है कि संत-जनो! गुरु का शबद एकाग्रचित्त होकर श्रवण करो अर्थात् गुरु-शबद से प्यार बनाओ, क्योंकि गुरु की कृपा से ही ईश्वर का सदा कायम रहने वाला नाम मेरी जिंदगी का सहारा बन गया है।

'अनंद साहिब' की चौथी पउड़ी में गुरदेव नाम-सिमरन को ही जीवन का आधार मानते हैं। नाम से ही आत्मिक जीवन कायम रह सकता है। नाम के बिना ठीक वैसे ही आत्मिक मौत हो जाती है जैसे अन्न-जल के बिना शारीरिक रूप से कमजोरी आ जाती है और निरंतर इसके अभाव से यह जीवन संभव ही नहीं है। जैसे मछली का जीवन जल है वैसे ही संत-जनों का जीवनाधार उस ईश्वर का सिमरन है। श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी इसी भाव को दृढ़ करवाती है:

आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥
आखणि अउखा साचा नाउ ॥
साचे नाम की लागै भूख ॥
उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥१॥ (पन्ना ९)

इस दुनिया में विरले ही जन हैं जिन्हें सच्चे नाम की भूख लगती है, जिनके प्राणों का आधार ही नाम है।

वाजे पंज सबद तितु घरि सभागै ॥
घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥
पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥
धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥
कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥

पांचवीं पउड़ी में श्री गुरु अमरदास जी कथन करते हैं कि उस अकाल पुरख वाहिगुरु की रहमतों से ही आनंद की प्राप्ति मुमकिन है। इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए गुरु जी फरमान करते हैं कि हे मालिक! जिस हृदय रूपी घर में प्रभु ने सत्ता अर्थात् आत्मिक ज्योति टिकाई है उस भाग्यशाली हृदय में मानो पांच तरह के वाद्य-यंत्रों की मिली-जुली स्वर-लहरियां बज रही हैं अर्थात् उस हृदय में आनंद की अवस्था बनी रहती है। हे प्रभु! उसके विकारों रूपी वैरियों को तू वश में कर देता है और भयावह (रोम-रोम को भयभीत करवा देने वाली) मौत का डर भी दूर कर देता है।

वस्तुत: उस भाग्यशाली जीव के हृदय-घर में अनहद बाजे बजते हैं जिसमें अकाल पुरख ने रहमत करके अपने नाम का प्रकाश कर दिया है। काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार रूपी विकार भी ऐसे जीव पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकते तथा दुखदायी मौत के डर से वह मुक्त हो जाता है।

हे वाहिगुरु जी! जिस जीव की तकदीर आप अपनी दरगाह से ही संवार देते हो अर्थात् आपकी अपार कृपा से जिसकी तकदीर में नाम-सिमरन का लेख लिख दिया जाता है, तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं कि उस हृदय-घर में सदैव एकरस आनंदमयी बाजे बजते हैं। वस्तुत: इन पांच विकारों से बचना सहज कार्य नहीं है, जैसा कि पावन बाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है :

अवरि पंच हम एक जना किउ राखउ घर बारु मना ॥
मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना ॥ *(पन्ना १५५)*

इस मन को जन्म-जन्मांतरों की विकारों की मैल लगी हुई है। पावन बाणी से स्पष्ट संदेश मिलता है :

जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु ॥ *(पन्ना ६५१)*

और यह भी स्पष्ट है कि इन विकारों की मैल को केवल और केवल नाम रूपी साबुन से ही धोया जा सकता है। श्री गुरु नानक देव जी जपु जी साहिब में फरमान करते हैं :

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥
पाणी धोतै उतरसु खेह ॥
मूत पलीती कपड़ु होइ ॥
दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥
भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ *(पन्ना ४)*

यही नहीं, नाम जपने से हृदय में ईश्वर-चरणों से प्रीति बनती है, शुभ कर्मों के प्रति उत्साह बना रहता है और जीव सहजता से इन विकारों से मुक्त हो जाता है, यथा :

गुरमति पंच दूत वसि आवहि मनि तनि हरि ओमाहा राम ॥ *(पन्ना ६९९)*

अत: ऐसे हृदय में ही निरंतर अनहद शबद बज रहे हैं और ऐसा हृदय ही आनंद

भरपूर है।

साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥
देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥
तुधु बाझु समरथ कोइ नाही क्रिपा करि बनवारीआ ॥
एस नउ होरु थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ ॥
कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥६॥

इस पउड़ी में गुरु पातशाह स्पष्ट करते हैं कि परमेश्वर के चरणों की प्रीति के बिना यह देह (शरीर) बेचारा क्या कर सकता है? वस्तुत: ईश्वर-चरणों की प्रीति के बिना यह काया माया के अधीन रहती है और माया के अधीन हुआ यह तन कर भी क्या सकता है? अर्थात् सदा कायम रहने वाले ईश्वर के चरणों की प्रीति के बिना यह शरीर जो भी कार्य करता है, व्यर्थ ही करता है। प्रभु-परमेश्वर के बिना और कोई स्थान नहीं जहां यह शरीर नेक कर्मों में लग सके और हे ईश्वर! हे रहमतों के सागर! तेरे बिना किसी में यह सामर्थ्य भी नहीं है कि वह इस शरीर को शुभ कर्मों की ओर प्रवृत्त कर सके। अत: तू ही कृपा कर ताकि सतिगुरु के शबद से जुड़ कर अर्थात् गुरु-दर्शाये मार्ग पर चल कर ही इसमें सुधार आ सके। श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं कि प्रभु-चरणों की प्रीति के बिना यह शरीर पर-अधीन होकर व्यर्थ के ही कार्यों में लगा रहता है।

अगर इस मन का जुड़ाव ईश्वर के चरण-कमलों से न बने तो यह माया के प्रभाव के कारण हमेशा व्यर्थ के कामों मे लगा हुआ दुखी ही रहता है। ईश्वर ही जीव पर रहमत करके, उसे पूर्ण गुरु से मिला कर, गुरदेव के मार्गदर्शन से इसका मानव-जीवन सार्थक कर सकता है। अत: इस देही की सार्थकता बताते हुए पंचम पातशाह की पावन बाणी 'सुखमनी साहिब' में भी यही भाव दृढ़ करवाया है :

मिथिआ तन नही परउपकारा ॥
मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥
बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥
सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥
(पन्ना २६९)

श्री गुरु नानक देव जी ने भी यही पावन संदेश दिया है कि कर्मों से यह मानव तन मिला है और उस परवरदिगार की रहमत से मोक्ष की प्राप्ति मुमकिन है :

करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
(पन्ना २)

आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरू ते जाणिआ ॥
जाणिआ आनंदु सदा गुर ते क्रिपा करे पिआरिआ ॥
करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥
अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबद सचै सवारिआ ॥
कहै नानकु एहु अनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ ॥७॥

वास्तविक आनंद की परिभाषा समझाते हुए तीसरे पातशाह जीव का भ्रम तोड़ते हैं कि कहने को तो हर कोई कह देता है कि मुझे आनंद की प्राप्ति हो गई है लेकिन वास्तविक आनंद की सूझ पूर्ण गुरु से मिलती है। असल आनंद का ज्ञान पूरे गुरु से ही हो सकता है। वह मनुष्य ही असली आनंद प्राप्त कर सकता है जिस पर गुरु कृपा करता है और गुरु-कृपा से ही जीव के आंतरिक पाप कट जाते हैं तथा उसके नेत्रों में आत्मिक जीवन की समझ का अंजन गुरु की रहमत से ही पड़ता है। जिन जीवों के मन से

माया का मोह समाप्त हो जाता है वाहिगुरु उनके अंदर कूट-कूट कर नम्रता की मिठास भर देता है अर्थात् उन्हें अपने पावन उपदेश से सुंदर आत्मिक जीवन वाला बना देता है। असली आनंद यही है कि बुरे कर्मों को त्याग कर प्रभु-प्रेम में जीवन व्यतीत करें और यह जीवन-युक्ति गुरु से ही प्राप्त होती है।

आनंद एक सर्वोपरि आत्मिक अवस्था है, जिसे कोई अनुभव तो कर सकता है लेकिन शब्दों द्वारा उसे अभिव्यक्त नहीं कर सकता। अकाल पुरख वाहिगुरु की रहमत से पूर्ण गुरु मिलता है तथा पूर्ण गुरु की कृपा-दृष्टि ही असली आनंद प्रदान करती है, क्योंकि गुरु ही विवेक बुद्धि बख्श कर जीव की बुद्धि एवं हृदय से विकारों का जंगाल हटा कर उसे कंचन कर देता है। गुरु-कृपा से ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का संग छूटता है तथा सही जीवन का प्रकाश होता है। गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलता हुआ वह भाग्यशाली जीव ही कामादिक विकारों से मुक्त होकर सदैव शीतलता (आत्मिक आनंद) का अनुभव करता है, यथा पंचम पातशाह की पावन बाणी यही भाव स्पष्ट करती है :

पंच संगु गुर ते छुटे दोख अरु रागउ ॥
रिदै प्रगासु प्रगट भइआ निसि बासुर जागउ ॥
सरणि सोहागनि आइआ जिसु मसतकि भागउ ॥
कहु नानक तिनि पाइआ तनु मनु सीतलागउ ॥
(पन्ना ८०८)

अतः पूर्ण गुरु के दर्शाये मार्ग पर चल कर ही वास्तविक आनंद प्राप्त हो सकता है, कहने मात्र से नहीं।

कविता

सागरे-रहमत

सागरे-रहमत! रहमत कर दे।
खुशियों संग झोलियां भर दे।
गरीबी और तंगहाली मिटा दे।
जीवन को आनंद बना दे।
हर घर में खुशहाली हो।
लगे, रोज दीवाली हो।
अज्ञानता का तिमिर मिटा दे।
हृदय में ज्ञान-दीप जला दे।
झगड़े, वैर-विरोध मिटा दे।
सबमें प्यार की ज्योति जगा दे।
मन की दूरियां दूर करा दे।
ऊंच-नीच का भेद मिटा दे।
तू बसता है हर जर्रे में,
बस, इतना अहसास करा दे।
मानव-मानव सभी एक हैं,
प्यार का प्यारा पाठ पढ़ा दे।
सागरे-रहमत! रहमत कर दे।
खुशियों संग झोलियां भर दे।

तेरा कीआ मीठा लागै ॥
हरि नामु पदारथु नानकु मांगै ॥

गुरु-गाथा : २०

हिंद की चादर

*-डॉ. अमृत कौर**

अनंदपुर साहिब में श्री गुरु तेग बहादर विराजमान थे। गुरु जी के पास कशमीरी पंडित आये बैठे थे। सबके चेहरों पर चिंता और दुख के गहरे बादल छाये हुए थे। कशमीरी पंडितों ने अपनी दर्द भरी कहानी सुनानी शुरू की, "हमें समय की हकूमत के द्वारा जुल्म का निशाना बनाया जा रहा है। हमें मजबूर किया जा रहा है कि हम अपने धर्म और संस्कृति को छोड़ दें। हमारी बेटियों-बहनों की इज्जत सुरक्षित नहीं। चारों ओर हाहाकार मची है। शासकों के अत्याचार से सहमे, दुखों से निढाल हिंदू दबादब मुसलमान बनते जा रहे हैं। हमारी धार्मिक स्वतंत्रता समाप्त हो चुकी है। हमारे मंदिर गिराए जा रहे हैं। हम पर जजिया लगा दिया गया है। इस्लाम कबूल करने के लिए हुक्म जारी किए जा चुके हैं। हमें चारों ओर निराशा ही निराशा दिखाई देती है। आप ही बताएं हम क्या करें? कृप्या आप हमारा मार्गदर्शन कीजिए। हम बहुत आशाएं लेकर आपकी शरण में आए हैं।"

कशमीरी पंडितों की यह दर्द भरी कहानी सुन कर श्री गुरु तेग बहादर जी का दिल भर आया। उनके मुख-मंडल पर उदासी की गहरी रेखाएं उभर आईं। वे सोचने लगे, "औरंगजेब जैसे शक्तिशाली बादशाह के साथ टक्कर लेने के लिए जनसाधारण को कैसे लामबंद किया जाए। हमारे पास तो कोई लंबी-चौड़ी फौज भी नहीं है जिसके द्वारा उससे युद्ध लड़ा जा सके। धार्मिक कट्टरता और संकीर्णता के तूफान को रोकने के लिए लम्बे संघर्ष एवं बलिदानों की जरूरत है। कोई महापुरुष बलिदान देकर इन डरे हुए लोगों में आत्मविश्वास भर सकता है। बलिदान की प्रथा ही इन लोगों में नवीन प्राणों का संचार कर सकती है।"

श्री गुरु तेग बहादर जी गहरी सोच और चिंता में डूबे हुए थे कि नौ साल के बाल गोबिंद राय जी आ गये। कशमीरी पंडितों द्वारा घिरे एवं चिंतन में डूबे गुरु-पिता से पूछने लगे, "पिता जी! आप इतने उदास क्यों हैं? यह कैसा घोर सन्नाटा आप जी के चारों ओर छाया है? ये पंडित-जन सहमे हुए क्यों बैठे हैं?" गुरु जी ने कहा, "बेटा! इन कशमीरी पंडितों को औरंगजेब का आदेश हुआ है कि ये इस्लाम कबूल कर लें नहीं तो इन्हें मौत के घाट उतार दिया जाएगा।"

बाल गोबिंद राय जी ने पिता के गले में प्यार से बाहें डालते हुए कहा, "पिता जी! संसार में प्रत्येक समस्या का समाधान है। औरंगजेब के इस अत्याचार का मुकाबला तो करना ही पड़ेगा। गुरु नानक साहिब के दरबार से किसी को निराश वापिस नहीं भेजा जा सकता। कोई समाधान सोचिए पिता जी।"

बाल गोबिंद राय जी की इस विनम्र विनय को सुन कर श्री गुरु तेग बहादर जी ने उत्तर दिया, "मेरे लाल! इस समस्या का एक ही समाधान है और वो यह है कि इस अन्याय का

**१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०३ (पंजाब)*

मुकाबला करने के लिए इन स्वाभिमान खो चुके लोगों में धर्म की रक्षा हेतु लड़-मरने की भावना भरनी पड़ेगी और किसी महापुरुष द्वारा धर्म-परिवर्तन का कड़ा विरोध करते हुए बलिदान देकर इन्हें जान की बाजी लगाने के लिए तैयार करना होगा।"

बाल गोबिंद राय जी ने निर्भयता से उत्तर दिया, "पिता जी! इस समय भारत में आप से बढ़ कर महान पुरुष, साहसी और मार्गदर्शक कौन हो सकता है? आप ही इनकी समस्या का समाधान कर इनमें नवशक्ति का संचार करें।"

नौ साल के बाल गोबिंद राय के इन निडर और प्रेरणादायक शब्दों को सुनकर गुरु जी का मुख दिव्य आभा से चमकने लगा। उनके अधरों पर आलौकिक प्रसन्नता और मुस्कान छा गई। उन्होंने बाल गोबिंद राय जी को प्यार से गले लगाते हुए कहा, "शाबाश मेरे लाल, शाबाश! तुम्हारी इस बात ने मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर दे दिया है। तुम पंथ का सुचारू रूप से मार्ग-निर्देशन करने के योग्य हो। आंतरिक रूप से मैं अपना मन बलिदान देने के लिए पहले ही बना चुका था। अब मुझे विश्वास हो गया है कि आप देश के नवनिर्माण में कोई कमी नहीं रहने देंगे।"

इस प्रकार बाल गोबिंद राय ने अपने पिता को देश और धर्म के लिए शहीद होने की बात कहकर एक नए इतिहास का सृजन किया जो सदा-सदा के लिए दीप-स्तंभ का कार्य करता रहेगा, सुनहरी किरणें बिखेरता रहेगा, असहाय पीड़ित-जनों की रक्षा करने की प्रेरणा देता रहेगा। श्री गुरु तेग बहादर जी का अविस्मरणीय बलिदान सिखाता है कि अपने धर्म के अनुसार स्वतंत्रतापूर्वक जीवन-यापन करना प्रत्येक मनुष्य का बुनियादी अधिकार है जिसकी रक्षा करना परम आवश्यक है।

कविता

आभार

प्रिय श्रीमान संपादक महोदय
'गुरमति ज्ञान' मेरा सूर्योदय
छपी मेरी कविता 'गुरुद्वारा'
यह श्री वाहिगुरु का सहारा
धन्य हो गया मेरा जीवन
बंध गया मैं श्रद्धा का बंधन
हुआ मैं आभारी आप सबका
श्री वाहिगुरु नाम है रब का
उमड़ पड़ा मेरा मन आदर
धन्य वीर बंदा सिंघ बहादर
'गुरमति ज्ञान' है बड़ा खजाना
लेख में बंदा सिंघ को जाना
जान सका मैं उनका जीवन
रणक्षेत्र वह बांधे सम्मोहन
श्री गुरु गोबिंद सिंघ का मुरीद
अमर हुआ 'बंदा शहीद'
सादर नमन करूं उस सिक्ख का
जिसने गुरु-नाम चलाया सिक्का
जीवन-पर्यन्त 'वाहिगुरु' जाप
सदा याद रखें हम-आप
वह श्री वाहिगुरु बाग का फूल
उस पर वाहिगुरु चरन की धूल
बंदा सिंघ बहादर धन्य
उस जैसा योद्धा न अन्य
अर्पित श्रद्धा पुष्प की थाल
सब मिल बोलो 'सत् श्री अकाल'।

-संजय बाजपेयी रोहितास, C/o श्री हुसैनी मियां, स्टेशन रोड, कछौना (बालामऊ), जिला हरदोई (उ. प्र.)

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-३३

समर्पित सिक्ख एवं योद्धा : शहीद कवि भाई धिआन सिंघ

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ**

दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबारी कवि न सिर्फ उच्च कोटि के विद्वान और काव्य शास्त्री थे बल्कि समर्पित सिक्ख और अत्यंत बहादुर एवं साहसी आत्म-बलिदानी भी थे। काव्य और बलिदान के ऐसे धनियों में से एक थे--कवि भाई धिआन सिंघ। भाई धिआन सिंघ ने एक ओर उच्च कोटि की काव्य-रचना की, अपना सर्वस्व अर्पित करके उज्जैन के नासमझ-नादान साहूकार हरिगोपाल से 'गुरु की बख्शिश' प्राप्त की, वहीं दूसरी ओर चमकौर की विश्व प्रसिद्ध जंग (दिसंबर, १७०४ ई) में जूझ कर शहादत भी दी।

भाई धिआन सिंघ का दशमेश पिता के बावन दरबारी कवियों में विशेष स्थान है। भाई संतोख सिंघ, ज्ञानी गिआन सिंघ एवं भाई वीर सिंघ सभी द्वारा निश्चित की गई बावन दरबारी कवियों की सूची में कवि धिआन सिंघ का नाम दर्ज है।

ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार भाई धिआन सिंघ चमकौर के निकट स्थित एक गांव 'माजरी' के रहने वाले समर्पित सिक्ख थे, इसलिए अनेक स्थानों पर कवि धिआन सिंघ का नाम 'धिआन सिंघ माजरीआ' भी आया है।

भाई धिआन सिंघ के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना उज्जैन के साहूकार हरिगोपाल से 'गुरु की बख्शिश' हासिल करने की है। 'प्राचीन सौ साखी' में इस प्रसंग का विस्तार से वर्णन किया गया है। उज्जैन शहर में दशमेश पिता का एक सिदकी सिक्ख बिशम्भर दास निवास करता था। इसका पुत्र था हरिगोपाल। एक बार हरिगोपाल दशमेश पिता के दर्शन करने अनंदपुर साहिब आया। उसके मन में किसी कारण भ्रम पैदा हो गया कि गुरु जी ने दया का त्याग कर रखा है! मेरे पिता ने कैसे गुरु धारण किये हैं! चलते समय हरिगोपाल ने सौ रुपये पिता के और पांच सौ रुपये अपने भेंट किये, पर मन में भ्रम-भ्रांति रखी। दशमेश पिता ने चार तोले का सरबलोह का कड़ा बख्शिश किया और हरिगोपाल की पीठ थपथपाते हुए कहा कि अकाल पुरख कृपा करेगा।

हरिगोपाल मन में पछताता हुआ चला कि छह सौ रुपये दिये, बदले में क्या मिला? सिर्फ एक लोहे का कड़ा। चलता-चलता हरिगोपाल जब चमकौर पहुंचा तो कवि भाई धिआन सिंघ से मुलाकात हो गई। गुरु-दर्शन करके लौटा सिक्ख जान कर कवि भाई धिआन सिंघ गदगद हो गये और हरिगोपाल को अपने घर माजरी ले गये। लंगर-पानी छकाया और खूब सेवा की।

रात को हरिगोपाल ने अपने मन की बात कह दी। बोला, मैंने छह सौ रुपये दिये, बदले में गुरु जी ने सिर्फ लोहे का यह एक कड़ा ही दिया। कवि भाई धिआन सिंघ बोले, "भाई सिक्खा! अगर तेरी मर्जी हो तो छह सौ रुपये ले जा और 'गुरु की बख्शिश' दे जा।" हरिगोपाल तुरंत मान गया। कवि भाई धिआन

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब। मो: ०९४१७२-७६२७१*

सिंघ ने घर, जमीन, गहने आदि सब गिरवी रखे और छह सौ पांच रुपये लाकर हरिगोपाल को दे दिये और 'गुरु की बख्शिश' ले ली। नासमझ हरिगोपाल खुशी-खुशी चला गया कि मूर्ख सिक्ख हारा और मैं बाजी जीता। दूसरी ओर कवि भाई धिआन सिंघ सर्वस्व न्यौछावर करके 'गुरु की बख्शिश' हासिल करने में सफल रहा।

कवि भाई धिआन सिंघ के कुछ फुटकर छंदों की चर्चा हर ग्रंथ में की गई है परंतु उनमें से आज कोई भी उपलब्ध नहीं है। कवि भाई धिआन सिंघ दशमेश पिता के समर्पित सिक्ख योद्धा थे। भाई जी ने चमकौर के महान युद्ध में दिसंबर, १७०४ ई में वैरियों के साथ निरंतर संघर्ष करते हुए शहादत प्राप्त की।

कवि भाई धिआन सिंघ के इस 'सौदे' के संबंध में 'प्राचीन सौ साखी' में आया है :

धिआन सिंघ गुरशबद पर, दीना सभि घरि बेच।
पास ही बैठा पूछिआ, कहु सिक्खा! तू चेत।
धिआन सिंघ गुर हुकम जो, बोला बचन रसाल।
मेरी सिक्खी द्रिढ़ भई, सतिगुरू हूआ क्रिपाल।
जां दिन सौदा हम कीआ, सुनिए प्रभू दयाल।
हरिगोपाल बेचत भइआ, मो को करा निहाल।

कवि भाई धिआन सिंघ के त्याग की सर्वत्र प्रशंसा की गई है :

तिआगु मूल है 'धिआन सिंघ', विखै भोग ते दूर।
धिआन धरै इह परम धन, सतिगुरू पद की धूरि।

कविता

रुक्खां 'ते ना फेरो आरी

रुक्खां 'ते ना फेरो आरी।
रुक्खां जग्ग दी जून सवारी।
रुक्खां ने है धरत शिंगारी।
रुक्खां 'ते ना फेरो आरी।
रुक्ख छांवां ते फल दिंदे ने
मानवता तों की लैंदे ने?
रुक्ख ने लोको परउपकारी।
रुक्खां 'ते ना फेरो आरी।
महिकां वंडदे चार-चुफेरे
रुक्खां हेठ ने लग्गदे डेरे।
कुदरत तों जाईए बलिहारी।
रुक्खां 'ते ना फेरो आरी।
रुक्ख ने सौ रोगां दे दारू
रुक्खां रोग मुकाए मारू
वैद-हकीमां गल्ल विचारी।
रुक्खां 'ते ना फेरो आरी।
ठाहर परिंदिआं दी रुक्ख लोको!
कतलो-गारत रुक्ख दी रोको!
रोको कोझी कारगुजारी।
रुक्खां 'ते ना फेरो आरी।
कुदरत दा वरदान इह रुक्ख ने।
सहि के जुलम वी रहिंदे चुप्प ने
किउं लोका तेरी मत्त मारी?
रुक्खां 'ते ना फेरो आरी।
प्रदूषण नाल मर जावांगे
की बीजांगे की खावांगे?
शुद्ध फिजा दी लोड़ है भारी
रुक्खां 'ते ना फेरो आरी।
रुक्ख 'इकबाल' मुसीबत जरदे
धुप्पे सड़दे पाले ठरदे
फिर वी महिकां जाण खिलारी।
रुक्खां 'ते ना फेरो आरी।

-श्री कंवर इकबाल, इकबाल फैंसी स्टोर, अमृत बाजार, कपूरथला (पंजाब)। मो: ९८१४९-७३५७८

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक : सुखमनी : एक बहुपक्षीय अध्ययन
लेखिका : कैप्टन डॉ. मनमीत कौर (सोडी)
प्रकाशक : उत्तर प्रदेश पंजाबी अकादमी, लखनऊ

पेपर-बैक मूल्य : १०० रुपये
पृष्ठ : १२८

विभिन्न पावन बाणियों में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की गउड़ी राग में अंकित पावन बाणी 'सुखमनी साहिब' इस जगत जलंदे को अपनी निर्मल गुरमति विचारधारा तथा शीतल संवेदना से निर्मलता, शांति और शीतलता बांटती आ रही है। आज के युग में इस बाणी के साथ मानवता को परिचित कराने की अत्यधिक आवश्यकता बनी हुई है।

'सुखमनी : एक बहुपक्षीय अध्ययन' अपने शीर्षक के अनुरूप इस पावन बाणी का जहां कई पक्षों से किया गया अध्ययन है वहां यह पुस्तक मूल रूप में पाठकों तक इसका अमूल्य विचार-तत्व पहुंचाने के उद्देश्य की पूर्ति करते हुए ज्यादा जोर इसकी विचार उन्मुख व्याख्या पर देती है। 'प्रस्तावना' में विभिन्न प्रसिद्ध विचारकों के विचारों की टेक लेते हुए लेखिका ने भली-भांति आज के पदार्थवादी युग में इसकी और अधिक प्रासंगिकता की अनुभूति कराने का प्रयास किया है। 'प्रस्तावना' के सन्दर्भ पर दृष्टि डालें तो ज्ञात होता है कि लेखिका ने व्यापक अध्ययन के उपरांत यह अध्ययन-विश्लेषण हमारे दृष्टिगोचर किया है। वस्तुत: हिंदी भाषा में प्रस्तुत अध्ययन सर्वाधिक पंजाबी भाषा के स्रोतों से लाभ लेकर किया गया विश्लेषण है। विभिन्न आलेखों में हिंदी और कुछ अंग्रेजी विद्वानों के अध्ययनों के सहारे यह विश्लेषण गतिशील हुआ है। लेखिका ने सैद्धांतिक विचार-बिंदुओं और अध्ययन अधीन पावन बाणी के स्थान को दर्शाने के लिए प्रमाणिक विद्वानों के विचारों का सहारा लेने और अध्यात्मक पहलुओं तथा पावन बाणी के मूल पद्यांशों की अपनी ओर से व्याख्या करने की युक्ति अपनाई है, जो काफी अनुकूल कही जा सकती है। ऐसा करने से और पावन बाणी में विद्यमान रस एवं सरसता के भरपूर तत्वों के कारण इतनी बहुसंख्या में विद्वानों के प्रसंग अथवा उदाहरण आने के बावजूद शुष्कता का अंश मात्र भी नहीं आने दिया। भाषा और शैली काफी सरल होने के कारण पुस्तक में विद्यमान पर्याप्त बौद्धिक तत्व सुगमता सहित पाठकों तक अपनी पहुंच संभव बनाने में सक्षम हैं।

पुस्तक की प्रस्तावना भी अपने आप में एक निबंध का ही दर्जा रखती है। 'भक्ति-मार्ग की प्रधानता', 'रहस्यवादी दृष्टिकोण', 'नीति शास्त्र', 'सुख का सिद्धांत' और 'सर्वोत्तम मानव' शीर्षकों तले विभिन्न निबंध सामूहिक रूप से इस पावन बाणी के बारे में पाठकों को अच्छी तरह परिचित कराने में सफल हैं। 'उपसंहार' में समस्त विचार को और अधिक स्पष्ट करने के लिए लेखिका का प्रयास दृष्टिगोचर होता है। पुस्तक के अंत में पंजाबी, हिंदी और अंग्रेजी भाषा की पुस्तकों के प्रकाशकों तथा प्रकाशन-वर्ष सहित लंबी सूची अंकित की गई है, जिससे खोजी छात्र लाभ उठाकर प्रस्तुत विषय में खोज-कार्य कर सकते हैं। यह पुस्तक मूलत: साधारण पाठकों को प्रस्तुत पावन बाणी के पठन, अध्ययन आदि हेतु प्रेरित करती है परंतु यह छात्र-वर्ग के लिए भी काफी फायदेमंद सिद्ध होने की संभावना एवं क्षमता रखती है। अच्छा होता यदि पुस्तक-वर्ष भी अंकित कर दिया जाता।

-समीक्षक,
सुरिंदर सिंघ निमाणा, सहायक संपादक।

सिक्खों को न्याय नहीं मिला

अमृतसर : २८ अप्रैल। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा है कि १९८४ के सिक्ख जनसंहार के कथित मुख्य दोषी तथा क्रांगेसी नेता जगदीश टाईटलर विरुद्ध दिल्ली के एक न्यायलय की ओर से केस बंद कर दिया जाने से पीड़ित परिवारों को न्याय नहीं मिला।

यहां से जारी एक प्रेस रीलीज में जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि १९८४ में दिल्ली में हुए सिक्ख जनसंहार के दौरान दिन-दहाड़े गुंडों की तरफ से अत्यधिक यातनायें देकर सिक्कों के परिवारों को मौत के घाट उतारा और संपतियां तथा व्यवसाय नष्ट कर दिये। इस जनसंहार से पीड़ित परिवार जो गत २५ वर्ष से न्याय की आशा लगाये बैठे थे, को न्यायलय के इस फैसले से मायूसी हुई है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में हुए जनसंहार जिसको उस समय के प्रमुख समाचार पत्रों के अतिरिक्त पीपलज यूनीयन फॉर डेमोक्रेटिक राईटस (**PUDR**) और पीपलज यूनीयन ऑफ सिवेल लिबरटीज (**PUCL**) जैसे गैर-सिक्ख संगठनों द्वारा भी जगदीश टाईटलर को मुख्य दोषी गरदाना होने के बावजूद भी देश की सर्वोच्च जांच ऐजंसी की ओर से आंख से ओझल करके अपनी रिपोर्ट में सिक्ख कत्लेआम के कथित दोषी को दोषमुक्त करके कई शंके पैदा कर दिये हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली हाईकोर्ट की तरफ से टाईटलर को जमानत न दिये जाने पर पीड़ित परिवारों को न्याय की आशा बंधी थी। मानयोग्य उच्च न्यायलय की तरफ से टाईटलर के गिरफतारी वारंट जारी किये जाने पर भी दिल्ली सरकार और केंद्रीय सरकार की नाक तले रह रहे जगदीश टाईटलर को ढाई सप्ताहों तक गिरफतार न किये जाने से ही स्पष्ट हो गया था कि कांग्रेस सरकार किसी प्रकार भी जगदीश टाईटलर को गर्म हवा नहीं लगने देना चाहती और सिक्खों को न्याय की कोई आशा नहीं। उन्होंने कहा कि चिरकाल से घटित हो रहे इस घटनाक्रम से स्पष्ट है कि देश की प्रमुख जांच एजंसियां भी सरकार के दबाव से मुक्त नहीं हैं और इस देश में सिक्खों के लिए कानून अलग हैं और बहु-संख्यकों के लिए कानून अलग हैं। उन्होंने कहा कि पीड़ित सिक्ख परिवारों को न्याय दिलाने के लिए कानूनी विशेषज्ञों की राय ली जा रही है।

सरहिंद फतह दिवस की तीसरी शताब्दी सफलतापूर्वक मनाई गई

फतहगढ़ साहिब : १४ मई। बाबा बंदा सिंघ बहादर द्वारा जालिम शासक वजीर खान को मार कर सरहिंद पर विजय प्राप्त करने के ३०० वर्ष पूरे होने पर इस दिवस को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा संगत के सहयोग से सफलतापूर्वक मनाया गया। इस फतह दिवस अवसर पर कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए गए तथा दो विशाल नगर कीर्तन भी निकाले गए। शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने सरहिंद फतह दिवस की तीसरी शताब्दी सफलतापूर्वक मनाए जाने पर समूह संगत का धन्यवाद किया है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि तख्त श्री हजूर साहिब, नांदेड़ से गुरुद्वारा फतहगढ़ साहिब तक एक 'फतह मार्च' निकाला गया। यह ३० मार्च को नांदेड़ से चलकर अलग-अलग राज्यों से होता हुआ १२ मई को फतहगढ़ साहिब से १५ कि. मी. दूर चपड़चिड़ी पहुंचा। यह वही स्थान है जहां सरहिंद की

ऐतिहासिक जंग हुई और खालसा फौज ने वजीर खान को मार गिराया। १३ मई को एक विलक्षण रूप में 'फतह मार्च' चपड़चिड़ी से हाथी-घोड़ों से सुसज्जित होकर फतहगढ़ साहिब पहुंचा। दूसरा नगर कीर्तन बाबा बंदा सिंघ बहादर के जन्म-स्थल राजौरी से ११ मई को चलकर १३ मई को फतहगढ़ साहिब पहुंचा। उन्होंने बताया कि ६, ७, ८ व ९ मई को चित्रकला प्रदर्शनी एवं वर्कशाप का आयोजन किया गया। मुख्य समारोह १२, १३, १४ मई को हुआ। १२ मई को दोपहर बाद कवीशरी समारोह हुआ और शाम को देर रात तक कवि समारोह में दशमेश पिता द्वारा स्थापित कवि दरबार परंपरा को कायम रखते हुए कवियों ने अपनी कविताओं द्वारा संगत को सिक्ख इतिहास से अवगत कराया। रात्रि का दीवान अखंड कीर्तनी जत्था इंटरनेशनल ने लगाया। १३ मई के कार्यक्रम में ढाडी समारोह में ढाडी जत्थों ने सिक्ख इतिहास पर आधारित वारें गाकर पंडाल में बैठी संगत में वीर-रस भर दिया। इसी दिन शाम को रहरासि साहिब के पाठ के पश्चात गुरबाणी में अंकित रागों पर आधारित गुरबाणी कीर्तन समारोह हुआ जिसमें श्री हरिमंदर साहिब के हजूरी रागी जत्थों के अलावा देश-विदेश के पंथ-प्रसिद्ध रागी जत्थों तथा पदम श्री भाई निरमल सिंघ खालसा ने संगत को निहाल किया।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने आगे बताया कि १२, १३, १४ मई को शाम के समय खालसई खेल कार्यक्रम करवाए गए। इसमें कबड्डी, हाकी मैच, घुड़सवारी, गतका व दसतार प्रतियोगता मुख्य आकर्षण का केंद्र बने रहे। विजयी टीमों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया। इनके अलावा १२, १३ व १४ मई को ही शाम के समय धार्मिक नाटक (लाईट एंड साउंड प्रोग्राम) खेले गए, जिनमें 'चलउ मारगि गोबिंद', 'प्रगट गुरां की देह', 'बंदा गुरु का', 'बंदा सिंघ बहादर' तथा 'सिंघ सूरमे' नाटक मुख्य रूप से शामिल थे। इन्हीं तारीखों पर तीन दिन अमृत संचार भी करवाया गया। १३ मई को साऊंड एवं रोशनी पर आधारित 'लेजर शो' कार्यक्रम संगत में विशेष आकर्षण का केन्द्र बना रहा। इस शो में जहां बाबा बंदा सिंघ बहादर के जीवन को रोशनी सिस्टम द्वारा दर्शाया गया वहीं इस शो में गाई गई वार "कीता जबर जुल्म नूं बंद, फतह सरहिंद, फतह सरहिंद" जब संगत के कानों में पड़ी तो विचरण करती संगत के कदम एकाएक रुक गए। उन्होंने बताया कि इस वार के गायन के साथ जब आतिशबाजी की गई उस समय ऐसा लग रहा था मानो 'फतह दिवस' मनाने आई संगत का उत्साह चरम सीमा पर पहुंच गया हो। वार-गायन तथा आतिशबाजी के नजारे ने 'फतह दिवस' के पलों को यादगारी बना दिया। सरहिंद फतह दिवस सम्बंधी विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ ने बताया कि २४ अप्रैल को फहतगढ़ साहिब तथा ८ मई को नई दिल्ली में आयोजित किए गए 'सैमीनार' संगत व दर्शकों के मन पर अपनी अमिट छाप छोड़ गए। १४ मई को मुख्य समारोह में सिंघ साहिबान ने संगत के नाम संदेश दिए और प्रमुख शख्सियतों ने इस कार्यक्रम में शिरकत की। इस समारोह में बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथी सिंघों के वंश परंपरा से सम्बंधित परिवारों का भी सम्मान किया तथा देश-कौम के प्रति सेवाएं प्रदान करने वाली अन्य शख्सियतों को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में बाबा बंदा सिंघ बहादर के जीवन इतिहास पर आधारित एक त्रैभाषीय 'सोविनर' भी जारी किया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादर द्वारा जारी किए सिक्कों की तर्ज पर सोने व चांदी के सिक्के भी जारी किए गए। जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि मैं समूह संगत का धन्यवाद करते हुए भविष्य में भी ऐसे ही सहयोग की आशा तथा कामना करता हूं।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया।संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०६-२०१०